TAWAKKUL (HINDI)

"परेशानियों का बेहतरीन इलाज"

तवक्कुल

(अल्लाह पर भरोसा)

पेशकश :-

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दावते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पेहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिए اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ येह है :

اَللّٰھُمَّ افْتَحْ عَلَیْنَا حِکْمَتَکَ وَانْشُرْ عَلَیْنَا رَحْمَتَکَ یَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِکْرَام

तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रेह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले ।

(مستطرف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक-एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिए ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़्यादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (यानी उस इल्म पर अ़मल न किया) (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मक्तबतुल मदीना से रुजूअ़ फ़रमाइए ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

मजलिसे तराजिम हिन्द (दावते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ येह किताब मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दावते इस्लामी) ने उर्दू ज़बान में मुरत्तब की है। मजलिसे तराजिम (हिन्द) ने इस किताब को हिन्दी रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है।

इस किताब में अगर किसी जगह ग़लती पाएं तो मजलिस को सफ़ह़ा और सत़र नम्बर के साथ Sms, E-mail, Whats App या Telegram के ज़रीए़ इत्त़िलाअ़ दे कर सवाबे आख़िरत कमाइए।

मदनी इल्तिजा : इस्लामी बहनें डायरेक्ट राबित़ा न फ़रमाएं!!!

राबित़ा :-

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदाबाद-1, गुजरात (हिन्द)

+91 98987 32611

E-mail : hindibook@dawateislamihind.net

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त़ (लीपियांतर) ख़ाका

थ = تھ	त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ
ज़ = ذ	ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
श = ش	स = س	ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص
म = م	ल = ل	घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ा = ئُ	ु = وُ	आ = آ	य = ی	ह = ھ	व = و	न = ن

"परेशानियों का बेहतरीन इलाज"

तवक्कुल

(अल्लाह पर भरोसा)

– : मोअल्लिफ़ : –

अबू रजब मुहम्मद आसिफ़ अत्तारी मदनी

– : पेशकश : –

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (शोबए इस्लाही कुतुब)

– : नाशिर : –

मक्तबतुल मदीना, दावते इस्लामी (इन्डिया)

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

नाम किताब : तवक्कुल (अल्लाह पर भरोसा)

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (शोबए इस्लाही कुतुब)

पेहली बार : मई सिने 2021 ईसवी / शव्वाल सिने 1442 हिजरी

नाशिर : मक्तबतुल मदीना, दावते इस्लामी (इन्डिया)

तस्दीक़ नामा

तारीख़ : 7 जुल हिज्जतिल ह़राम, 1437 हि. **ह़वाला :** 239

الحمد للّٰہ رب العٰلمین و الصلوٰۃ و السلام علٰی سید المرسلین وعلٰی الہ و اصحا بہ اجمعین

तस्दीक़ की जाती है कि किताब

"तवक्कुल" (उर्दू)

(मत़बूआ़ : मक्तबतुल मदीना) पर मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल की जानिब से नज़रे सानी की कोशिश की गई है। मजलिस ने इसे अ़क़ाइद, कुफ़्रिया इ़बारात, अख़्लाक़िय्यात, फ़िक़्ही मसाइल और अ़रबी इ़बारात वग़ैरा के ह़वाले से मक़्दूर भर मुलाह़ज़ा कर लिया है अलबत्ता कम्पोज़िंग या किताबत की ग़लतियों का ज़िम्मा मजलिस पर नहीं।

मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल
(दावते इस्लामी)

08-09-2016

E-mail : feedbackmmhind@gmail.com / **Website :** www.dawateislamihind.net

इल्तेजा : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

हाथ की सूजन जाती रही

सआ़दतुद्दारैन में है : एक बुज़ुर्ग अ़ब्दुर्रह़ीम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं ह़म्माम (Bathroom) में गिर गया जिस की वज्ह से मेरे हाथ में दर्द (Pain) होने लगा और वोह सूज गया, मैं रात को इसी तक्लीफ़ में मुब्तला था कि ख़्वाब में नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत नसीब हुई। फ़रमाया : "**बेटा ! तुम्हारे दुरूद ने मुझे मुतवज्जेह कर दिया।**" जब मैं सुब्ह़ उठा तो रेह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बरकत से दर्द और सूजन (Swelling) ख़त्म हो चुके थे। (سعادۃ الدارین،الباب الراب ، ص ۱٤۰)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(ह़िकायत : 1)

मुझे अपने आक़ा पर भरोसा है

ख़लीफ़ा हारून रशीद के दौरे ख़िलाफ़त में लोग शदीद क़ह़त़ (यानी खाने पीने की अश्या की कमी (Famine)) का शिकार हुवे तो ख़लीफ़ा ने लोगों को बारगाहे ख़ुदावन्दी में रोने, दुआ़ करने और लह्वो लअ़ब (यानी गाने बजाने वग़ैरा) के आलात को तोड़ने का हुक्म दिया। उसी ज़माने में लोगों ने एक ग़ुलाम को देखा जो बड़ा ख़ुश और मुत़मइन दिखाई दे रहा था। उसे ख़लीफ़ा हारून रशीद की ख़िदमत में पेश कर दिया गया। ख़लीफ़ा ने उस से ख़ुशी व इत़मीनान का सबब पूछा तो केहने लगा : मेरे आक़ा के पास गन्दुम की बहुत बड़ी मिक़्दार मौजूद है और मुझे अपने आक़ा पर भरोसा है कि वोह मुझे उस में से खिलाएगा,

www.dawateislami.net

इस लिए मुझे क़ह्त़साली की फ़िक्र नहीं । ग़ुलाम की येह बात सुन कर ख़लीफ़ा ने कहा : जब येह ग़ुलाम अपने जैसे एक इन्सान पर भरोसा कर के मुत़्मइन है तो फिर हम इस बात के ज़्यादा ह़क़दार हैं कि अल्लाह पाक पर तवक्कुल (Trust) करें । (المستطرف ، الباب العاشر ، ١/١١٦ بتصرف)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! तवक्कुल वोह अ़ज़ीम सिफ़त है जिसे अपनाने वाला दुन्या ओ आख़िरत की भलाइयां पाने का मुस्तह़िक़ ठेहरता है जबकि तवक्कुल न करने वाला दुन्या में परेशान ह़ाली का शिकार रेहता है और आख़िरत में रब عَزَّوَجَلَّ के इताब का ह़क़दार हो सकता है ।

टेन्शन का इलाज

मदीने के सुल्त़ान, रेह़मते आ़लमिय्यान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : इन्सानी दिल की हर जंगल में एक शाख़ है, तो जो अपने दिल को इन तमाम शाख़ों के पीछे डाल दे, अल्लाह पाक परवाह नहीं करेगा कि किसी जंगल में उसे हलाक कर दे और जो अल्लाह करीम पर तवक्कुल करे वोह उसे घाटियों से बचाएगा ।

(ابن ماجه ،كتاب الزهد،باب التوكُّل واليقين، ٤/ ٤٥٣ ، حديث: ٤١٦٦)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीस के तह़्त फ़रमाते हैं : इन्सान का दिल एक है मगर इस के लिए फ़िक्रें ग़म बहुत हैं, रोटी, कपड़ा, मकान, बीमारियों में इलाज, आपस की मुख़ालफ़तें वग़ैरा वग़ैरा फ़िक्रों ग़मों के जंगल हैं, जिन में से हर एक का तअ़ल्लुक़ इन्सान के दिल से है। मज़ीद फ़रमाते हैं : दुन्यादार की त़रफ़ अल्लाह तआ़ला तवज्जोहे करम न करेगा, उसे इन ग़मों से आज़ाद न करेगा, मरते वक़्त

तक वोह इन्हीं में गिरफ़्तार रहेगा आख़िर इसी हाल में मर जाएगा, आम दुन्यादारों मालदारों का येही हाल देखा जाता है, अल्लाह तआला ऐसी ज़िन्दगी से मेहफ़ूज़ रखे। मज़ीद फ़रमाते हैं : मुतवक्किल मोमिन पर रंजो ग़म अव्वलन आएंगे नहीं, अगर आएंगे तो पानी की तरह बेह जाएंगे, अगर कुछ ठेहर भी गए तो दिल उन का असर नहीं लेता, दिल अल्लाह की याद में मख़्मूर रेहता है। (मिरआतुल मनाजीह, 7/123)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(हिकायत : 2)

तवक्कुल करने वाले राहत में होंगे

ताबेई बुज़ुर्ग हज़रते सैयदना अबू फ़र्वह अदी बिन अदी जज़री رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने मुझ से ख़्वाब में कहा : क्या तुम नहीं जानते कि तवक्कुल करने वाले ही आराम में होंगे। मैं ने अर्ज़ की : अल्लाह करीम आप पर रहम फ़रमाए, किस चीज़ से आराम में होंगे ? फ़रमाया : दुन्या के ग़मों और हिसाब की सख़्ती से। अल्लाह की क़सम ! उस ख़्वाब के बाद से मैं कभी जल्दी या ताख़ीर से रिज़्क़ मिलने पर रन्जीदा नहीं हुवा क्यूंकि जो तवक्कुल अपना लेता है अल्लाह पाक उस की मुरादों को पूरा फ़रमाता है, रिज़्क़ के साथ साथ भलाई भी उस की तरफ़ चली आती है।

(شعب الایمان، الثالث عشر، ۱۰۷/۲، رقم : ۱۳۰٤)

ऐ आशिक़ाने रसूल ! बीमारी, क़र्ज़दारी, बे रोज़गारी, माली तंगदस्ती, नाजाइज़ मुक़द्दमा बाज़ी और घरेलू नाचाक़ी जैसी हमारी कई परेशानियां ऐसी हैं जिन का इलाज तवक्कुल में है लेकिन मालूमात की कमी, नेक सोहबत से दूरी

की वज्ह से इस त़रफ़ तवज्जोह न होने के बराबर है। तवक्कुल (Trust) किसे केहते हैं ? येह क्यूं ज़रूरी है ? इस के क्या फ़वाइद (Advantages) हैं ? तवक्कुल न करने के क्या क्या नुक़्सानात (Disadvantages) हैं ? तवक्कुल कैसे अपनाया जाए ? क्या अस्बाब व ज़राएअ़ (Means) इख़्तियार करना तवक्कुल के मुनाफ़ी है ?

तवक्कुल के बारे में इसी त़रह़ की मालूमात ज़ेरे नज़र किताब में फ़राहम करने की कोशिश की गई है, जो कमोबेश 31 आयाते मुबारका, 22 अह़ादीसे मुक़द्दसा, बुज़ुर्गाने दीन के 37 इरशादात व रिवायात और 47 दिलचस्प ह़िकायात पर मुश्तमिल है । शैख़े त़रीक़त अमीरे एहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने इस का नाम "**तवक्कुल (अल्लाह पर भरोसा)**" रखा है और दारुल इफ़्ता एहले सुन्नत (दावते इस्लामी) के मौलाना ह़स्सान रज़ा अ़त्त़ारी मदनी ने इस की शरई तफ़्तीश भी फ़रमाई है ।

इस किताब को ख़ुद भी पढ़िए और दूसरों को पढ़ने की तरग़ीब दे कर इशाअ़ते इल्म का सवाब ह़ासिल कीजिए। **अल्लाह** पाक हमें दावते इस्लामी के मदनी माह़ौल से वाबस्ता रखे । آمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

शोबए इस्लाह़ी कुतुब

(अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या)

(इस किताब के बारे में अपने तास्सुरात इस ई–मैल एड्रेस पर रवाना कीजिए :)

E-mail : feedbackmmhind@gmail.com
Website : www.dawateislamihind.net

तवक्कुल किसे केहते हैं ?

कुरआने करीम के पारह 4 की सूरए आले इमरान की आयत 159 में इरशादे रब्बे अज़ीम है :

فَاِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَوَكِّلِيْنَ ﴿۱۵۹﴾

(پ ٤، آلِ عمران: ١٥٩)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो किसी बात का इरादा पक्का कर लो तो अल्लाह पर भरोसा करो ! बेशक तवक्कुल वाले अल्लाह को प्यारे हैं।

हज़रते अ़ल्लामा सैयद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه इस आयत के तह़त लिखते हैं : तवक्कुल के माना हैं अल्लाह तबारक व तआ़ला पर एतेमाद (भरोसा) करना और कामों को उस के सिपुर्द (यानी ह़वाले) कर देना, मक़्सूद येह है कि बन्दे का एतेमाद तमाम कामों में अल्लाह पर होना चाहिए। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 141)

तवक्कुल का तफ़्सीली मत़लब

हज़रते इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه मिन्हाजुल आ़बेदीन में तवक्कुल की मुख़्तलिफ़ तारीफ़ें (Definitions) ज़िक्र करने के बाद फ़रमाते हैं : मेरे नज़्दीक मशाइख़ के अक़्वाल का ख़ुलासा येह है कि "तवक्कुल इस का नाम है कि बन्दा येह यक़ीन रखे कि मेरे जिस्म का क़ाइम रेहना, परेशानियों का ख़त्म होना और रिज़्क़ मिलना अल्लाह पाक की ही त़रफ़ से है, सामाने दुन्या या दीगर अस्बाब की वज्ह से नहीं ! बल्कि मेरा रब्बे करीम चाहे तो मेरे जिस्म को बाक़ी रखने और परेशानियों के ख़ातिमे वग़ैरा के लिए मख़्लूक़ या किसी दुन्यावी चीज़ को सबब बना दे और अगर चाहे तो ज़ाहिरी अस्बाब और दुन्यावी वसीलों के बग़ैर भी मुझे ज़िन्दा रखे।"

(इस के बाद इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं :) जब तुम तवक्कुल का येह मत्लब (Meaning) अपने दिल में बिठा लोगे और इसी पर एतेक़ाद (Belief) रखोगे तो तुम्हारा दिल मख़्लूक़ और अस्बाब से बे नियाज़ हो कर बारगाहे रब्बुल अनाम की त़रफ़ मुतवज्जेह रहेगा और तुम्हें सह़ीह़ मानों में तवक्कुल ह़ासिल होगा ।

(मिन्हाजुल आ़बेदीन, स. 108)

मुझे मोह़ताजी का ख़ौफ़ कैसे हो सकता है !

ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते सैयदना अबू ह़ाज़िम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से किसी ने अ़र्ज़ की : आप के पास कितना माल है ? फ़रमाया : दो चीज़ें मेरा माल हैं, जिन की मौजूदगी में मुझे मोह़ताजी का कोई ख़ौफ़ नहीं है : (1) **अल्लाह** पाक पर भरोसा (2) लोगों के पास मौजूद चीज़ से मायूस हो जाना । एक और मौक़ेअ़ पर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : मुझे मोह़ताजी का ख़ौफ़ कैसे हो सकता है ! जबकि सारी ज़मीनो आस्मान और इन के दरमियान जो कुछ है और तह़तुस्सरा (ज़मीन के नीचे) तक सब कुछ मेरे मौला करीम की मिल्किय्यत है ।

(شعب الایمان، ۲/ ۱۰٦، رقم: ۱۳۰۰ والموسوعة لابن ابی الدنیا، کتاب القناعة والتعفف، ۲/۲٦۹، رقم: ۹۱)

तवक्कुल करने वाला मोह़ताज नहीं होगा

ह़ज़रते सैयदना सुलैमान ख़व्वास رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : अगर कोई शख़्स सच्चे दिल से **अल्लाह** पाक पर तवक्कुल करे तो अमीर ग़रीब सब उस के मोह़ताज हो जाएंगे और वोह किसी का मोह़ताज नहीं

होगा क्यूंकि इस का मालिक (यानी रब्बे करीम) तमाम ज़मीनो आस्मान के ख़ज़ानों का मालिक है। (मिन्हाजुल आ़बेदीन, स. 104)

(हिकायत : 3)

पहाड़ हिलने लगा

ह़ज़रते सैयदना अ़ब्दुल्लाह हरवी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : हम ह़ज़रते सैयदना फ़ुज़ैल बिन इयाज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के हमराह जबले अबू क़ुबैस पर मौजूद थे कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इरशाद फ़रमाया : अगर कोई शख़्स **अल्लाह** पर तवक्कुल के मुआ़मले में सच्चा हो और वोह इस पहाड़ को अपनी जगह से ह़रकत करने का हुक्म दे तो येह ज़रूर ह़रकत करेगा। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की मुबारक ज़बान से येह अल्फ़ाज़ निकलने की देर थी कि पहाड़ ने हिलना शुरूअ़ कर दिया, येह देख कर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने पहाड़ से इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** पाक तुझ पर रह़म करे ! मैं ने तुझे नहीं कहा था। इस पर पहाड़ साकिन (Motionless) हो गया। (المستطرف، الباب الثامن والسبعون، ۲/ ٤٥٤)

अल्लाह पर तवक्कुल फ़र्ज़े ऐन है

अल्लाह पाक पर तवक्कुल हर आ़क़िल बालिग़ मुसलमान के लिए फ़र्ज़ है चुनान्चे आला ह़ज़रत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن लिखते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर तवक्कुल फ़र्ज़े ऐन है, **क़ालल्लाहु तआ़ला** (यानी **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया) : ''وَعَلَى اللّٰهِ فَتَوَكَّلُوْۤا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۲۳﴾'' (پ٦، المآئدة:٢٣)
(तर्जमा) **अल्लाह** ही पर तवक्कुल करो अगर मुसलमान हो, और फ़रमाता है :
''اِنْ كُنْتُمْ اٰمَنْتُمْ بِاللّٰهِ فَعَلَيْهِ تَوَكَّلُوْۤا اِنْ كُنْتُمْ مُّسْلِمِيْنَ ﴿۸۴﴾'' (پ١١، يونس: ٨٤)
(तर्जमा) अगर तुम ख़ुदा पर ईमान रखते हो तो उसी पर भरोसा करो ! अगर मुसलमान हो। (फ़ज़ाइले दुआ़, स. 287)

आला ह़ज़रत رَحۡمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ मज़ीद फ़रमाते हैं : आ़लमे अस्बाब में रेह कर तर्के अस्बाब (यानी अस्बाब को छोड़ देना) गोया इब्त़ाले ह़िक्मते इलाहिय्या (यानी **अल्लाह** पाक की ह़िक्मत को बात़िल करने की त़रह़) है। (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :) كَبَاسِطِ كَفَّيْهِ اِلَى الْمَآءِ لِيَبْلُغَ فَاهُ وَمَا هُوَ بِبَالِغِهٖ ؕ (پ:١٣،الرعد:١٤) जैसे कोई हथेलियां पानी की त़रफ़ फैलाए हुवे कि वोह उस के मुंह में पहुंच जाए और वोह पहुंचने वाला नहीं। (फ़ज़ाइले दुआ़, स. 287 ता 289)

तवक्कुल का इ़ल्म सीखना भी फ़र्ज़े ऐ़न है

आला ह़ज़रत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ الرَّحۡمٰن फ़तावा रज़विया जिल्द 23 सफ़ह़ा 624 पर लिखते हैं : हर उस शख़्स पर उस की ह़ालते मौजूदा के मस्अले सीखना फ़र्ज़े ऐ़न है और इन्हीं में से हैं **मसाइले ह़लालो ह़राम** कि हर फ़र्दे बशर (Person) उन का मोह़ताज है और मसाइले इ़ल्मे क़ल्ब यानी फ़राइज़े क़ल्बिय्या मिस्ले तवाज़ोअ़ व इख़्लास व तवक्कुल वग़ैरहा और उन के तुरुक़े तेह़सील (यानी ह़ासिल करने के त़रीक़े) और मोह़र्रमाते बात़िनिय्या (यानी बात़िनी ममनूआ़त मसलन) तकब्बुर व रिया व उ़ज्ब व ह़सद वग़ैरहा और उन के मुआ़लजात (यानी इ़लाज) कि उन का इ़ल्म भी हर मुसलमान पर अहम फ़राइज़ से है, जिस त़रह़ बे नमाज़ (यानी नमाज़ न पढ़ने वाला) फ़ासिक़ो फ़ाजिर व मुर्तकिबे कबाइर (यानी कबीरा गुनाह करने वाला) है यूंही बिऐ़निही (यानी बिल्कुल इसी त़रह़) रिया से नमाज़ पढ़ने वाला इन्हीं मुसीबतों में गिरफ़्तार है, نَسْئَلُ اللهَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ (यानी हम **अल्लाह** पाक से अ़फ़्वो आ़फ़ियत का सवाल करते हैं)। (फ़तावा रज़विया मुख़र्रजा, 23/624)

www.dawateislami.net

तवक्कुल क्यूं ज़रूरी है ?

प्यारे इस्लामी भाइयो ! रिज़्क़ और दीगर ह़ाजात के बारे में अल्लाह पाक पर तवक्कुल और भरोसा लाज़िम व ज़रूरी होने की दो वुजूहात हैं :

पेहली वज्ह : ताकि इन्सान इ़बादत के लिए फ़ारिग़ हो सके और ख़ूब नेकियां कर सके क्यूंकि जो शख़्स तवक्कुल नहीं करता वोह अल्लाह पाक की इ़बादत छोड़ कर अपनी ह़ाजात व ज़रूरियात और रिज़्क़ में मशग़ूल (Engaged) हो जाता है, फिर येह मशग़ूलिय्यत ज़ाहिरी त़ौर पर होती है या बात़िनी त़ौर पर ! ज़ाहिरी त़ौर पर इस त़रह़ कि वोह रोज़ी की तलाश में आ़म लोगों की त़रह़ मारा मारा फिरेगा और बात़िनी त़ौर पर इस त़रह़ कि उस का दिल रोज़ी की फ़िक्र, कमाई की तदबीरों और मुख़्तलिफ़ क़िस्म के वसवसों में घिरा रहेगा, जबकि इ़बादत का ह़क़ अदा करने के लिए दिल और बदन का फ़ारिग़ होना ज़रूरी होता है और ऐसी फ़राग़त तवक्कुल वालों को ही मयस्सर आ सकती है ।

दूसरी वज्ह : तवक्कुल छोड़ने में अ़ज़ीम ख़त़रात और बड़े बड़े नुक़्सानात हैं, वोह इस त़रह़ कि

۞ अल्लाह पाक ने जहां इन्सान की पैदाइश का बयान फ़रमाया वहीं उस के रिज़्क़ का भी ज़िक्र किया चुनान्चे फ़रमाया :

اَلَّذِیْ خَلَقَكُمْ ثُمَّ رَزَقَكُمْ (پ۲۱،الروم:۴۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जिस ने तुम्हें पैदा किया फिर तुम्हें रोज़ी दी । इस से मालूम हुवा कि जिस त़रह़ वोह ख़ालिक़ है, राज़िक़ भी है ।

۞ फिर सिर्फ़ इसी क़दर पर किफ़ायत न की बल्कि सराहतन (वाज़ेह तौर पर) रिज़्क़ का वादा फ़रमाया : اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الرَّزَّاقُ (پ۲۷،الذاریات:۵۸) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक **अल्लाह** ही बड़ा रिज़्क़ देने वाला ।

۞ फिर सिर्फ़ इस वादे पर इक्तेफ़ा न किया बल्कि इस की ज़मानत भी दी और फ़रमाया : وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِی الْاَرْضِ اِلَّا عَلَی اللّٰهِ رِزْقُهَا (پ۱۲،ھود:۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और ज़मीन पर चलने वाला कोई ऐसा नहीं जिस का रिज़्क़ **अल्लाह** के ज़िम्मए करम पर न हो ।

۞ फिर सिर्फ़ ज़िम्मए करम पर इक्तेफ़ा न किया बल्कि इस पर क़सम याद फ़रमाई, चुनान्चे फ़रमाया :

فَوَرَبِّ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ اِنَّهٗ لَحَقٌّ مِّثْلَ مَاۤ اَنَّكُمْ تَنْطِقُوْنَ ﴿۲۳﴾ (پ۲۶،الذاریات:۲۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो आस्मान और ज़मीन के रब की क़सम बेशक येह क़ुरआन हक़ है वैसी ही ज़बान में जो तुम बोलते हो ।

۞ फिर सिर्फ़ क़सम पर इक्तेफ़ा न किया बल्कि बड़े वाज़ेह अल्फ़ाज़ में तवक्कुल का ताकीदी हुक्म दिया, चुनान्चे फ़रमाया :

وَتَوَكَّلْ عَلَی الْحَیِّ الَّذِیْ لَا یَمُوْتُ (پ۱۹،الفرقان:۵۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और भरोसा करो उस ज़िन्दा पर जो कभी न मरेगा ।

दूसरी जगह फ़रमाया : وَعَلَی اللّٰهِ فَتَوَكَّلُوْۤا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِیْنَ ﴿۲۳﴾ (پ۶،المائدۃ:۲۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और **अल्लाह** ही पर भरोसा करो अगर तुम्हें ईमान है ।

तो ऐ आशिक़ाने रसूल ! जो शख़्स रब्बे काइनात के फ़रमान पर एतिबार न करे (مَعَاذَاللّٰه) उस के वादे को काफ़ी न समझे, और उस के ज़िम्मा लेने पर मुत्मइन (Satisfied) न हो बल्कि उस के वादे, वईद और हुक्म की कोई परवाह न करे, तो ऐसे शख़्स का क्या अन्जाम होगा ? उस पर कितनी

परेशानियां आएंगी ? **वल्लाह** ! येह बहुत बड़ा नुक़्सान है लेकिन हम इस से ग़ाफ़िल हैं। (मिन्हाजुल आ़बेदीन, स. 103 ता 106 माख़ूज़न)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

तवक्कुल किन चीज़ों में होता है ?

तवक्कुल का लफ़्ज़ तीन जगह इस्तेमाल किया जाता है :

(1) **क़िस्मत पर**, क़िस्मत पर तवक्कुल करने के माना येह हैं कि ख़ुदा ए पाक ने तुम्हारी क़िस्मत में जो कुछ लिख दिया है उस पर मुत़मइन रहा जाए, क्यूंकि उस का हुक्म तब्दील नहीं हो सकता और शर्अ़ की त़रफ़ से येह इत़मीनान लाज़िम और ज़रूरी है।

(2) **मक़ामे नुसरत पर**, नुसरत (यानी मदद) में तवक्कुल करने के येह माना हैं कि **अल्लाह** पाक की इमदाद पर एतेमाद और यक़ीन किया जाए क्यूंकि जब तुम उस के दीन की मदद और उस की नश्रो इशाअ़त में कोशिश करोगे तो वोह भी ज़रूर तुम्हारी इमदाद करेगा,

अल्लाह पाक फ़रमाता है :

فَاِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ

(پ٤، آل عمران:١٥٩)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और जो किसी बात का इरादा पक्का कर लो तो **अल्लाह** पर भरोसा करो।*

दूसरे मक़ाम पर फ़रमाया :

اِنْ تَنْصُرُوا اللّٰهَ يَنْصُرْكُمْ

(پ٢٦، محمد:٧)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *अगर तुम दीने ख़ुदा की मदद करोगे **अल्लाह** तुम्हारी मदद करेगा।*

एक और जगह फ़रमाया :

وَكَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرُ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٧﴾ (پ۲۱،الروم:٤٧)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और हमारे ज़िम्मए करम पर है मुसलमानों की मदद फ़रमाना ।*

तो इमदाद के सिलसिले में भी अल्लाह पाक के मुताबिक़ उस पर तवक्कुल व भरोसा ज़रूरी है ।

(3) **तीसरा मक़ाम** जहां तवक्कुल करना चाहिए वोह रिज़्क़ और रोज़ाना की ह़ाजात हैं क्यूंकि अल्लाह पाक उस चीज़ का ज़ामिन और कफ़ील है जिस से तुम्हारा जिस्म क़ाइम रहे और जिस के ज़रीए तुम उस की इ़बादत कर सको क्यूंकि रब्बे करीम का इरशाद है :

وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَهُوَ حَسْبُهٗ ؕ (پ۲۸،الطلاق:۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और जो अल्लाह पर भरोसा करे तो वोह उसे काफ़ी है ।*

जबकि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है :

لَوْ اَنَّكُمْ كُنْتُمْ تَوَكَّلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ حَقَّ تَوَكُّلِهٖ لَرُزِقْتُمْ كَمَا تُرْزَقُ الطَّيْرُ تَغْدُوْ خِمَاصًا وَتَرُوْحُ بِطَانًا

अगर तुम खुदा पर ऐसा तवक्कुल रखते जैसा उस पर तवक्कुल करने का ह़क़ है तो तुम्हें इस त़रह़ रिज़्क़ मिलता जिस त़रह़ परिन्दों को मिलता है कि वोह सुब्ह़ भूके निकलते हैं और शाम को उन का पेट भरा होता है ।

(ترمذی،کتاب الزھد،باب فی التوکّل علی الله،٤/١٥٤حدیث:٢٣٥١)

लेहाज़ा रिज़्क़ के बारे में खुदा पर तवक्कुल करना अ़क़्लन व शरअ़न लाज़िम है, और सूफ़िया के नज़्दीक आ़म तौ़र पर लफ़्ज़ तवक्कुल से मुराद रिज़्क़ के सिलसिले में खुदा पर तवक्कुल करना होता है। (मिन्हाजुल आ़बेदीन, स. 107)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(हिकायत : 4)

एक के बदले दस मिले

अपने दौर के अब्दाल ह़ज़रते सैयदना अबू जाफ़र बिन ख़त्ताब رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मेरे दरवाज़े पर एक सवाली ने सदा लगाई, मैं ने अपनी ज़ौजा से पूछा : तुम्हारे पास कुछ है ? जवाब मिला : चार अन्डे हैं। मैं ने कहा : फ़क़ीर को दे दो। उस ने दे दिए। अभी थोड़ी देर गुज़री थी कि मेरे पास एक दोस्त ने अन्डों से भरी हुई टोकरी भेजी। मैं ने ज़ौजा से पूछा : उस में कितने अन्डे हैं ? उन्हों ने कहा : तीस। मैं ने कहा : तुम ने तो फ़क़ीर को चार अन्डे दिए थे, येह तीस किस ह़िसाब से आए ! केहने लगीं : तीस अन्डे सालिम (सलामत) हैं और दस टूटे हुवे। ह़ज़रते सैयदना शैख़ अ़ल्लामा याफ़ेई यमनी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : बाज़ ह़ज़रात इस ह़िकायत के मुतअ़ल्लिक़ येह बयान करते हैं कि साइल को जो अन्डे दिए गए थे उन में तीन सालिम और एक टूटा हुवा था, रब्बे करीम ने हर एक के बदले दस दस अ़त़ा फ़रमाए, सालिम के इवज़ सालिम अन्डे और टूटे हुवे अन्डे के बदले टूटे हुवे।

(روض الرياحين،الخامسة والعشرون بعد الثلاث مئة ، ص٢٧٤)

त़ाक़त वर, इ़ज़्ज़त वाला और मालदार बनने का नुस्ख़ा

उम्मत पर मेहरबान आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो सब से ज़्यादा त़ाक़तवर बनना चाहे उसे चाहिए कि तवक्कुल करे, और जो सब से ज़्यादा इ़ज़्ज़त वाला बनना चाहे उसे चाहिए कि ख़ौफ़े ख़ुदा इख़्तियार करे, और जो सब से ज़्यादा मालदार होना चाहे उसे चाहिए कि जो कुछ **अल्लाह** पाक के पास है उसे अपने पास मौजूद चीज़ से ज़्यादा क़ाबिले भरोसा जाने। (حلية الاولياء ، محمد بن كعب القرظى ، ٣/٣٠٣ ، حديث : ٣٨٦٧)

(हिकायत : 5)

रिज़्क़ जंगल में भी मिल जाता है

हज़रते सैयदना अबू इब्राहीम यमानी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : एक मरतबा हम चन्द रुफ़क़ा हज़रते सैयदना इब्राहीम बिन अदहम رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के हमराह समुन्दर के क़रीब एक वादी की त़रफ़ गए। हम समुन्दर के किनारे किनारे चल रहे थे कि रास्ते में एक पहाड़ आया, वहां हम ने कुछ देर क़ियाम किया और फिर सफ़र पर रवाना हो गए। रास्ते में एक घना जंगल (Forest) आया जिस में ब कसरत ख़ुश्क दरख़्त और झाड़ियां थीं। शाम क़रीब थी और सर्दियों का मौसम था, हम ने आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की बारगाह में अ़र्ज़ की : अगर आप मुनासिब समझें तो आज रात हम साहि़ले समुन्दर पर गुज़ार लेते हैं, यहां इस क़रीबी जंगल में ख़ुश्क लकड़ियां बहुत हैं, हम लकड़ियां जम्अ़ कर के आग रौशन कर लेंगे इस त़रह़ हम सर्दी और दरिन्दों वग़ैरा से मेह़फ़ूज़ रहेंगे। फ़रमाया : ठीक है जैसे तुम्हारी मर्ज़ी। चुनान्चे हमारे कुछ दोस्तों ने जंगल से ख़ुश्क लकड़ियां इकट्ठी कीं और एक शख़्स को आग लेने के लिए एक क़रीबी क़ल्ए़ (Castle) की त़रफ़ भेज दिया, जब वोह आग ले कर आया तो हम ने जम्अ़ शुदा लकड़ियों में आग लगा दी और सब आग के इर्द गिर्द बैठ गए और हम ने खाने के लिए रोटियां निकाल लीं। अचानक हम में से एक शख़्स ने कहा : देखो ! उन लकड़ियों से कैसे अंगारे बन गए हैं, ऐ काश ! हमारे पास गोश्त होता तो हम उसे इन अंगारों पर भून लेते। आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने उस की येह बात सुन ली और फ़रमाने लगे : **अल्लाह** पाक इस बात पर क़ादिर है कि तुम्हें इस जंगल में ताज़ा गोश्त खिलाए। अभी उन की बात पूरी भी न हुई थी कि अचानक एक त़रफ़ से

शेर आया जो एक मोटे ताज़े हिरन के पीछे भाग रहा था। हिरन का रुख़ हमारी ही त़रफ़ था। जब हिरन हम से कुछ फ़ासिले पर रेह गया तो शेर ने उस पर छलांग लगाई और उस की गर्दन पर शदीद ह़म्ला किया जिस से वोह तड़पने लगा। येह देख कर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه उठे और उस हिरन की त़रफ़ लपके, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को आता देख कर शेर हिरन को छोड़ कर पीछे हट गया। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : येह रिज़्क़ **अल्लाह** पाक ने हमारे लिए भेजा है। चुनान्चे हम ने हिरन को ज़ब्ह़ किया और उस का गोश्त अंगारों पर भून भून कर खाते रहे और शेर दूर बैठा हमें देखता रहा।

(عیون الحکایات، الحادیة والسبعون بعد المائة، ص ١٨٢)

तवक्कुल मोमिन का ज़ेवर है

अल्लाह करीम फ़रमाता है :

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّ اَنْتُمْ اَذِلَّةٌ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۱۲۳﴾ اِذْ تَقُوْلُ لِلْمُؤْمِنِيْنَ اَلَنْ يَّكْفِيَكُمْ اَنْ يُّمِدَّكُمْ رَبُّكُمْ بِثَلٰثَةِ اٰلٰفٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ مُنْزَلِيْنَ ﴿۱۲۴﴾

(پ ٤، اٰل عمران: ١٢٣ ـ ١٢٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और बेशक **अल्लाह** ने बद्र में तुम्हारी मदद की जब तुम बिल्कुल बे सरो सामान थे तो **अल्लाह** से डरो कि कहीं तुम शुक्र गुज़ार हो जब ऐ मेह़बूब तुम मुसलमानों से फ़रमाते थे क्या तुम्हें येह काफ़ी नहीं कि तुम्हारा रब तुम्हारी मदद करे तीन हज़ार फ़रिश्ते उतार कर।*

ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان तफ़्सीरे नईमी में फ़रमाते हैं : इस आयते करीमा में रब तआ़ला ने मोमिनों को तवक्कुल

का हुक्म भी दिया और इस का नतीजा भी दिखाया और बताया, जिस से मालूम हुवा कि तवक्कुल मोमिन का ज़ेवर है और ईमान का निशान। **तवक्कुल की ह़क़ीक़त** येह है कि अस्बाब को जम्अ़ करे, रब तआ़ला पर एतेमाद करे और अपने इज्ज़ के इज़्हार, घबराहट से दूर रहे। (मुफ़्ती साहिब मजी़द लिखते हैं :) **तवक्कुल के तीन दरजे हैं : पेहला दर्जा** अस्बाब जोड़ना, **दूसरा दर्जा** अस्बाब छोड़ना, **तीसरा दर्जा** अस्बाब तोड़ना। **हि़कायत :** जब ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام को गोफन (वोह मशीन जिस के ज़रीए़ पथ्थरों को दूर तक फेंका जा सकता है) के ज़रीए़ नमरूदी आग में फेंका गया तो रास्ते में जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام मिले, अ़र्ज़ किया : कुछ आप को ह़ाजत है ? फ़रमाया : तुम से कुछ नहीं। अ़र्ज़ किया : रब तआ़ला से है ? फ़रमाया : ''حَسْبِی عَنْ سُوَالِیْ عِلْمُہٗ بِحَالِی'' वोह मेरी ह़ालत को जानता है, फिर मांगने की ह़ाजत नहीं। येह है तवक्कुल का आख़िरी दर्जा, कभी रब तआ़ला से दुआ़ करना इबादत है, कभी दुआ़ न करना इत़ाअ़त। सूफ़िया फ़रमाते हैं कि इस **तवक्कुल की तीन निशानियां** हैं : (1) किसी से न मांगना (2) बग़ैर मांगे जो मिले उसे रद (यानी वापस) न करना (3) जो आ जाए उस पर बुख़्ल न करना और जो कुछ रखना नफ़्स के वास्ते़ न रखना (बल्कि) रब तआ़ला के लिए रखना। (तफ़्सीरे नईमी, 4/154)

तवक्कुल ईमान वालों की निशानी है

सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : जिस दिन मोमिनीन अपनी क़ब्रों से उठाए जाएंगे उन की निशानी येह होगी (कि वोह येह केह रहे होंगे) : ''لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَعَلَی اللّٰہِ فَلْیَتَوَکَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ''

यानी अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, और अल्लाह ही पर ईमान वाले भरोसा करें। (الجامع الصغير، جزء ٢، ص ٣٠٠، حديث: ٤٨٨٦)

ह़ज़रते सैयदना अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मुनावी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इस ह़दीस की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : इस ह़दीस में तवक्कुल की फ़ज़ीलत का बयान है, और ऐसा क्यूं न हो कि तवक्कुल तमाम दीनी व दुन्यावी चीज़ों का सर चश्मा है। एक बुज़ुर्ग को किसी ने बादे वफ़ात ख़्वाब में देख कर पूछा : मुआ़मला कैसा रहा ? फ़रमाया : मैं ने तवक्कुल को बड़ी अ़ज़ीम चीज़ पाया।

(فيض القدير، حرف الشين، ٤/٢١٣، تحت الحديث: ٤٨٨٦)

तवक्कुल व अस्बाब को जम्अ़ करना अफ़्ज़ल है

रेह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ख़ुश्बूदार है : اَلتَّوَكُّلُ بَعْدَ الْكَيْسِ مَوْعِظَةٌ यानी रक़म की थेली पास रख कर तवक्कुल करना अच्छी नसीह़त है। (الفردوس بماثور الخطاب، باب التاء، ١/٣٠٩، حديث: ٢٢٥٤)

ह़ज़रते सैयदना मुआ़विया बिन क़ुर्रह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सैयदना उ़मर फ़ारूके़ आज़म رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه की कुछ लोगों से मुलाक़ात हुई तो इस्तिफ़्सार फ़रमाया : तुम कौन लोग हो ? अ़र्ज़ की : हम मुतवक्किलीन (यानी तवक्कुल करने वाले) हैं, फ़रमाया : बल्कि तुम मुतअक्किलीन (यानी खाने वाले) हो, मुतवक्किल तो वोह होता है जो ज़मीन में दाना बो कर अल्लाह पाक पर तवक्कुल करता है।

(شعب الايمان، ٢/٨١، رقم: ١٢١٥)

www.dawateislami.net

बग़ैर काम किए रिज़्क़ का त़लबगार जाहिल है

ह़ज़रते सैयदना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से किसी ने पूछा : आप उस शख़्स के मुतअ़ल्लिक़ क्या फ़रमाते हैं जो अपने घर या मस्जिद में बैठ जाए और कहे कि मैं कोई काम नहीं करूंगा, मेरा रिज़्क़ मुझ तक पहुंच जाएगा ? इरशाद फ़रमाया : ऐसा शख़्स जाहिल है।

(احياء علوم الدين، كتاب اٰداب الكسب والمعاش، ٢/ ٨١)

(ह़िकायत : 6)

अपाहज जानवर को दूध और शह्द पिलाने वाला फ़रिश्ता

एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के बारे में मन्क़ूल है कि वोह दिल में रोज़ी त़लब करने का इरादा कर के घर से निकले और एक जंगल में से गुज़रे, एक मक़ाम पर क्या देखते हैं कि एक जानवर निहायत फ़र्बा और तरो ताज़ा बैठा हुवा है, जिस के न हाथ हैं न पाउं और आंखों से भी अन्धा है। वोह बुज़ुर्ग ऐसे मजबूर जानवर को इस क़दर तरो ताज़ा देख कर निहायत ह़ैरान हुवे और वहां बैठ कर ह़ैरत से सोचने लगे : या अल्लाह ! येह जानवर किस त़रीक़े से अपना रिज़्क़ पाता है ? ह़ालांकि बज़ाहिर कोई ज़रीआ़ रोज़ी ह़ासिल करने का इस के पास मौजूद भी तो नहीं, न येह चल सकता है, न देख सकता है ! वोह बुज़ुर्ग इस क़िस्म की बातें अपने दिल में सोच ही रहे थे कि इतने में एक जगह से ज़मीन शक़ (यानी अलग अलग) हुई और दो प्याले बर आमद हुवे, एक दूध से भरा हुवा था और दूसरा शह्द से, उन बुज़ुर्ग ने अब दिल में येह ख़याल किया : इस ग़िज़ा को येह कैसे खाएगा ? अचानक क्या देखते हैं कि उसी मक़ाम पर पहाड़ से एक बुज़ुर्ग निहायत ख़ूब सूरत और नूरानी चेहरे वाले नीचे तशरीफ़ लाए और

उस के पास बैठ कर दोनों प्याले उस को पिला दिए, जब वोह नूरानी चेहरे वाले बुज़ुर्ग वापस पहाड़ की त़रफ़ जाने लगे तो इन बुज़ुर्ग ने बढ़ कर नूरानी चेहरे वाले का दामन थाम लिया और पूछा : आप कौन हैं ? उन्हों ने फ़रमाया : मैं अल्लाह पाक का एक फ़िरिश्ता हूं और येह मेरी ज़िम्मेदारी है कि हर रोज़ सुब्ह़ो शाम यहां आऊं और इस जानवर को पेट भर कर गिज़ा खिलाऊं ।

येह वाक़िआ़ देख कर उन बुज़ुर्ग ने रोज़ी त़लब करने की मशक़्क़त के ख़याल को दिल से निकाल दिया और उसी पहाड़ पर एक चश्मे के कनारे नमाज़ रोज़े में मशग़ूल हो गए। सात दिन गुज़र गए, मगर ग़ैब से कोई रिज़्क़ न पहुंचा, फ़ाक़ों के सबब निहायत कमज़ोर और निढाल हो गए, आख़िरे कार अल्लाह पाक की बारगाह में दुआ़ की : ऐ अल्लाह ! अपनी रेह़मत से मुझ को कोई गिज़ा का लुक़्मा अ़ता फ़रमा...या...मेरी रूह़ को क़ब्ज़ कर ले ! अल्लाह करीम की त़रफ़ से जवाब मिला : ऐ शख़्स ! तू अपने हाथ पाउं को ह़रकत दे और रोज़ी त़लब कर ! मैं तुझे तेरा रिज़्क़ अ़ता करूंगा, खुद भी खा और मोह़ताजों को भी खिला ! और अगर इस ह़ालत में इसी पहाड़ पर 70 बरस तक भी बैठा रहेगा तो मैं तुझ को गिज़ा का एक दाना भी न दूंगा। उस वक़्त बुज़ुर्ग को एह़सास हुवा और पहाड़ से उतर कर रोज़ी की तलाश में मशग़ूल हो गए, जो कुछ कमाते, आधा खुद खाते और आधा मोह़ताजों को खिला देते।

(تذکرۃ الواعظین، الباب العشرون فی فضیلۃ التوکُّل، ص ۲۳۰)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! तवक्कुल फ़क़त़ इस बात का नाम नहीं है कि काम काज छोड़ कर बैठे रहें और रिज़्क़ का इन्तेज़ार करते रहें, येह दुन्या आ़लमे अस्बाब है लेहाज़ा अस्बाब (Sources) का सहारा भी लेना चाहिए।

www.dawateislami.net

अस्बाब या ज़राएअ़ अपनाना तवक्कुल के ख़िलाफ़ नहीं

आला हज़रत मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن फ़तावा रज़विया जिल्द 24 सफ़हा 280 पर लिखते हैं : तवक्कुल तर्के अस्बाब और इन पर जुरअत करना नहीं और न वोह हिक्मत के ख़िलाफ़ है बल्कि अस्बाब को दिल से निकाल देना और फ़ाइदा बख़्श चीज़ को लेना और ज़रर रसां उमूर (यानी नुक़्सान देने वाली बातों) से बचना और निगाह को सिर्फ़ **अल्लाह** तआ़ला جَلَّ وعلا (जो मुसब्बिबुल अस्बाब है) पर रोक रखना, उस की क़ुयूद को मल्हूज़ रखना तवक्कुल अ़लल्लाह है। (फ़तावा रज़विया, 24/280) एक और मक़ाम पर आला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه लिखते हैं : नज़र मुसब्बिब جَلَّ وعلا (यानी **अल्लाह** पाक) पर रख कर जाइज़ अस्बाबे रिज़्क़ का इख़्तियार करना हरगिज़ मुनाफ़िए तवक्कुल (यानी तवक्कुल के ख़िलाफ़) नहीं, तवक्कुल तर्के अस्बाब का नाम नहीं बल्कि एतेमाद अ़लल अस्बाब का तर्क (यानी अस्बाब पर एतेमाद को छोड़ देने का नाम) है। (फ़तावा रज़विया, 24/379)

जानवर बांध कर तवक्कुल करो !

एक सहाबी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने बारगाहे रिसालत में हाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं अपने जानवर को बांध कर तवक्कुल करूं या खुला छोड़ कर ? फ़रमाया : उसे बांधो और (फिर) तवक्कुल करो।

(ترمذی، کتاب صفة القيامة، باب (ت: ١٢٥)، ٢٣٢/٤، حديث: ٢٥٢٠)

हज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मुनावी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : ऐसा आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस लिए फ़रमाया कि जानवर को बांधना तवक्कुल (जो **अल्लाह** पाक पर एतेमाद का नाम है) के ख़िलाफ़ नहीं है और अस्बाब से क़त्ए़ नज़र करने के भी ख़िलाफ़ नहीं है, इस ह़दीस में एह़तियात़ करने की फ़ज़ीलत और दूर अन्देशी इख़्तियार करने का बयान है।

(فيض القدير، حرف الهمزة، ٢/ ١٠، تحت الحديث : ١١٩١)

(हि़कायत : 7)

रोटियां कौन भेजता था ?

एक शख़्स दुन्यावी मुआ़मलात से कट कर मस्जिदे ह़राम में इबादतो रियाज़त में मसरूफ़ रहा करता था। दिन भर रोज़ा रखता, रोज़ाना शाम को एक शख़्स उसे दो रोटियां ला कर दे देता जिन से वोह इफ़्त़ार करता और फिर से इबादत में लग जाता। एक रोज़ उस के दिल में आया कि तुम एक इन्सान की दी हुई रोटियों पर भरोसा कर के बैठे हो और उसे भूल गए जो सारी मख़्लूक़ को रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमाने वाला है, येह कैसी ग़फ़्लत है ! उस शाम को रोटियां लाने वाला आया तो उस ने रोटियां वापस कर दीं। तीन दिन गुज़र गए लेकिन खाना नहीं मिला, उस ने अपने रब्बे करीम की बारगाह में फ़रयाद की। जब सोया तो क्या देखता है कि वोह रब्बुल आ़लमीन की बारगाह में ह़ाज़िर है, उस से पूछा गया : मैं अपने बन्दे के ज़रीए़ जो कुछ भेजता था तू ने उसे क्यूं लौटा दिया ? इबादत गुज़ार ने अ़र्ज़ की : या इलाही ! मेरे दिल में ख़याल आया कि तेरे सिवा दूसरे पर भरोसा कर बैठा हूं। रब्बे करीम ने फ़रमाया : उसे तेरे पास कौन भेजता था ? अ़र्ज़ की : मेरे मालिक ! तू ही भेजने वाला है। पूछा : तुम किस से लेते थे ? अ़र्ज़ की : तुझ से। इरशाद हुवा : अब उसे वापस न करना और रोटियां ले लेना

। फिर उस इबादत गुज़ार ने रोटियां लाने वाले को भी बारगाहे रब्बुल अनाम में हाज़िर देखा, रब तआला ने उस से पूछा : तुम ने मेरे बन्दे को रोटियां देना क्यूं बन्द कर दीं ? अर्ज़ की : मेरे मालिको मौला ! तुझे ख़ूब मालूम है। फिर पूछा : ऐ बन्दे ! वोह रोटियां तू किस की ख़ातिर देता था ? अर्ज़ की : तेरी ख़ातिर। इरशाद हुवा : तू अपना अमल जारी रख, तुझे इस के बदले जन्नत मिलेगी। (روض الرياحين، ص۱۳۳)

आने वाली तक्लीफ़ को ख़त्म करना ज़रूरी है

हज़रते अल्लामा अब्दुर्रऊफ़ मुनावी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : तवक्कुल अस्बाब को छोड़ने का नाम नहीं बल्कि अस्बाब पर एतेमाद न करने का नाम है, आने वाली तक्लीफ़ को ख़त्म करना तवक्कुल के ख़िलाफ़ नहीं बल्कि ज़रूरी है जैसे गिरती दीवार के नीचे से भागना और हल्क़ से लुक़्मा उतारने के लिए पानी पीना। (فيض القدير، ۳/۶۶۵، تحت الحديث : ۴۱۱۲)

आस्मान सोना चांदी नहीं बरसाता

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सैयदना उमर फ़ारूके आज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : तुम में से कोई रिज़्क़ की तलब छोड़ कर येह न केहता फिरे : "या अल्लाह ! मुझे रिज़्क़ अता फ़रमा।" क्यूंकि तुम ख़ूब जानते हो कि आस्मान सोना चांदी नहीं बरसाता। (احياء علوم الدين، كتاب آداب الكسب والمعاش، ۲/ ۸۰)

कमाने की ताक़त के बा वुजूद न कमाना तवक्कुल नहीं

सदरुश्शरीआ, बदरुत्तरीक़ा हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आज़मी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : जो लोग मसाजिद और ख़ानक़ाहों में बैठ जाते हैं और

बसर अवक़ात के लिए कुछ काम नहीं करते और अपने को मुतवक्किल बताते हैं, ह़ालांकि उन की निगाहें इस की मुन्तज़िर रेहती हैं कि कोई हमें कुछ दे जाए, वोह मुतवक्किल नहीं, इस से अच्छा येह था कि कुछ काम करते उस से बसर अवक़ात करते। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 16,3/610)

जानवर खुला छोड़ कर तवक्कुल करना कैसा ?

सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : तीन शख़्स हैं कि तुम्हारा रब عَزَّوَجَلَّ उन की दुआ़ क़बूल नहीं फ़रमाता : (1) वोह कि वीराने मकान में उतरे (2) वोह मुसाफ़िर कि सरे राह पड़ाव करे (3) वोह जिस ने खुद अपना जानवर छोड़ दिया, अब **अल्लाह** पाक से दुआ़ करता है कि उसे रोक दे।

(تاریخ دمشق ، عبد الرحمن بن عائذ ، ٣٤/ ٤٤٩)

आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن इस ह़दीस के तह़त लिखते हैं : इस से मुराद येही है कि उस ख़ास माद्दे में उन की दुआ़ न सुनी जाएगी, न येह कि जो ऐसा करे मुत़लक़न उस की कोई दुआ़ किसी अम्र (यानी मुआ़मले) में क़बूल न हो, और इन उमूर में अ़दमे क़बूल (यानी क़बूल न होने) का सबब ज़ाहिर (है) कि येह काम खुद अपने हाथों के किए हैं। लेहाज़ा वीराने मकान में उतरने वाला उस की मुज़र्रतों (यानी नुक़्सानात) से आगाह है, फिर अगर वहां चोरी हो या कोई लूट ले या जिन्न ईज़ा पहुंचाएं तो येह बातें खुद उस की क़बूल की हुई हैं, अब क्यूं उन के रफ़्अ़ (यानी दूर होने) की दुआ़ करता है ! यूंही जब रास्ते पर क़ियाम किया तो हर क़िस्म के लोग गुज़रेंगे, अब अगर चोरी हो जाए या हाथी, घोड़े

के पाउं से कुछ नुक़्सान, रात को सांप वग़ैरा से ईज़ा (यानी तक्लीफ़) पहुंचे, इस का अपना किया हुवा है। मज़ीद फ़रमाते हैं : यूंही जानवर को खुद छोड़ कर उस के हब्स (यानी क़ाबू में आने) की दुआ़ तो ज़ाहिरन हमाक़त है, क्या वाहिदे क़हहार को आज़्माता या مَعَاذَالله उसे अपना मेहकूम ठेहराता है !

(फ़ज़ाइले दुआ़, फ़स्ले शशुम, स. 161)

सूई, क़ैंची, डोल और रस्सी साथ रखते

हज़रते सैयदना इब्राहीम ख़व्वास رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه अपने साथ सफ़र में हमेशा सूई, क़ैंची, डोल और रस्सी रखा करते थे और फ़रमाते : येह चीज़ें तवक्कुल को बरबाद नहीं करतीं। क्यूंकि उन्हें मालूम था कि पानी जंगलों (Forests) में ज़मीन की सत्ह़ पर नहीं होता और डोल और रस्सी के बग़ैर कुंवें का पानी खुद ही ऊपर (भी) नहीं आता, नीज़ जंगलों में ब आसानी डोल और रस्सी नहीं मिलते जिस त़रह़ ब आसानी घास मिल जाती है, पानी की ज़रूरत वुज़ू के लिए दिन में कई मरतबा पड़ती है जबकि पीने के लिए एक या दो दिन में एक मरतबा ज़रूरत पड़ती है क्यूंकि मुसाफ़िर सफ़र की गर्मी की वज्ह से प्यास बरदाश्त नहीं कर सकता लेकिन भूक बरदाश्त कर सकता है, इसी त़रह़ एक कपड़ा पेहना होता है जो कभी फट जाता है और सत्र ज़ाहिर हो जाता है, यूंही हर नमाज़ के वक़्त क़ैंची और सूई ब आसानी नहीं मिलती और न ही कोई और चीज़ सीने और काटने के लिए मिलती है। (احیاء علوم الدین، ٤/٣٢٩)

तवक्कुल के नाम पर जान ख़त़रे में डालना जाइज़ नहीं

इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن लिखते हैं : येह तवक्कुल नहीं कि अस्बाब के साथ मुआ़रज़ा (यानी मुक़ाबला) किया जाए और जो चीज़ तबाही ओ हलाकत तक ले जाए बे सोचे उस में पड़ जाना हरगिज़ जाइज़ नहीं, नीज़ किसी

के लिए येह जाइज़ नहीं कि अपने आप को पहाड़ के ऊपर से गिराए अल्लाह तआ़ला पर तवक्कुल का नाम लेते हुवे और इस यक़ीन व भरोसे के साथ कि अगर अल्लाह तआ़ला न चाहे तो कोई चीज़ नुक़्सान नहीं दे सकती, ऐसा करना जाइज़ नहीं। चुनान्चे हि़कायत बयान की गई है कि ह़ज़रते सैयदना ईसा कलीमतुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَاالکریم وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالتَّسلیم से येही सवाल शैत़ान ने किया था तो आप ने जवाब में फ़रमाया कि मैं अपने परवरदगार का इम्तेह़ान नहीं करता और उसे नहीं आज़माता। एहले इल्म ने सराह़त (वज़ाह़त) फ़रमाई कि समुन्दर में जोश और तूफ़ान आने के वक़्त बह़री सफ़र न किया जाए। (फ़तावा रज़विया, 24/267)

(हि़कायत : 8)

मैं इलाज नहीं करवाऊंगा

मन्क़ूल है कि एक मरतबा ह़ज़रते सैयदना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَاوَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُوَالسَّلَام को मरज़ लाहिक़ हुवा तो बनी इसराईल आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُوَالسَّلَام के पास आए और मरज़ पेहचान कर केहने लगे : अगर फ़ुलां दवाई से इलाज करवाएंगे तो सेह़तयाब हो जाएंगे। आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُوَالسَّلَام ने फ़रमाया : मैं इलाज नहीं करवाऊंगा, अल्लाह पाक मुझे इलाज के बग़ैर शिफ़ा देगा। मरज़ बढ़ता गया तो लोगों ने फिर कहा : फ़ुलां दवा इस मरज़ के लिए आज़माई हुई और मशहूर है, हम उस से इलाज करते हैं तो सेह़तयाब हो जाते हैं। आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُوَالسَّلَام ने वोही इरशाद फ़रमाया : मैं इलाज नहीं करवाऊंगा। मरज़ इसी त़रह़ बर क़रार रहा। अल्लाह पाक ने वह़ी फ़रमाई : मेरी इ़ज़्ज़तो

जलाल की क़सम ! मैं उस वक़्त तक शिफ़ा न दूंगा जब तक उस दवाई से इलाज न करवाओ जिस के मुतअ़ल्लिक़ लोगों ने तुम से कहा है। फिर आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُوَالسَّلَام ने लोगों से फ़रमाया : फ़ुलां दवाई (Medicine) से मेरा इलाज करो। लोगों ने आप का इलाज किया तो आप सेहतयाब हो गए मगर इत्मीनाने क़ल्बी हासिल न हुवा। रब्बे करीम ने वही फ़रमाई : तुम अपने तवक्कुल के ज़रीए मेरे त़रीक़े को बदलना चाहते हो ? **मेरे सिवा कौन है जो जड़ी बूटियों में फ़वाइद रखता है !** (احیاء علوم الدین، ۴/۳۰۲)

इलाज करवाने का शरई हुक्म

सदरुश्शरीआ़ मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अ़ली आज़मी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه लिखते हैं : दवा इलाज करना जाइज़ है जबकि येह एतेक़ाद (यक़ीन) हो कि शाफ़ी (शिफ़ा देने वाला) **अल्लाह** है, उस ने दवा को इज़ालए मरज़ (यानी मरज़ को दूर करने) के लिए सबब बना दिया है और अगर दवा ही को शिफ़ा देने वाला समझता हो तो नाजाइज़ है। (सदरुश्शरीआ़ मज़ीद लिखते हैं :) दस्त आते हैं या आंखें दुखती हैं या कोई दूसरी बीमारी है इस में इलाज नहीं किया और मर गया गुनहगार नहीं है। (आ़लमगीरी) यानी इलाज कराना ज़रूरी नहीं कि अगर दवा न करे और मर जाए तो गुनहगार हो, और भूक प्यास में खाने पीने की चीज़ दस्तयाब हो और न खाए पिए यहां तक कि मर जाए तो गुनहगार है कि यहां यक़ीनन मालूम है कि खाने पीने से वोह बात जाती रहेगी। (बहारे शरीअ़त, 3/505,506) जबकि इलाज न कराने की वज्ह से गुनहगार न होने की वज्ह येह है कि शिफ़ा का हुसूल ज़न्नी है, जैसा कि सदरुश्शरीआ़ लिखते हैं : किसी चीज़ की निस्बत हरगिज़ येह यक़ीन नहीं

किया जा सकता है कि इस से मरज़ ज़ाइल (यानी दूर) ही हो जाएगा, ज़्यादा से ज़्यादा ज़न और गुमान हो सकता है न कि इल्म व यक़ीन, ख़ुद इल्मे तिब्ब के क़वाइद व उसूल ही ज़न्नी हैं लेहाज़ा यक़ीन हासिल होने की कोई सूरत नहीं। (बहारे शरीअ़त, 3/505,506)

हम नहीं जानते कि हमारे ह़क़ में क्या बेहतर है ?

कुरआने करीम के पारह 2 सूरए बक़रह की आयत 216 में इरशाद होता है :

وَعَسٰۤى اَنْ تَكْرَهُوْا شَیْــٴًـا وَّ هُوَ خَیْرٌ لَّكُمْۚ وَعَسٰۤى اَنْ تُحِبُّوْا شَیْــٴًـا وَّ هُوَ شَرٌّ لَّكُمْؕ وَاللّٰهُ یَعْلَمُ وَ اَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ۠(۲۱۶) (پ۲، سورۃ بقرۃ:۲۱۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और क़रीब है कि कोई बात तुम्हें बुरी लगे और वोह तुम्हारे ह़क़ में बेहतर हो और क़रीब है कि कोई बात तुम्हें पसन्द आए और वोह तुम्हारे ह़क़ में बुरी हो और **अल्लाह** जानता है और तुम नहीं जानते।*

रब का इन्तेख़ाब तुम्हारे इन्तेख़ाब से बेहतर है

ह़ज़रते सैयदना अ़ब्दुर्रह़मान इब्ने जौज़ी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : बन्दे को येह बात अच्छी त़रह़ समझ लेनी चाहिए कि जो चीज़ उस के लिए **अल्लाह** पाक ने मुन्तख़ब फ़रमाई है वोह उस के अपने इन्तेख़ाब व इख़्तियार से बेहतर है, बन्दा बाज़ अवक़ात ऐसे "सैलाब" का सवाल करता है जो ख़ुद उसी को बहा कर ले जाता है। ह़दीस में आता है : एक शख़्स **अल्लाह** करीम से जेहाद की तौफ़ीक़ मिलने की दुआ़ किया करता था। एक ग़ैबी आवाज़ ने उसे पुकार कर कहा : अगर तुम ने जेहाद में शिर्कत की तो क़ैदी बना लिए जाओगे और अगर क़ैद हो गए तो नसरानी (Christian) हो जाओगे। (صید الخاطر، ص۱۱٦)

मुतवक्किल दो त़रह़ का होता है

शारेहे़ बुख़ारी ह़ज़रते सैयदना अह़मद बिन अ़ली बिन ह़जर अ़स्क़लानी رَحۡمَۃُاللهِ تَعَالٰی عَلَیۡه फ़रमाते हैं : अस्लाफ़ (यानी बुज़ुर्गों) के मुख़्तलिफ़ अक़्वाल की रौशनी में मुतवक्किल दो त़रह़ का होता है :

(1) वासिल (यानी तवक्कुल की मन्ज़िल पा लेने वाला) येह वोह है जो अस्बाब की त़रफ़ बिल्कुल भी तवज्जोह नहीं करता, अगर्चे अस्बाब इख़्तियार करता हो ।

(2) सालिक (यानी तवक्कुल की त़रफ़ बढ़ने वाला) येह वोह है जिस की तवज्जोह कभी कभी अस्बाब की त़रफ़ हो जाती है, मगर येह इल्मी त़रीक़ों और ज़ौक़े ह़ालिया की बिना पर अपनी इस कैफ़िय्यत को दूर करता रेहता है, यहां तक कि वोह वासिल का मरतबा पा लेता है । ह़ज़रते सैयदना अबुल क़ासिम अ़ब्दुल करीम हुवाज़िन कुशैरी رَحۡمَۃُاللهِ تَعَالٰی عَلَیۡه फ़रमाते हैं : तवक्कुल का मक़ाम दिल है और ज़ाहिरी अफ़्आ़ल तवक्कुल के ख़िलाफ़ नहीं जबकि बन्दा इस बात पर पुख़्ता यक़ीन रखे कि सब कुछ **अल्लाह** पाक के हुक्म से होता है ।

(فتح الباری، کتاب الرقاق، ۱۲/ ۳۵۰، تحت الحدیث : ۶۴۶۱ ملخصًا)

हम क्यूं परेशान होते हैं ?

बाज़ इस्लामी भाई येह सोच कर परेशान रेहते हैं कि कल कलां को कारोबार डूब गया, नौकरी छूट गई या बीमार हो गए तो कहां से खाएंगे ? या मेरे मरने के बाद बच्चों का क्या बनेगा ? याद रखिए ! जिस रब्बे करीम ने आज खिलाया है कल भी वोही खिलाएगा, **अल्लाह** पाक पर तवक्कुल मज़बूत़ कर के टेन्शन से बचा जा सकता है कि बेशक वोही च्यूंटी को कन (कण–अनाज का दाना) और

हाथी को मन (मण–चालीस सेर, यानी ज़्यादा खाना) अ़ता फ़रमाने वाला है । यक़ीनन यक़ीनन यक़ीनन हर जानदार की रोज़ी उसी के ज़िम्मए करम पर है, चुनान्चे क़ुरआने करीम के पारह 12 सूरए हूद की आयत 6 में इरशाद होता है :

وَمَا مِنۡ دَآبَّةٍ فِی الۡاَرۡضِ اِلَّا عَلَی اللّٰهِ رِزۡقُهَا

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और ज़मीन पर चलने वाला कोई (जानदार) ऐसा नहीं जिस का रिज़्क़ अल्लाह के ज़िम्मए करम पर न हो ।

अ़ल्लामा अह़मद सावी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : इस आयत से येह मुराद नहीं कि जानदारों को रिज़्क़ देना अल्लाह पाक पर वाजिब है क्यूंकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस से पाक है कि उस पर कोई चीज़ वाजिब हो बल्कि इस से मुराद है कि जानदारों को रिज़्क़ देना और इन की कफ़ालत करना अल्लाह पाक ने अपने ज़िम्मए करम पर लाज़िम फ़रमा लिया है और (येह उस की रेह़मत और उस का फ़ज़्ल है कि) वोह इस के ख़िलाफ़ नहीं फ़रमाता । रिज़्क़ की ज़िम्मेदारी लेने को "अ़ला" के साथ इस लिए बयान फ़रमाया ताकि बन्दे का अपने रब्बे करीम पर तवक्कुल मज़बूत़ हो और अगर वोह (रिज़्क़ ह़ासिल करने के) अस्बाब इख़्तियार करे तो इन पर भरोसा कर बैठे बल्कि अल्लाह ही पर एतेमाद और भरोसा रखे, अस्बाब सिर्फ़ इस लिए इख़्तियार करे कि अल्लाह पाक ने अस्बाब इख़्तियार करने का हुक्म दिया है क्यूंकि अल्लाह पाक फ़ारिग़ रेहने वाले बन्दे को पसन्द नहीं फ़रमाता । ज़मीन के जानदारों का बत़ौरे ख़ास इस लिए ज़िक्र फ़रमाया कि येही ग़िज़ाओं के मोह़ताज हैं जबकि आस्मानी जानदार जैसे फ़रिश्ते और हूरे ईन, येह उस रिज़्क़ के मोह़ताज नहीं बल्कि उन की ग़िज़ा तस्बीह़ व तेहलील है । (صاوی، ھود، تحت الآیۃ۶، ۳/ ۹۰۰، ۹۰۱)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(हिकायत : 9)

मेहंगाई में भी रिज़्क़ मिलेगा

कुछ लोग ताबेई बुज़ुर्ग हज़रते सैयदना अबू हाज़िम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के पास आ कर केहने लगे : हुज़ूर ! मेहंगाई बढ़ गई है। फ़रमाया : तुम्हें इस का क्या ग़म ! बेशक वोह ख़ुदा जो हमें मेहंगाई से पेहले खिलाता रहा है मेहंगाई में भी खिलाएगा। (حلية الاولياء،سلمة بن دينار ، ٣/ ٢٧٥ ، رقم : ٣٩٤١)

(हिकायत : 10)

दाने दाने पे लिखा है खाने वाले का नाम

एक साहिब ने **आला हज़रत** इमाम अहमद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से दरयाफ़्त किया : "हुज़ूर ! येह जो मशहूर है कि दाने दाने पर मोहर (Stamp) होती है क्या येह सहीह है?" इरशाद फ़रमाया : हर दाने पर एक ही मोहर नहीं बल्कि उस दाने के हर रेज़े पर जिन जिन को पहुंचते हैं उन सब की मोहरें होती हैं। (फिर फ़रमाया) बंगाल में लोग चावल ज़्यादा खाते हैं, एक मुसलमान रईस के खाना खाते वक़्त एक दाना चावल का दिमाग़ पर चढ़ गया, बहुत कोशिश की तबीब डॉक्टर वग़ैरा सब मुआलिज (इलाज करने वाले) हैरान हुवे मगर दाना दिमाग़ से न उतरना था, न उतरा। शुरूअ़ में तो बड़ी तक्लीफ़ रही फिर वोह बेचारे इस तक्लीफ़ के आदी हो गए। बर्सों गुज़र गए, फिर वोह एक साल हरमैने तय्यिबैन हाज़िर होते हैं, जिस वक़्त मक्कए मुअ़ज़्ज़मा पहुंच कर हरम शरीफ़ में दाख़िल होते हैं, एक छींक आती है और वोह दाना जो बर्सों से परवर दगारे आलम ने उन के दिमाग़ में मेहफ़ूज़ रखा था, निकल कर ज़मीन पर गिरता है जिसे फ़ौरन हरम शरीफ़ का एक कबूतर क़बूल कर लेता है। (हयाते आला हज़रत, स. 122)

अ़वाम और ख़वास के तवक्कुल में फ़र्क़

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : शरीअ़त में तवक्कुल के माना हैं : अपने काम ह़वाला ब ख़ुदा (यानी **अल्लाह** के ह़वाले) कर देना। तवक्कुल दो क़िस्म का है : (1) **तवक्कुले अ़वाम :** अस्बाब पर अ़मल कर के नतीजा ख़ुदा के ह़वाले कर देना। (2) **तवक्कुले ख़वास :** अस्बाब छोड़ कर मुसब्बिबुल अस्बाब पर नज़र करना।

(मिरआतुल मनाजीह़, 7/108)

तीन क़िस्म के लोग

पेहली क़िस्म : वोह लोग जिन्हों ने ख़ुद को **अल्लाह** पाक के ह़वाले कर दिया, अब वोह अपनी ज़ात के लिए न तो फ़ाइदा ह़ासिल करते हैं न नुक़्सान को दूर करते हैं, वोह अपना येह उसूल हर मुआ़मले में नाफ़िज़ करते हैं चुनान्चे ख़ुद को दुश्मनों से बचाते हैं न दरिन्दों से, गोया किसी सबब और ज़रीए़ को इख़्तियार ही नहीं करते ह़त्ताकि उन में से बाज़ का ह़ाल येह है कि अगर झाड़ी में कपड़ा उलझ जाए तो उसे ख़ुद नहीं छुड़ाते यहां तक कि हवा चले और कपड़ा झाड़ी से ख़ुद ही निकल आए। क़ुत़्बे वक़्त, इमामुल आ़रिफ़ीन अबू मुह़म्मद सुहैल बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : तवक्कुल का अव्वलीन मक़ाम येह है कि बन्दा **अल्लाह** के सामने ऐसा बन जाए जैसे मुर्दा (Dead body) ग़ुस्ल देने वाले के हाथ में होता है कि वोह उसे जिधर चाहे ह़रकत दे कर उलट पलट करे, उस की अपनी कोई ह़रकत और तदबीर न रहे।

दूसरी क़िस्म : वोह लोग जो ज़रूरियात में अस्बाब तलाश करते हैं, चाहे नुक़्सान से बचने के लिए हो या फ़ाइदा ह़ासिल करने के लिए, इसी

पर अक्सर अम्बिया ओ मुर्सलीन عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का अ़मल है, इसी क़िस्म में से हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का हिजरत के सफ़र में ग़ारे सौर में छुपना भी है और रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आ़दते मुबारका येह थी कि आप ऐसा त़रीक़ा इख़्तियार फ़रमाते जिस पर अ़वामो ख़्वास सहूलत से चल सकें, वगर्ना तो हमारे सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस राह के तमाम शेह सवारों और क़ाफ़िलों से मुश्किल तरीन राह पर चल सकते थे, मगर इस सूरत में आप की शाने रऊफ़ी व रह़ीमी का इज़्हार कैसे होता !

रब तआ़ला फ़रमाता है :

عَزِيْزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيْصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۲۸﴾ (پ۱۱،التوبہ:۱۲۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *जिन पर तुम्हारा मशक़्क़त में पड़ना गिरां है तुम्हारी भलाई के निहायत चाहने वाले मुसलमानों पर कमाल मेहरबान मेहरबान ।*

तीसरी क़िस्म : तवक्कुल के सिलसिले में एक क़िस्म उन लोगों की है जो आ़लमे अस्बाब से पूरा पूरा फ़ाइदा उठाते हैं, ख़्वाह वोह अस्बाबे ज़रूरिया हों या ग़ैरे ज़रूरिया, मगर उन का एतेमाद और भरोसा मुसब्बिबुल अस्बाब (यानी अल्लाह तआ़ला) ही पर होता है । (روض الریاحین،ص ۴۰۳ ملخصاً)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

तौरात में आप का नाम "मुतवक्किल" है

ह़ज़रते सैयदतुना उम्मे दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا फ़रमाती हैं : मैं ने ह़ज़रते कअ़बुल अह़बार رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ से पूछा : तुम तौरात में रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की कौन सी सिफ़त लिखी पाते हो ? फ़रमाया : हम येह लिखा

पाते हैं : ''مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ، اِسْمُهُ الْمُتَوَكِّلُ'' यानी मुहम्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) **अल्लाह** के रसूल हैं, उन का नाम मुतवक्किल है।

(دلائل النبوة للبيهقى ، جماع ابواب صفة رسول الله ، ١/ ٣٧٦)

(हिकायत : 11)

रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का तवक्कुल

''**सीरते मुस्तफ़ा**'' सफ़हा 604 ता 605 पर है : (एक सफ़र में रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आराम फ़रमा रहे थे कि) गौरस बिन हारिस ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को शहीद करने के इरादे से आप की तल्वार ले कर नियाम से खींच ली, जब हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नींद से बेदार हुवे तो गौरस केहने लगा कि ऐ मुहम्मद ! अब कौन है जो आप को मुझ से बचा लेगा ? आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''**अल्लाह**''। नबुव्वत की हैबत से तल्वार उस के हाथ से गिर पड़ी और हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तल्वार हाथ में ले कर फ़रमाया कि बोल ! अब तुझ को मेरे हाथ से कौन बचाने वाला है ? गौरस गिड़ गिड़ा कर केहने लगा कि आप ही मेरी जान बचा दें, रेहमते आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस को छोड़ दिया और मुआफ़ फ़रमा दिया। चुनान्चे गौरस अपनी क़ौम में आ कर केहने लगा कि ऐ लोगो ! मैं ऐसे शख़्स के पास से आया हूं जो तमाम दुन्या के इन्सानों में सब से बेहतर है।

(الشفا ، جزء ١ ، الباب الثانى فى تكميل محاسنه ، فصل واما الحلم ، ص ١٠٦)

मदनी आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दुआ

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْاَلُكَ التَّوْفِيْقَ لِمَحَابِّكَ مِنَ الْاَعْمَالِ وَصِدْقَ التَّوَكُّلِ عَلَيْكَ وَحُسْنَ الظَّنِّ بِكَ

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** ! मैं तुझ से तेरे पसन्दीदा आमाल की तौफ़ीक़, तुझ पर सच्चे तवक्कुल और तेरे मुतअ़ल्लिक़ अच्छे गुमान का सवाल करता हूं।

(حلية الاولياء، محمد الحارثی، ۲۴۶/۸، حديث : ۱۲۰۵۱)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अस्बाब छोड़ कर ख़ालिक़ुल अस्बाब पर नज़र रखने वालों की 5 हिकायात

अभी पिछले सफ़हात में गुज़रा कि कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो ख़ुद को **अल्लाह** करीम के ह़वाले कर देते हैं, अब वोह अपनी ज़ात के लिए न तो फ़ाइदा ह़ासिल करते हैं न नुक़्सान को दूर करते हैं, अस्बाब तर्क कर के मह़ज़ ख़ालिक़ुल अस्बाब पर भरोसा करने वालों की 5 हिकायात पढ़िए : चुनान्चे,

(**हिकायत : 12**)

ज़मीन पर रिज़्क़ तलाश नहीं करूंगा

ह़ज़रते सैयदना सुफ़्यान बिन सईद सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِی फ़रमाते हैं : एक मरतबा ह़ज़रते सैयदना वासिल बिन ह़य्यान अह़दब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने येह आयत तिलावत फ़रमाई : وَفِي السَّمَآءِ رِزْقُكُمْ وَمَا تُوْعَدُوْنَ ﴿۲۲﴾ (پ ۲۶، الذاريات : ۲۲) (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और आस्मान में तुम्हारा रिज़्क़ है और जो तुम्हें वादा दिया जाता है), और फ़रमाया : मेरा रिज़्क़ तो आस्मान में है और मैं उसे ज़मीन में तलाश कर रहा हूं, **अल्लाह** की क़सम ! मैं उसे ज़मीन में हरगिज़ तलाश नहीं करूंगा, इस के बाद आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه कूफ़ा के एक वीराने में तशरीफ़ ले गए, दो दिन तक तो खाने की कोई चीज़ न आई लेकिन तीसरे दिन ताज़ा खजूरों

www.dawateislami.net

से भरी हुई एक टोकरी आ गई। आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ के एक भाई थे जो आप से ज़्यादा नेक निय्यत थे, (वोह भी आप के साथ रेहने लगे) तो फिर दो टोकरियां आने लगीं, यूंही मुआ़मला चलता रहा यहां तक कि मौत ने उन में जुदाई करा दी। (شعب الایمان، الثالث عشر، ۱۱۴/۲، رقم: ۱۳۳۶)

(ह़िकायत : 13)

घी और शहद ज़बरदस्ती मुंह में डाला

एक बुज़ुर्ग رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ के मुतअ़ल्लिक़ मन्क़ूल है कि वोह किसी जंगल में थे कि शैत़ान उन के पास आ कर वस्वसे डालने लगा कि आप के पास इस वीराने में कुछ भी नहीं और येह जंगल ऐसा है कि जिस में हलाक कर देने वाली अश्या ब कसरत हैं और इस में न तो कहीं आबादी का नामो निशान है और न किसी इन्सान का गुज़र ! बुज़ुर्ग ने उस शैत़ानी वस्वसे को मेह़सूस करते हुवे पुख़्ता इरादा कर लिया कि मैं सामाने सफ़र के बग़ैर ही इस जंगल से गुज़रूंगा और राह में लोगों से कुछ न लूंगा और उस वक़्त तक कोई चीज़ नहीं खाऊंगा जब तक कि मेरे मुंह में घी और शहद न डाला जाए। येह इरादा करने के बाद आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने जंगल के सुनसान ह़िस्से का रुख़ किया और सफ़र त़ै करना शुरूअ़ कर दिया। वोह बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं : जब तक **अल्लाह** पाक ने चाहा मैं चलता रहा, ह़त्ताकि मैं ने एक क़ाफ़िले को देखा जो रास्ता भूल चुका था, मैं ज़मीन पर लेट गया ताकि वोह मुझे न देख सकें, लेकिन **अल्लाह** करीम की शान कि वोह उन्हें चलाते चलाते मेरी त़रफ़ ले आया, ह़त्ताकि वोह मेरे पास आ कर ठेहर गए, मैं ने आंखें बन्द कर लीं, वोह आपस में केहने लगे : लगता है कि इस का ज़ादे सफ़र ख़त्म हो चुका है और येह भूक व प्यास के सबब बेहोश हो चुका है, इस लिए घी और शहद लाओ

कि इस के मुंह में डालें, शायद इसे होश आ जाए। चुनान्चे घी और शह्द लाया गया, मैं ने अपना मुंह मज़्बूती से बन्द कर लिया तो उन्हों ने मेरा मुंह ज़बरदस्ती खोला और उस में घी और शह्द डाल दिया, मेरी हंसी निकल गई और मैं ने आंखें खोल दीं। मेरी येह ह़रकत देख कर वोह लोग केहने लगे : तुम तो कोई पागल मालूम होते हो ! मैं ने कहा : اَلۡحَمۡدُلِلّٰہ मैं पागल नहीं हूं, फिर मैं ने उन्हें अपना तमाम वाक़िआ़ सुनाया तो वोह भी ह़ैरान हुवे।

(منهاج العابدين، الباب الرابع، ص١٢٥)

(ह़िकायत : 14)

ह़ल्वे के सिवा कुछ नहीं खाऊंगा

एक बुज़ुर्ग رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं कि मैं ने ज़मानए त़ालिबे इल्मी के दौरान अपने किसी सफ़र में आबादी से दूर एक मस्जिद में क़ियाम किया, मेरे पास ज़ादे राह नहीं था, शैत़ान मुझे वस्वसे डालने लगा कि येह मस्जिद लोगों से दूर है, इस मस्जिद में क़ियाम के बजाए अगर तुम किसी ऐसी मस्जिद में क़ियाम करो जो आबादी में वाक़ेअ़ हो तो लोग तुम्हें देख कर तुम्हारी ज़रूरियात का बन्दोबस्त कर देंगे। मैं ने उस के जवाब में कहा कि मैं यहीं रात गुज़ारूंगा और **अल्लाह** की क़सम ! ह़ल्वे के सिवा कुछ नहीं खाऊंगा और ह़ल्वा भी उस वक़्त खाऊंगा जब एक एक लुक़्मा कर के मेरे मुंह में डाला जाएगा। मैं ने इ़शा की नमाज़ के बाद मस्जिद का दरवाज़ा बन्द कर दिया। जब रात का इब्तिदाई हिस्सा गुज़र गया तो अचानक किसी शख़्स ने जिस के हाथ में शम्अ़ थी दरवाज़ा बजाया, जब वोह बार बार खटखटाने लगा तो मैं ने दरवाज़ा खोल दिया, एक बुढ़िया एक नौजवान के साथ खड़ी थी, उस बुढ़िया ने खजूर और घी से बने ह़ल्वे का एक थाल मेरे सामने रख दिया और केहने लगी : येह नौजवान मेरा बेटा

है, मैं ने ह़ल्वा इस के लिए तैयार किया था, दौराने गुफ़्तगू इस ने क़सम खा ली कि मैं येह ह़ल्वा अकेला नहीं खाऊंगा बल्कि किसी मुसाफ़िर के साथ खाऊंगा या उस मुसाफ़िर के साथ जो इस मस्जिद में है, इस लिए तुम इसे खाओ ! अल्लाह पाक तुम पर रह़म करे, वोह बुढ़िया एक लुक़्मा मुझे और एक अपने बेटे को खिलाने लगी, यूं मैं ने और उस नौजवान ने ह़ल्वा खाया। फिर वोह नौजवान और बुढ़िया वापस चले गए, मैं ने मस्जिद का दरवाज़ा बन्द कर लिया और इस वाक़िए पर बहुत ह़ैरान हुवा। (منہاج العابدین، الباب الرابع، ص۱۲۵)

(ह़िकायत : 15)

मछली अपनी जगह पर थी

ह़ज़रते सैयदना शैख़ अबू अ़ब्दुल्लाह जिला رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की वालिदए माजिदा ने एक रोज़ अपने शौहर से मछली (Fish) लाने का कहा। शैख़ के वालिद बाज़ार गए और अपने फ़रज़न्द (अबू अ़ब्दुल्लाह जिला) को भी हमराह ले गए। बाज़ार से मछली खरीदी और एक मज़दूर तलाश करने लगे ताकि वोह मछली घर तक पहुंचा दे। एक लड़का मिला और उस ने मछली सर पर उठा ली और साथ चला, रास्ते में मोअज़्ज़िन की अज़ान सुनाई दी। उस मज़दूर लड़के ने कहा : नमाज़ के लिए मुझे त़हारत की ह़ाजत है और अज़ान हो रही है, अगर आप राज़ी हों तो मेरा इन्तिज़ार कर लें वरना अपनी मछली ले जाएं। येह केह कर उस ने मछली वहीं छोड़ी और मस्जिद चला गया। शैख़ के वालिद ने कहा : इस लड़के का अल्लाह तआ़ला पर कितना तवक्कुल है ! हमें तो ज़्यादा तवक्कुल करना चाहिए। चुनान्चे मछली वहीं छोड़ कर हम लोग भी नमाज़ पढ़ने चले गए। जब नमाज़ पढ़ कर निकले तो मछली अपनी जगह थी जो उस लड़के ने उठा ली और हम लोग घर पहुंचे। (روض الریاحین، التاسعة والعشرون بعد المئتین،ص۲۱۰،ملتقطا)

(हिकायत : 16)

दरिन्दे ने जान बचाई

हज़रते सैयदना अबू हम्ज़ा ख़ुरासानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं : मैं ने एक साल हज किया, दौराने सफ़र चलते हुवे बे ख़याली में एक कुंवें (Well) में गिर गया, मेरा नफ़्स किसी से मदद मांगने के लिए मुझ से झगड़ने लगा मगर मैं ने क़सम खाई कि मैं किसी से मदद नहीं लूंगा। मैं अभी इसी ख़याल में था कि कुंवें के पास से दो आदमी गुज़रे, उन में से एक ने दूसरे से कहा : आओ हम इस कुंवें का मुंह बन्द कर दें कहीं इस में कोई गिर न जाए ! चुनान्चे वोह दोनों बांस और चटाई ले कर आए और कुंवें का मुंह बन्द कर दिया। उस वक़्त मेरा जी चाहा कि चीख़ कर आवाज़ दूं मगर मैं ने दिल में सोचा कि किस के सामने चिल्लाऊं ! **अल्लाह** पाक तो इन दोनों से ज़्यादा क़रीब है, इस ख़याल के आते ही दिल पुर सुकून हो गया। थोड़ी देर बाद कोई चीज़ आई और कुंवें का मुंह खोल कर अपना पाउं लटका दिया और अ़जीब सी आवाज़ निकालने लगी, मैं समझ गया कि वोह टांग पकड़ने का केह रही है, मैं उस की टांग से चिमट गया और उस ने मुझे बाहर निकाल लिया। अब मैं ने देखा कि एक ख़ौफ़नाक जानवर था। उस के जाने के बाद मुझे ग़ैबी आवाज़ आई : अबू हम्ज़ा ! क्या येह ज़्यादा बेहतर नहीं है कि हम ने तुझे हलाक करने वाली चीज़ के ज़रीए़ हलाकत से बचा लिया ! (احیاء علوم الدین، کتاب التوحید والتوکُّل، ۳۳۶/٤)

नफ़्अ़ व नुक़्सान तक़्दीर के लिखे से ही होता है

हज़रते सैयदना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا फ़रमाते हैं : एक दिन मैं रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ सवारी पर था कि आप ने फ़रमाया :

ऐ लड़के ! मैं तुम्हें चन्द बातों की तालीम देता हूं, हुक़ूक़ुल्लाह की हिफ़ाज़त किया करो ! अल्लाह पाक तुम्हारी हिफ़ाज़त फ़रमाएगा और तुम उसे अपने सामने पाओगे, जब सवाल करो तो अल्लाह पाक से करो ! जब मदद मांगो तो अल्लाह पाक से मांगो ! और यक़ीन रखो कि अगर पूरी उम्मत इस पर मुत्तफ़िक़ हो जाए कि तुम को नफ़्अ़ पहुंचाए तो वोह तुम्हें कुछ नफ़्अ़ नहीं पहुंचा सकती मगर उस चीज़ का जो अल्लाह करीम ने तुम्हारे लिए लिख दी है, और अगर वोह इस पर मुत्तफ़िक़ हो जाएं कि तुम्हें कुछ नुक़्सान पहुंचाएं तो हरगिज़ नुक़्सान नहीं पहुंचा सकते मगर उस चीज़ का जो अल्लाह पाक ने लिख दी है, क़लम उठ चुके हैं और दफ़्तर ख़ुश्क हो चुके हैं ।

(ترمذی، کتاب صفة القیامة، باب (ت: ١٢٤)، ٤/٢٣١، حدیث: ٢٥٢٤)

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस हदीस के तहत फ़रमाते हैं : तुम दुन्या में अपने हर काम हर चीज़ में अहकामे इलाहिय्या का लेहाज़ रखो, जाइज़ काम करो (और) नाजाइज़ से बचो, अल्लाह की रिज़ा के काम करो (और) नाराज़ी के कामों से बचो तो अल्लाह तआ़ला तुम को दीनी व दुन्यावी आफ़तों से बचाएगा, हर मुसीबत में रब तआ़ला की रेहमत तुम्हारे दिल पर वारिद होगी जिस के असर से तुम्हारे दिल पर ग़म त़ारी न होगा । मुफ़्ती साहिब मज़ीद फ़रमाते हैं : हर छोटी बड़ी चीज़ आला अदना मदद अल्लाह तआ़ला से मांगो ! येह न ख़याल करो कि इतने बड़े दरबार में ऐसी अदना चीज़ क्यूं मांगूं ? दूसरे करीम मांगने से नाराज़ होते हैं अल्लाह तआ़ला न मांगने से नाराज़ होता है, ख़याल रहे कि मजाज़ी तौर पर बादशाह, हाकिम, औलियाउल्लाह, हज़रते मुहम्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से कुछ मांगना ख़ुदा तआ़ला से ही मांगना है कि येह हज़रात अल्लाह तआ़ला के ख़ुद्दाम अल्लाह के हुक्म से अल्लाह

की नेमत देते हैं, उन से मांगना बिल वास्त़ा रब से ही मांगना है, लेहाज़ा येह ह़दीस उन क़ुरआनी आयात और अह़ादीस के ख़िलाफ़ नहीं जिन में बन्दों से मांगने का ज़िक्र या हुक्म है। मुफ़्ती साह़िब मज़ीद फ़रमाते हैं : सारी दुन्या मिल कर तुम को नफ़्अ़ नहीं पहुंचा सकती अगर कुछ पहुंचाएगी तो वोही जो तुम्हारे मुक़द्दर में लिखा है, इस से मालूम हुवा कि **अल्लाह** तआ़ला का लिखा हुवा नफ़्अ़ दुन्या पहुंचा सकती है, त़बीब की दवा शिफ़ा दे सकती है, सांप का ज़ह्र जान ले सकता है, ह़ज़रते यूसुफ़ (عَلَيْهِ السَّلَام) की क़मीस ने दीदए याक़ूबी (यानी ह़ज़रते याक़ूब عَلَيْهِ السَّلَام की मुबारक आंखों) को शिफ़ा बख़्शी, ह़ज़रते ईसा (عَلَيْهِ السَّلَام) मुर्दे ज़िन्दा, बीमार अच्छे करते थे मगर **अल्लाह** के इज़्न (यानी इजाज़त) से। (मिरआतुल मनाजीह़, 7/117)

बे ख़ौफ़ मुसाफ़िर

ह़ज़रते सैयदना अबू मुत़ीअ़ عليه رَحمَةُ الله السَّميع ने ह़ज़रते सैयदना ह़ातिम असम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से पूछा : मैं ने सुना है कि आप निहायत ख़ौफ़नाक जंगलों में बग़ैर ख़र्च के सिर्फ़ ख़ुदा पर तवक्कुल के सहारे सफ़र करते रेहते हैं ! ह़ज़रते ह़ातिम असम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : मेरा ज़ादे सफ़र चार चीज़ें हैं, ह़ज़रते अबू मुत़ीअ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने पूछा : वोह कौन सी ? तो ह़ज़रते ह़ातिम असम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने जवाब दिया : मुझे यक़ीन है कि (1) दुन्या ओ आख़ेरत ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की मिल्क हैं (2) तमाम मख़्लूक़ ख़ुदा की इत़ाअ़त और परवरिश में है (3) रिज़्क़ और रिज़्क़ के तमाम अस्बाब ख़ुदा तआ़ला के इख़्तियार में हैं (4) **अल्लाह** पाक की क़ज़ा तमाम दुन्या में नाफ़िज़ है।

(मिन्हाजुल आ़बेदीन, स. 105)

तवक्कुल बदफ़ाली का तोड़ भी है

रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

''اَلطِّيَرَةُ شِرْكٌ، اَلطِّيَرَةُ شِرْكٌ ثَلَاثًا، وَمَا مِنَّا إِلَّا وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يُذْهِبُهُ بِالتَّوَكُّلِ''

यानी बदफ़ाली लेना शिर्क है, बदफ़ाली लेना शिर्क है, बदफ़ाली लेना शिर्क है, हम में से हर एक के दिल में इस का ख़याल आता है मगर अल्लाह पाक तवक्कुल की बरकत से इसे दूर फ़रमा देता है।

(ابو داود، کتاب الطب، باب فی الطیرة، ٤/٢٣، حدیث : ٣٩١٠)

मुफ़स्सिरे शहीर, हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस हदीस के तहत फ़रमाते हैं : (शिर्क से मुराद) शिर्के अमली है, (यानी) मुश्रिकों का सा काम, माना येह हैं कि हम मुसलमानों (में) से जो कोई बदफ़ालियां लेता है तो वोह ख़तरात व शुब्हात में पड़ जाता है, लेकिन अल्लाह तआला उस शुबे व ख़तरे को तवक्कुल के ज़रीए ख़त्म फ़रमा देता है कि जो कोई तवक्कुल इख़्तियार करे वोह इन शुब्हात में नहीं पड़ता।

(मिरआतुल मनाजीह, 6/260)

(हिकायत : 17)

ख़ाना कब से ख़राब होना शुरूअ़ हुवा ?

मन्न व सल्वा के बारे में हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام (के ज़रीए बनी इसराईल) को हुक्म था कि तुम लोग इस को रोज़ाना खा लिया करो, कल के लिए हरगिज़ हरगिज़ बचा कर न रखना। मगर कमज़ोर यक़ीन वाले लोगों को येह ख़ौफ़ लाहिक़ हुवा कि अगर किसी दिन मन्न व सल्वा न उतरा तो हम इस आबो गियाह चटयल मैदान में भूके मर जाएंगे। चुनान्चे उन लोगों ने कुछ छुपा कर कल के

www.dawateislami.net

लिए रख लिया तो नबी (عَلَيْهِ السَّلَام) की ना फ़रमानी से ऐसी नुहूसत फैल गई कि जो कुछ कल के लिए जम्अ़ किया था वोह सब सड़ गया और आइन्दा के लिए इस का उतरना बन्द हो गया। (روح البیان، ١/١٤٢) इसी लिए अल्लाह पाक के प्यारे मेहबूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : बनी इसराईल न होते तो न खाना कभी ख़राब होता और न गोश्त सड़ता। (مسلم، ص٧٧٥، حدیث١٤٧٠) मालूम हुवा ! खाने का ख़राब होना और गोश्त का सड़ना (यानी ख़राब होना) इसी तारीख़ से शुरूअ़ हुवा, वरना इस से पेहले न खाना बिगड़ता था न गोश्त सड़ता था। (फ़ैज़ाने सुन्नत, 1/391)

(हिकायत : 18)

तवक्कुल को बहुत उ़म्दा पाया

हज़रते सैयदना मुग़ीरा बिन अ़ब्दुर्रहमान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن से रिवायत है कि हज़रते सैयदना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه हज़रते सैयदना अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मिले और फ़रमाया : "अगर तुम मुझ से पेहले इन्तेक़ाल कर जाओ तो पेश आने वाले हालात से मुझे आगाह करना और अगर मैं तुम से पेहले फ़ौत हो गया तो मैं तुम्हें ख़बर दूंगा।" फिर हज़रते सैयदना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का इन्तेक़ाल पेहले हो गया तो हज़रते सैयदना अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने उन्हें ख़्वाब में देख कर पूछा : ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह ! कैसे हैं ? जवाब दिया : ख़ैरियत से हूं। फिर पूछा : आप ने कौन सा अ़मल अफ़्ज़ल पाया ? हज़रते सैयदना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : मैं ने तवक्कुल को बहुत उ़म्दा पाया। (حلیة الاولیاء، سلمان الفارسی، ١/٢٦٤، رقم: ٦٥٥)

(हिकायत : 19)

कब माल जम्अ करना नुक़्सान देह नहीं ?

ह़ज़रते सैयदना मुह़म्मद बिन सल्त رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का बयान है : एक मरतबा मैं ह़ज़रते सैयदना बिशर बिन ह़ारिस ह़ाफ़ी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ख़िदमते बा बरकत में ह़ाज़िर था । इतने में एक शख़्स ने आ कर सलाम किया । आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه उसे देख कर खड़े हो गए । आप को देख कर मैं भी खड़ा होने लगा तो आप ने मन्अ फ़रमा दिया । जब वोह शख़्स बैठ गया तो आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने मुझे एक दिरहम देते हुवे कहा : जाओ ! रोटी, मख्खन और खजूरें ख़रीद लाओ । मैं ने मत़लूबा चीज़ें आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की बारगाह में ह़ाज़िर कर दीं । आप ने आने वाले के सामने रखीं, उस ने कुछ खाईं और बाक़ी चीज़ें जाते हुवे साथ ले गया । ह़ज़रते सैयदना बिशर बिन ह़ारिस ह़ाफ़ी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने मुझ से फ़रमाया : ऐ बेटे ! क्या तुम जानते हो कि मैं ने तुम्हें खड़ा होने से क्यूं मन्अ किया ? मैं ने कहा : नहीं । फ़रमाया : तुम्हारे और उस शख़्स के दरमियान कोई जान पेहचान नहीं थी मैं ने चाहा कि तुम्हारा खड़ा होना सिर्फ़ रिज़ाए इलाही के लिए होना चाहिए, तुम चूंकि मुझे देख कर खड़े हो रहे थे इस लिए मैं ने तुम्हें मन्अ कर दिया । फिर पूछा : तुम्हें मालूम है कि मैं ने तुम्हें दिरहम देते हुवे येह क्यूं कहा कि फ़ुलां फ़ुलां चीज़ ले आओ । मैं ने कहा : नहीं । फ़रमाया : बेशक अच्छा खाना **अल्लाह** पाक का शुक्र अदा करने का सबब है । फिर कहा : अच्छा येह बताओ कि वोह शख़्स बक़िया खाना अपने साथ क्यूं ले गया ? मैं ने कहा : हुज़ूर ! मुझे नहीं मालूम । फ़रमाया : इन लोगों के नज़दीक जब तवक्कुल दुरुस्त हो जाए तो फिर किसी चीज़ को अपने पास जम्अ करना कोई ज़रर नहीं देता । फिर फ़रमाने लगे : जानते हो वोह आने वाला कौन था ? वोह ह़ज़रते सैयदना फ़त्ह़ मौसिली رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه थे जो हम से मुलाक़ात के लिए आए थे ।

(عيون الحكايات، الثامنة والتسعون بعد الثلاثمائة، ص ٣٤٢)

जब तक सांस बाक़ी है रिज़्क़ ज़रूर मिलेगा

हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हज़रते सैयदना हब्बह और हज़रते सैयदना सवा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से इरशाद फ़रमाया : जब तक तुम्हारे जिस्म हरकत कर रहे हैं रिज़्क़ मिलने से मायूस न होना क्यूंकि इन्सान बग़ैर लिबास के सुर्ख़ पैदा होता है, फिर **अल्लाह** पाक उसे रिज़्क़ अ़ता फ़रमाता है। (ابن ماجه، كتاب الزهد، باب التوكُّل واليقين، ٤/٤٥٢، حديث : ٤١٦٥)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हर जानदार अपनी रोज़ी साथ नहीं रखता

अल्लाह पाक फ़रमाता है :

وَ كَاَيِّنْ مِّنْ دَآبَّةٍ لَّا تَحْمِلُ رِزْقَهَا ۖ اَللّٰهُ يَرْزُقُهَا وَ اِيَّاكُمْ ۖ وَ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝۶۰ (پ۲۱، العنكبوت:۶۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और ज़मीन पर कितने ही चलने वाले हैं कि अपनी रोज़ी साथ नहीं रखते,* ***अल्लाह*** *रोज़ी देता है उन्हें और तुम्हें, और वोही सुनता जानता है।*

हज़रते सैयदना इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه इस आयत के तह़्त लिखते हैं : रोज़ी साथ न रखने की वज्ह येह होती है कि वोह इस की ताक़त नहीं रखते, जैसे : जूं (वोह कीड़ा जो बालों या कपड़ों में गन्दगी के बाइस पैदा हो जाता है), पिस्सू (बग़ैर पर का ख़ून चूसने वाला ज़ेहरीला कीड़ा), और दीगर कीड़े वग़ैरा। और रोज़ी साथ न रखने का एक मत़लब येह भी बयान किया जाता है कि वोह ज़ख़ीरा नहीं करते।

(التفسير الكبير، سورة العنكبوت، ٩/٧٢، تحت الآية : ٦٠)

(हिकायत : 20)

नाबीना परिन्दे का तवक्कुल

हज़रते सैयदना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि एक मरतबा मैं रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ बाहर निकला तो हम ने एक नाबीना परिन्दे (Blind bird) को देखा जो अपनी चोंच एक दरख़्त पर मार रहा था। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तुम जानते हो येह क्या केह रहा है ? मैं ने अ़र्ज़ की : **अल्लाह** पाक और उस का रसूल बेहतर जानते हैं, इरशाद फ़रमाया कि येह केह रहा है : ऐ **अल्लाह** ! तू अ़द्ल फ़रमाने वाला है और तू ने ही मेरी आंखों की रौशनी को दूर फ़रमाया है, मुझे भूक लगी है। इतने में एक टिड्डी आई और उस के मुंह में दाख़िल हो गई। इस के बाद वोह परिन्दा दोबारा अपनी चोंच दरख़्त पर मारने लगा। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जानते हो येह क्या केह रहा है ? मैं ने अ़र्ज़ की : नहीं। इरशाद फ़रमाया : येह केह रहा है : ''مَنْ تَوَکَّلَ عَلَى اللّٰهِ كَفَاهُ'' यानी जो **अल्लाह** पर तवक्कुल करता है **अल्लाह** उसे काफ़ी होता है।

(الحاوی للفتاوی ، آخر العجاجۃ الزرنبیۃ ...الخ ، ۴۳/۲)

कव्वे का बच्चा कैसे पलता है ?

हज़रते अ़ल्लामा मुहम्मद बिन मूसा कमालुद्दीन दमीरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ लिखते हैं : कव्वे की मादा (यानी मुअन्नस) चार या पांच अन्डे देती है और जब अन्डों से बच्चे निकल आते हैं तो वोह उन बच्चों को तन्हा छोड़ देती है, इस लिए कि बच्चे जब अन्डों से निकलते हैं तो बहुत बद सूरत होते हैं उन का जिस्म

छोटा, सर और चोंच बहुत लम्बी होती है जिस्म के हिस्से एक दूसरे से अलग थलग और बे जोड़ होते हैं, बच्चों के वालिदैन उन की बद सूरती की वज्ह से उन को छोड़ देते हैं लेकिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन के घोंसलों में मच्छर, मख्खी और दीगर कीड़ों को उन का रिज़्क़ बना देता है, कव्वे के बच्चे उन को खा कर ज़िन्दा रेहते हैं। जब उन बच्चों में कुव्वत आ जाती है और उन के बाल व पर वग़ैरा उग जाते हैं तो उन के मां बाप वापस उन के पास आ जाते हैं, मादा (यानी कव्वों की मां) उन को अपने परों में छुपा लेती है और बाप उन के लिए ख़ूराक का बन्दोबस्त करता है। (حياة الحيوان الكبرى، ٢٣٧/٢)

तुम से बड़े पेट वालों को भी रिज़्क़ मिलता है

हज़रते सैयदना ईसा रूहुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का फ़रमान है : अल्लाह पाक के लिए अ़मल करो ! अपने पेट के लिए नहीं और ज़रूरत से ज़ाइद दुन्या के हुसूल से बचो क्यूंकि वोह अल्लाह पाक के नज़्दीक एक गन्दगी की त़रह़ है। आस्मान के परिन्दों को देखो ! उन की सुब्ह़ो शाम इस ह़ाल में होती है कि उन के पास कोई रिज़्क़ नहीं होता, न ही वोह खेतीबाड़ी करते हैं लेकिन अल्लाह करीम उन्हें रिज़्क अ़त़ा फ़रमाता है, अगर तुम इन्कार करते हुवे येह कहो कि हमारा पेट परिन्दों के पेट से बड़ा होता है तो उन गधों और बेलों को देख लो ! उन की सुब्ह़ो शाम भी इसी ह़ाल में होती है कि उन के पास कोई रिज़्क़ नहीं होता, न ही येह खेतीबाड़ी करते हैं लेकिन अल्लाह पाक उन्हें भी रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमाता है।

(موسوعة الامام ابن ابى الدنيا، القناعة والتعفف، ٢٩١/٢، رقم: ١٧٣)

रब्बे करीम हर हा़लत में रिज़्क़ अ़ता फ़रमाता है

हज़रते सैयदना वहब बिन मुनब्बेह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : क्या आदमी नहीं जानता कि उस का रिज़्क़ उ़म्र के उन तीन मराहि़ल (Stages) में भी मिलता है जिन में उसे न तो कोई मेह़नत करना होती है न कोई कोशिश, फिर अ़न क़रीब उसे उ़म्र के चौथे मरह़ले में भी रिज़्क़ दिया जाएगा :

पेहला मरह़ला मां का पेट है जिस में उस की तख़्लीक़ की जाती है और बग़ैर मालो मेह़नत के उसे पुर सुकून जगह में रिज़्क़ दिया जाता है, जिस में सर्दी गर्मी तक्लीफ़ नहीं देती और न ही कोई ऐसी चीज़ होती है जिस की वोह फ़िक्र करे, फिर **अल्लाह** पाक ने इरादा फ़रमाया कि उसे **दूसरे मरह़ले** में मुन्तक़िल करे और इस मरह़ले में भी उसे मां के (दूध के) ज़रीए़ रिज़्क़ अ़ता फ़रमाए जो उसे काफ़ी हो और बग़ैर त़ाक़त व क़ुव्वत के उसे बे परवा रखे, फिर **अल्लाह** पाक ने इरादा फ़रमाया कि उसे उस दूध से रोके और **तीसरे मरह़ले** में मुन्तक़िल कर दे जिस में उसे वालिदैन के ज़रीए़ रिज़्क़ अ़ता फ़रमाए और उन के दिलों में उस की मह़ब्बत डाल दे यहां तक कि दोनों ने अपनी मेह़नत के साथ उसे अपने ऊपर तरजीह़ दी और उस के लिए भी वोही चीज़ ज़रूरी समझी जो उन दोनों के लिए नफ़्अ़ बख़्श थी, जबकि वोह ख़ुद न तो कोई काम कर के और न ही कोई तदबीर इख़्तियार कर के उन दोनों को नफ़्अ़ पहुंचा पाता है, यहां तक कि वोह समझदार हो जाता है और अपने लिए काम काज का कोई ज़रीआ़ चुन लेता है, बेशक ! इस **चौथे मरह़ले** में भी उसे हरगिज़ कोई फ़ाइदा नहीं पहुंचा सकता सिवाए उस ज़ात के जिस ने उसे

www.dawateislami.net

पिछले तीनों ज़मानों में रिज़्क़ अ़ता किया और बे नियाज़ रखा, अब आदमी के पास न कोई उ़ज़्र है और न ही रेह़मते ख़ालिक़ के सिवा कोई चारा, बेशक ! आदमी शक्की मिज़ाज है और इसी वज्ह से आदमी की अ़क्ल व बुर्दबारी मारिफ़ते इलाही से आ़जिज़ रेहती है और वोह इस मुआ़मले में ग़ौरो फ़िक्र नहीं करता, अगर ग़ौरो फ़िक्र करता तो समझ जाता, अगर समझ जाता तो ख़ूब जान लेता कि रब तआ़ला की तख़्लीक़ को पेहचानने वाली निशानी उस की मख़्लूक़ और वोह रिज़्क़ है जो उस ने अपनी मख़्लूक़ के लिए पैदा फ़रमाया है। (حلية الاولياء، وهب بن منبه، ٤/٢٨، رقم: ٤٦٤٩)

(ह़िकायत : 21)

आप खाते कहां से हैं ?

ह़ज़रते सैयदना मारूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने एक इमाम के पीछे नमाज़ अदा की। नमाज़ से फ़राग़त के बाद इमाम साह़िब ने पूछा : आप खाते कहां से हैं ? ह़ज़रते सैयदना मारूफ़ कर्ख़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی ने इरशाद फ़रमाया : ज़रा ठेहरिए ! मैं ने आप के पीछे जो नमाज़ पढ़ी है पेहले उसे दोहरा लूं। इमाम साह़िब ने पूछा : वोह क्यूं ? इरशाद फ़रमाया : इस लिए कि जो अपने रिज़्क़ में शक करता है वोह अपने राज़िक़ के बारे में भी शक करता है। (المستطرف، ١/١٢٤)

रिज़्क़ की कुशादगी व तंगदस्ती

क़ुरआने करीम के पन्दरहवें पारे में सूरए बनी इसराईल की आयत 30 में इरशादे रब्बे अ़ज़ीम है :

www.dawateislami.net

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ؕ إِنَّهٗ كَانَ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرًۢا بَصِيْرًا ﴿۳۰﴾ (پ۱۵، بنی اسرائیل:۳۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक तुम्हारा रब जिसे चाहे रिज़्क़ कुशादा देता और कस्ता है बेशक वोह अपने बन्दों को ख़ूब जानता, देखता है ।*

इस आयत के तह़्त तफ़्सीरे रूहुल बयान में है : रिज़्क़ कुशादा या थोड़ा कर देना **अल्लाह** पाक की क़ुदरत में है, वोही जिस का रिज़्क़ बढ़ाना चाहे बढ़ा देता है और जिस का कम करना चाहे कम कर देता है, वोह तमाम लोगों के ह़ालात और मस्लेह़तों को ख़ूब जानता है, लेहाज़ा उस ने जिसे अमीर बनाया वोह भी ह़िक्मत के मुत़ाबिक़ है और जिसे ग़रीब रखा वोह भी ह़िक्मत के मुत़ाबिक़ है । (روح البیان، الاسراء، تحت الآیۃ: ۳۰، ۵/۱۵۲، ملخصاً)

लोगों को अमीर और ग़रीब बनाए जाने की ह़िक्मतें

तफ़्सीरे सिरातुल जिनान जिल्द 5, सफ़ह़ा 452 पर है : **अल्लाह** तआ़ला ने तमाम इन्सानों को माली एतेबार से एक जैसा नहीं बनाया बल्कि बाज़ को अमीर (Rich) बनाया और बाज़ को ग़रीब (Poor) रखा और इस में उस की बेशुमार ह़िक्मतें पोशीदा हैं, जैसे एक ह़िक्मत येह है कि बाज़ लोगों के ईमान की भलाई इसी में होती है कि **अल्लाह** तआ़ला उन्हें माल अ़त़ा करे और अगर वोह ग़रीब हों तो उन का ईमान तबाह हो जाएगा इस लिए **अल्लाह** तआ़ला उन्हें कसीर माल अ़त़ा करता है और बाज़ लोगों के ईमान की भलाई इसी में होती है कि उन के पास माल कम हो और अगर उन के पास ज़्यादा माल आ जाए तो उन का ईमान ज़ाएअ़ होने का ख़त़रा होता है, इस लिए **अल्लाह** तआ़ला उन्हें ग़रीब रखता है । इसी त़रह़ बाज़ को अमीर और बाज़ को ग़रीब बनाने की एक ह़िक्मत येह (भी) है कि इस से दुन्यवी मुआ़मलात

का इन्तेज़ाम अच्छे त़रीक़े से चल रहा है और हर इन्सान की ज़रूरियाते ज़िन्दगी की तकमील हो रही है कि अगर तमाम इन्सानों को अमीर कर दिया जाए तो इस से दुन्यवी मुआ़मलात का निज़ाम तबाह हो जाएगा क्यूंकि इस सूरत में कोई किसी का नौकर, ख़ादिम या मुलाज़िम बनने को तैयार न होगा, यूंही कोई गलियों बाज़ारों, कचरा कुंडी और बाथरूमों की सफ़ाई करने पर राज़ी न होगा, ऐसे ही कोई ऐसा पेशा इख़्तियार करने पर रिज़ामन्द न होगा जिसे अमीर लोग पसन्द नहीं करते जैसे जूतों की सिलाई, सफ़ाई का काम, ह़जामत बनाने और कपड़ों की सिलाई का काम वग़ैरा, यूं शेहरी और मुल्की निज़ाम का जो ह़ाल होगा वोह हर अ़क़्लमन्द आसानी से समझ सकता है इस लिए हर एक को चाहिए कि वोह अल्लाह तआ़ला के हुक्म के सामने सरे तस्लीम ख़म कर दे और उस की क़ज़ा पर राज़ी रहे और अगर उस के रिज़्क़ में तंगी हो तो सब्र करे और रिज़्क़ में वुस्अ़त हो तो अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करे। (सिरातुल जिनान)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मेरा रिज़्क़ कहां है ?

ह़ज़रते सैयदना मकहूल رَحْمَۃُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि बच्चा जब मां के पेट में होता है, न कोई चीज़ त़लब करता है, न परेशान व ग़मगीन होता है, उस का रिज़्क़ मां के पेट में उस के मख़्सूस ख़ून से आता है, जब बच्चा (बादे पैदाइश) ज़मीन पर पहुंचता है तो चीख़ता है और उस का चीख़ना नई जगह की वज्ह से होता है, जब उस की नाफ़ काटी जाती है तो अल्लाह पाक उस का रिज़्क़ मां के दूध में मुन्तक़िल कर देता है यहां तक कि वोह उस वक़्त भी न कोई ख़्वाहिश करता है और न ग़मगीन व परेशान होता है फिर बच्चा थोड़ा बड़ा हो जाता है तो हाथ में किसी चीज़ को पकड़ कर खाता है और जब बालिग़ होता है

www.dawateislami.net

तो केहता है : मेरे लिए रिज़्क़ कहां है ? (ह़ज़रते मकहूल رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं :) हाए अफ़्सोस तुझ पर ! उस (रब्बे करीम) ने तुझे तेरी मां के पेट और बचपन में ग़िज़ा दी ह़त्ताकि तू समझदार और त़ाक़तवर हो गया, अब तू पूछता है : मेरा रिज़्क़ कहां है ? फिर आप رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْه ने येह आयत तिलावत की :

اَللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تَحْمِلُ كُلُّ اُنْثٰى وَمَا تَغِيْضُ الْاَرْحَامُ وَمَا تَزْدَادُ ؕ وَكُلُّ شَیْءٍ عِنْدَهٗ بِمِقْدَارٍ ⑧ (پ۱۳، الرعد:۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह जानता है जो कुछ किसी मादा के पेट में है और पेट जो कुछ घटते और बढ़ते हैं और हर चीज़ उस के पास एक अन्दाज़े से है ।

(الدر المنثور، ٤/٦١٠)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(ह़िकायत : 22)

घर से बाहर निकाल दो

तीसरी सदी हिजरी के अ़ज़ीम बुज़ुर्ग ह़ज़रते सैयदना शैख़ अबू बक्र शिब्ली رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْه की ख़िदमत में एक शख़्स ने बाल बच्चों की कसरत की शिकायत की, जवाबन फ़रमाया : घर जाओ ! और उन में से जिस का रिज़्क़ अल्लाह पाक के ज़िम्मए करम पर न हो उसे घर से बाहर निकाल दो ।

(بريقة محموديه، العاشر من اٰفات القلب، ٢/١٤٧)

(ह़िकायत : 23)

औलाद को तवक्कुल किस त़रह़ सिखाया

मरवी है कि ह़ज़रते अह़मद बिन ह़र्ब رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْه ने अपने कम उ़म्र साह़िबज़ादे को तवक्कुल की तालीम देना चाही, तो एक दीवार में सुराख़ कर के

फ़रमाया : बेटा ! जब खाने का वक़्त हो, इस सुराख़ के पास आ कर तृलब कर लिया करना, अल्लाह पाक अ़ता फ़रमा दिया करेगा । दूसरी त़रफ़ अपनी ज़ौजा को इरशाद फ़रमा दिया कि जब मुक़र्रा वक़्त हो, तुम चुपके से दूसरी जानिब खाना रख दिया करना । ह़स्बे नसीह़त बच्चा सुराख़ के पास आ कर खाना तृलब करता, वालिदा दूसरी जानिब से रख दिया करतीं । तृलब के थोड़ी देर बाद बच्चा सुराख़ में हाथ डालता तो खाना मौजूद पा कर, उसे अल्लाह पाक की त़रफ़ से तसव्वुर करता । एक दिन उन की वालिदा खाना रखना भूल गईं ह़त्ताकि खाने का वक़्त निकल गया । जब उन्हें ख़याल आया तो जल्दी से बच्चे के पास पहुंचीं, देखा कि उस के सामने निहायत नफ़ीस खाना रखा हुवा है और वोह बहुत रग़बत से उसे खा रहा है । वालिदा ने हैरानी से पूछा : बेटा ! येह खाना कहां से आया ? अ़र्ज़ की : जहां से रोज़ाना अल्लाह करीम अ़ता फ़रमाता है । वालिदा ने येह सारा वाक़िआ़ ह़ज़रत की ख़िदमत में अ़र्ज़ किया, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने ख़ुश हो कर इरशाद फ़रमाया : “अब तुम्हें खाना रखने की ज़रूरत नहीं, अल्लाह पाक बिला वास्त़ा ही पहुंचाता रहेगा ।” (تذکرۃ الاولیاء، احمد حرب، ۱/۲۱۹)

(ह़िकायत : 24)

अपने रब्बे करीम पर तवक्कुल करूंगा

ह़ज़रते सैयदना कअ़ब कुरज़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه को बहुत सा माल मिला तो उन से कहा गया : अच्छा होता अगर आप अपने बाद अपनी औलाद के लिए जम्अ़ रखते । उन्हों ने फ़रमाया : नहीं ! बल्कि मैं इसे अपने लिए अपने रब عَزَّوَجَلَّ के पास जम्अ़ करूंगा और अपनी औलाद के मुआ़मले में अपने रब्बे करीम पर तवक्कुल करूंगा । (إحياء علوم الدين، كتاب ذم البخل...الخ، بيان ذم المال...الخ، ۳/۲۸۹)

वादा पूरा कर दीजिए !

आला ह़ज़रत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن लिखते हैं : शरीअ़ते मुत़हहरा ने नमाज़ में कोई ज़िक्र ऐसा नहीं रखा है जिस में सिर्फ़ ज़बान से लफ़्ज़ निकाले जाएं और माना मुराद न हों। (फ़तावा रज़विया, 29/567) तो (इस फ़रमान की रौशनी में) आप की याद देहानी के लिए अ़र्ज़ है कि **नमाज़े वित्र** में आप **दुआ़ए कुनूत** तो पढ़ते ही होंगे, जिस में (येह भी) है : "نَتَوَكَّلُ عَلَيْكَ" यानी (या **अल्लाह**) हम तुझ पर तवक्कुल करते हैं, लेहाज़ा अपने रब्बे करीम से किए जाने वाले इस वादे पर अ़मल शुरूअ़ कर ही दीजिए।

परिन्दों की त़रह़ रिज़्क़ मिलेगा

मदीने के सुल्त़ान, सरदारे दो जहान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : अगर तुम **अल्लाह** पाक पर ऐसा तवक्कुल करो जैसा करने का ह़क़ है तो तुम्हें ऐसे रिज़्क़ मिलने लगेगा जैसे परिन्दों को मिलता है कि सुब्ह़ को भूके निकलते हैं मगर शाम को सेर हो कर लौटते हैं।

(ترمذی، کتاب الزھد، باب فی التوکّل علی اللہ، ۴/۱۵۴، حدیث: ۲۳۵۱)

मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : ह़क़्क़े तवक्कुल येह है कि फ़ाइले ह़क़ीक़ी **अल्लाह** तआ़ला को ही जाने, बाज़ ने फ़रमाया कि कस्ब करना (और) नतीजा **अल्लाह** पर छोड़ना ह़क़्क़े तवक्कुल है, जिस्म को काम में लगाए, दिल को **अल्लाह** से वाबस्ता रखे। तजरबा भी है कि **अल्लाह** पर तवक्कुल करने वाले भूके नहीं मरते। ख़याल रहे कि

परिन्दे तलाशे रिज़्क़ के लिए आशियाने से बाहर ज़रूर जाते हैं, हां ! दरख़्तों में चलने की ताक़त नहीं तो उन्हें वहां ही खड़े खड़े खाद पानी पहुंचता है । (मिरआतुल मनाजीह़, 7/113)

(ह़िकायत : 25)

सोने चांदी के प्यालों में खाना

ह़ज़रते सैयदना ज़ुन्नून मिस्री رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की तौबा का सबब येह बना कि आप ने एक नाबीना परिन्दे को देखा जिस के क़रीब किसी क़िस्म का दाना पानी न था, आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه सोचने लगे कि येह क्या खाता पीता होगा ? उसी दौरान अचानक ज़मीन से दो प्याले ज़ाहिर हुवे जिन में से एक सोने (Gold) का था जिस में पानी था जबकि दूसरा चांदी (Silver) का था जिस में गन्दुम (Wheat) के दाने मौजूद थे । उस परिन्दे ने गन्दुम के दाने खाए और पानी पिया जिस के बाद वोह प्याले ग़ाइब हो गए । येह मन्ज़र देख कर आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه पर रिक़्क़त तारी हो गई, आप ने उसी वक़्त अल्लाह पाक की बारगाह में सच्ची तौबा कर ली । (المستطرف، الباب الثامن والسبعون، ٢/ ٤٥٥)

(ह़िकायत : 26)

दो बुज़ुर्ग और दो परिन्दे

एक मरतबा दो अ़ज़ीम बुज़ुर्गों ह़ज़रते सैयदना इब्राहीम बिन अदहम और ह़ज़रते सैयदना शक़ीक़ बल्ख़ी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمَا की **मक्कए मुकर्रमा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّ تَعْظِيْمًا में मुलाक़ात हुई, ह़ज़रते सैयदना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الاَكْرَم ने ह़ज़रते सैयदना शक़ीक़ رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه से पूछा : राहे

सुलूक की इब्तिदा में आप के साथ कौन सा ऐसा वाक़िआ़ पेश आया जिस की वज्ह से आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه इस मक़ाम तक पहुंच गए ? आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : एक मरतबा मैं जंगल में था अचानक मुझे एक परिन्दा नज़र आया जिस के पर टूटे हुवे थे, मैं ने अपने दिल में कहा : येह परिन्दा अपनी गि़ज़ा कैसे ह़ासिल करता होगा ? बस इस ख़याल के आते ही मैं वहीं खड़ा हो गया और इरादा किया कि आज येह देख कर जाऊंगा कि इस परिन्दे को गि़ज़ा कहां से मिलती है ? मैं वहीं खड़ा सोचता रहा। कुछ देर बाद एक परिन्दा अपनी चोंच में एक टिड्डी पकड़े हुवे वहां आया और उस टूटे परों वाले परिन्दे के मुंह में वोह टिड्डी डाल कर वापस उड़ गया। **अल्लाह** पाक की इस शाने रज़्ज़ाक़ी पर मैं अ़श अ़श कर उठा और अपने नफ़्स से कहा : ऐ नफ़्स ! जो खु़दाए बुज़ुर्गो बरतर, ख़ालिक़ो मालिक सह़ीह़ सलामत परिन्दे के ज़रीए जंगलो बयाबान में इस माज़ूर परिन्दे को रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमाता है वोही परवर दगार عَزَّوَجَلَّ मुझे रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमाने पर क़ादिर है, चाहे मैं कहीं भी होऊं। बस उस दिन से मैं ने तमाम दुन्यवी मशागि़ल तर्क कर दिए और इ़बादते इलाही में मसरूफ़ हो गया और आज आप के सामने हूं। येह सुन कर ह़ज़रते सैयदना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم ने फ़रमाया : ऐ शक़ीक़ ! तुम उस परिन्दे की त़रह़ क्यूं न हो गए जो तन्दुरुस्त था और बीमार परिन्दे तक उस का रिज़्क़ पहुंचा रहा था, अगर तुम उस जैसे होते तो तुम्हारे लिए बहुत अच्छा था, क्या तुम ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का येह फ़रमान नहीं सुना : **ऊपर वाला हाथ नीचे वाले हाथ से बेहतर है।** (بخاری، ۱/۴۸۲،حدیث:۱۴۲۷)

ऐ शक़ीक़ ! मोमिन की एक निशानी येह है कि वोह अपने तमाम उमूर में उस मर्तबे व मक़ाम को पसन्द करता है जो आला ओ नफ़ीस हो यहां तक कि वोह

www.dawateislami.net

नेकोकारों के मर्तबे तक पहुंच जाता है। ह़ज़रते सैयदना इब्राहीम बिन अदहम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم की ह़िक्मत भरी बातें सुन कर ह़ज़रते सैयदना शक़ीक़ बल्ख़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने आप का हाथ पकड़ा और बड़ी मह़ब्बत से बोसा देते हुवे कहा : ऐ अबू इस्ह़ाक़ ! आप हमारे उस्ताज़ हैं।

(عیون الحکایات، الحادیة والعشرون بعد الثلاثمائة، ص ۲۸۵)

रिज़्क़ अ़क़्ल से नहीं क़िस्मत से मिलता है

ह़ज़रते इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ लिखते हैं : ईरान के किसी बादशाह ने एक दाना (यानी अ़क़्लमन्द) से पूछा कि क्या वज्ह है कि (कभी) बे वुक़ूफ़ को रिज़्क़ मिल जाता है और अ़क़्लमन्द मेह़रूम रेह जाता है ? उस ने जवाब दिया : दर अस्ल **अल्लाह** पाक इस के ज़रीए़ लोगों को येह बताना चाहता है कि वोही रिज़्क़ देने वाला है क्यूंकि अगर हर अ़क़्लमन्द को रिज़्क़ मिलता और हर बे वुक़ूफ़ मेह़रूम रेहता तो येह गुमान होता कि अ़क़्ल ने ही साह़िबे अ़क़्ल को रिज़्क़ दिलाया है, जब लोगों ने इस के बर अ़क्स मुआ़मला देखा तो जान लिया कि सिवाए **अल्लाह** पाक के कोई भी रिज़्क़ देने वाला नहीं और सिर्फ़ ज़ाहिरी अस्बाब पर भरोसा करना मुनासिब नहीं,

एक शाइ़र ने कहा है :

وَلَوْ كَانَتِ الْاَرْزَاقُ تَجْرِیْ عَلَی الْحِجَا هَلَكْنَ اِذًا مِنْ جَهْلِهِنَّ الْبَهَائِمُ

तर्जमा : अगर रिज़्क़ अ़क़्ल के सबब मिलता तो चौपाए अपनी जहालत की वज्ह से कब के हलाक हो चुके होते।

(احیاء علوم الدین، کتاب التوحید والتوکّل، ۴۰/۳۴۰)

तक्वा और तवक्कुल अपनाने का फ़ाइदा

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के सामने येह आयत तिलावत की :

وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا ۙ﴿۲﴾ وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ ؕ

(پ۲۸،الطلاق:۲،۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और जो* ***अल्लाह*** *से डरे* ***अल्लाह*** *उस के लिए नजात की राह निकाल देगा। और उसे वहां से रोज़ी देगा जहां उस का गुमान न हो।*

फिर इरशाद फ़रमाया : अगर तमाम लोग इस आयत पर अ़मल कर लें तो येह उन सब के लिए काफ़ी हो जाए।

(المسند للامام احمد بن حنبل ، ۸/ ۱۳۱ ، حدیث : ۲۱۶۰۷)

यानी अगर इस आयते करीमा पर तमाम दुन्या अ़मल करे दीनो दुन्या के रन्जो ग़म से और फ़िक्रों से आज़ाद हो जाए, येह एक आयत सब के लिए काफ़ी है। (मिरआतुल मनाजीह़, 7/121)

(ह़िकायत : 27)

तवक्कुल की बरकत से क़र्ज़ा उतर गया

मदीने के सुल्त़ान, रेह़मते आ़लमियान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : बनी इसराईल के एक शख़्स ने दूसरे शख़्स से एक हज़ार दीनार बत़ौरे क़र्ज़ मांगे। उस ने कहा : तुम किसी गवाह को ले कर आओ ! ताकि वोह उस क़र्ज़ पर गवाह बने। क़र्ज़ मांगने वाले ने कहा : **अल्लाह** पाक का गवाह होना काफ़ी है। दूसरे शख़्स ने कहा : फिर तुम किसी कफ़ील को ले कर आओ ! उस ने जवाब दिया : **अल्लाह** पाक का कफ़ील होना काफ़ी है। इस पर दूसरे शख़्स

ने कहा कि तुम सच केहते हो, फिर उस ने एक मुक़र्ररा मुद्दत के वादे पर उसे हज़ार दीनार बतौरे क़र्ज़ दे दिए। क़र्ज़ लेने वाला शख़्स अपने काम के सिलसिले में दरिया के पार गया और अपना काम मुकम्मल किया। इस के बाद उस ने कश्ती (Boat) की तलाश शुरूअ़ की ताकि वादे के मुताबिक़ वक़्त पर क़र्ज़ अदा कर सके लेकिन कोई कश्ती न मिली। तब उस ने एक लकड़ी को खोखला किया और उस के अन्दर 1000 दीनार और क़र्ज़ ख़्वाह के नाम एक पर्चा लिख कर रखा और किसी चीज़ से लकड़ी का मुंह बन्द कर दिया। फिर वोह उस लकड़ी को ले कर दरिया पर आया और येह दुआ़ की : या अल्लाह ! तुझे ख़ूब इल्म है कि मैं ने फ़ुलां शख़्स से एक हज़ार दीनार क़र्ज़ लिए थे। उस ने मुझ से कफ़ील का मुतालबा किया तो मैं ने कहा : अल्लाह पाक का कफ़ील होना काफ़ी है, पस वोह तेरी कफ़ालत पर राज़ी हो गया, और उस ने मुझ से गवाह लाने का मुतालबा किया तो मैं ने कहा : अल्लाह पाक का गवाह होना काफ़ी है, तो वोह तेरी गवाही पर राज़ी हो गया। मैं ने कश्ती तलाश करने की पूरी कोशिश की ताकि मैं (वक़्त पर) उस को रक़म पहुंचा दूं लेकिन मैं नाकाम रहा, अब मैं येह रक़म वाली लकड़ी तेरी अमान में देता हूं। फिर उस शख़्स ने वोह लकड़ी दरिया में डाल दी और वहां से वापस आ गया। दूसरी तरफ़ क़र्ज़ ख़्वाह भी दरिया के पास आया कि शायद कोई कश्ती नज़र आए जो उस का माल ले कर आ रही हो। इतने में उसे दरिया के किनारे वोह लकड़ी नज़र आई जिस में एक हज़ार दीनार मौजूद थे। उस ने ईंधन के तौर पर इस्तेमाल के लिए वोह लकड़ी उठा ली, जब उसे चीरा तो उस में एक हज़ार दीनार और पैग़ाम पर मुश्तमिल पर्चा मिला। चन्द दिन बाद क़र्ज़ लेने वाला शख़्स दरिया पार कर के आया और एक हज़ार दीनार ला कर केहने लगा : अल्लाह की क़सम ! मैं मुसलसल कश्ती तलाश करता रहा ताकि तुम्हारी रक़म वक़्त पर पहुंचा सकूं लेकिन आज से पेहले मुझे कश्ती नहीं

मिली। क़र्ज़ ख़्वाह ने उस से पूछा : क्या तुम ने मेरी त़रफ़ कोई चीज़ भेजी थी ? मक़रूज़ ने जवाब दिया : मैं तुम्हें बता रहा हूं कि मुझे आज से पेहले कोई कश्ती नहीं मिली जिस पर मैं तुम्हारे पास आता। क़र्ज़ ख़्वाह ने कहा : बेशक अल्लाह पाक ने तुम्हारी वोह रक़म मुझे पहुंचा दी है जो तुम ने लकड़ी में रख कर मेरे पास भेजी थी, चुनान्चे वोह शख़्स एक हज़ार दीनार ले कर खुशी से वापस चला गया। (بخاری ، کتاب الکفالۃ ، ۲/ ۷۳ ، حدیث : ۲۲۹۱)

मैं ने उस का क़र्ज़ अदा कर दिया

ह़ज़रते सैयदना खुलैद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मन्क़ूल है : किसी शख़्स को कोई ह़ाजत दरपेश हो और वोह अपनी अमानत के बदले अल्लाह पाक पर भरोसा करते हुवे क़र्ज़ ले और फिर उस रक़म को बग़ैर फ़ुज़ूल ख़र्ची के इस्तेमाल करे, क़र्ज़ अदा करने से पेहले पेहले अगर उस का इन्तेक़ाल हो जाए तो अल्लाह पाक अपने फ़रिश्तों से फ़रमाता है : येह मेरा बन्दा है इसे ज़रूरत दरपेश हुई, इस ने मुझ पर भरोसा करते हुवे क़र्ज़ लिया फिर उसे बग़ैर इसराफ़ के ख़र्च किया, तुम गवाह हो जाओ ! मैं ने इस का क़र्ज़ अदा कर दिया और इस के क़र्ज़ ख़्वाह को इस से राज़ी कर दिया।

(موسوعۃ الامام ابن ابی الدنیا ،کتاب التوحید والتوکُّل،۱/۱٤۲،رقم:۱۳)

(ह़िकायत : 28)

क़र्ज़ चुकाने की परेशानी ख़त्म हो गई

ह़ज़रते सैयदना ममशाद दीनवरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मुझ पर कुछ क़र्ज़ा था जिस की वज्ह से मेरा दिल परेशान रेहता था, मैं ने ख़्वाब में देखा कि

कोई केह रहा है : ऐ बख़ील ! तू ने इतनी मिक़्दार में क़र्ज़ा लिया है, तू क़र्ज़ा ले लिया कर और परवाह न किया कर, लेना तेरा काम है और अदा करना हमारी ज़िम्मेदारी है, आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : इस के बाद मैं ने कभी भी सब्ज़ी फ़रोश और क़स्साब (यानी गोश्त वाले) वग़ैरा से हिसाब किताब नहीं किया। (احياء علوم الدين ، كتاب التوحيد والتوكُّل، ٣٣٥/٤)

दो क़िस्म के लोग कामयाब होते हैं

इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने बारहा अपने शैख़ अबू मुहम्मद رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से सुना कि "दुन्या में दो शख़्स ही कामयाब होते हैं, एक जुरअत मन्द आदमी और दूसरा तवक्कुल करने वाला।" (फिर इमाम ग़ज़ाली फ़रमाते हैं :) येह एक जामेअ़ फ़क़रा (Phrase) है, क्यूंकि जुरअत मन्द शख़्स अपनी क़ुव्वते इरादी और जुरअते क़ल्ब से जिस काम का इरादा करता है उसे कर गुज़रता है और कोई चीज़ उस के रास्ते में रुकावट नहीं बनती, जबकि मुतवक्किल शख़्स इस लिए कामयाब है कि वोह वादए ख़ुदावन्दी पर अपनी बसीरत और यक़ीने कामिल से एतेमाद रखता है और हर काम करते वक़्त उसे रब्बे करीम पर कामिल भरोसा होता है, वोह अपना इरादा पूरा करने में किसी इन्सान से नहीं डरता और न शैत़ानी वस्वसे उस के लिए रुकावट बन सकते हैं, इस लिए वोह अपने मक़ासिद में कामयाब हो जाता है। (मिन्हाजुल आ़बेदीन, स. 103)

अल्लाह वालों पर चार अ़ताएं

बेकसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : चार चीज़ें **अल्लाह** पाक अपने मेहबूब बन्दों को ही अ़ता

फ़रमाता है : (1) ख़ामोशी जो कि अव्वलीन इबादत है (2) तवक्कुल (3) आ़जिज़ी व इन्केसारी, और (4) दुन्या से बे रग़बती ।

(موسوعة الامام ابن ابی الدنیا، کتاب التواضع و الخمول، ۳/ ۵٦١، حدیث: ١٢٧)

(हि़कायत : 29)

एक मुतवक्किल और दाना बच्ची

ह़ज़रते सैयदना ह़ातिम असम رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के एहलो अ़याल कसीर थे और आप को माली तंगी (Financial Problem) का सामना भी रेहता था लेकिन आप का तवक्कुल मिसाली था । एक रात अपने रुफ़क़ा से गुफ़्तगू फ़रमा रहे थे कि ह़ज का तज़्किरा चल निकला, आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के दिल में सफ़रे ह़रमैने त़य्यिबैन के अरमान मचलने लगे । जब घर तशरीफ़ लाए तो एहले ख़ाना से फ़रमाया : अगर तुम इजाज़त दो तो इस साल मैं ह़ज के लिए चला जाऊं और वहां जा कर तुम्हारे लिए दुआ़ करूं ! बीवी बच्चों ने अ़र्ज़ की : आप के पास कोई रक़म नहीं और हम लोग फ़ाक़ों का शिकार हैं, हमें ऐसी ह़ालत में छोड़ कर आप ह़ज के लिए कैसे जा सकते हैं ? लेकिन आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की छोटी बच्ची केहने लगी : अगर तुम लोग इन्हें इजाज़त दे दो तो तुम्हारा क्या जाएगा ! येह जहां जाना चाहते हैं इन्हें जाने दो, येह हमारे राज़िक़ (यानी रिज़्क़ देने वाले) नहीं बल्कि रिज़्क़ मिलने का वसीला हैं । जब घर के दीगर अफ़राद ने छोटी बच्ची का जज़्बए तवक्कुल देखा तो केहने लगे : वल्लाह ! येह बच्ची सच केहती है, ह़ुज़ूर ! आप जब जाना चाहें चले जाइए । आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उसी वक़्त एह़राम बांधा और सूए ह़रम रवाना हो गए ।

सुब्ह़ जब आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के ह़ज के लिए जाने की ख़बर मश्हूर हुई तो पड़ोसी आ कर घर वालों को समझाने लगे कि ऐसी फ़क़्रो फ़ाक़ा की हालत में आप लोगों ने उन्हें क्यूं जाने दिया ! आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के दोस्त अह़बाब भी आप की जुदाई पर अफ़सुर्दा हो गए। येह मुआ़मला देख कर घर के दीगर अफ़राद उस छोटी बच्ची को मलामत करने लगे कि अगर तुम उस वक़्त ख़ामोश रेहतीं तो येह सब कुछ न होता। इस पर उस बच्ची ने आस्मान की त़रफ़ सर उठाया और बारगाहे ख़ुदावन्दी में अ़र्ज़ की : ऐ मेरे मालिको मौला ! मुझे इन लोगों के सामने रुस्वा न फ़रमा, इन्हें अपने फ़ज़्लो करम का जल्वा दिखा दे और ज़ाहिर फ़रमा दे कि तू इन्हें नुक़्सान न होने देगा।

इसी दौरान शेहर का ह़ाकिम (City Mayor) जो शिकार के लिए निकला था और रास्ते में अपने क़ाफ़िले से बिछड़ गया था, ह़ुस्ने इत्तेफ़ाक़ से वोह अपने चन्द मुसाहिबों के साथ आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के घर के बाहर आन पहुंचा और दरवाज़ा बजा कर पानी त़लब किया। जब घर वालों ने पूछा : कौन ? तो बताया गया : तुम्हारे दरवाज़े पर इस शेहर का ह़ाकिम खड़ा है और पानी का त़लबगार है। येह सुन कर आप की ज़ौजए मोह़तरमा ने आस्मान की त़रफ़ सर उठाया और अ़र्ज़ की : या **अल्लाह** ! तेरी भी क्या शान है, कल हम ने भूक के आ़लम में रात गुज़ारी और आज ह़ाकिमे शेहर हमारे दरवाज़े पर खड़ा पानी मांग रहा है ! फिर उन्हों ने एक नए प्याले में पानी भर कर ह़ाकिम को भेजा और पैग़ाम दिया कि हमारी माज़ेरत क़बूल फ़रमाएं (कि हम आप की इस से ज़्यादा ख़िदमत करने से क़ासिर हैं।) ह़ाकिमे शेहर ने जब पानी पिया तो उसे अ़जीब फ़रह़त मिली। उस ने पूछा : क्या येह किसी अमीर का घर है ? लोगों ने कहा : नहीं ! येह

www.dawateislami.net

एक नेक बन्दे ह़ातिम असम का घर है। ह़ाकिमे शेहर ने कहा कि येह नाम तो मैं ने भी सुन रखा है। इतने में ह़ाकिम के वज़ीर ने अ़र्ज़ की : मेरे आक़ा ! मैं ने सुना है कि ह़ातिम असम गुज़श्ता कल सफ़रे ह़ज पर रवाना हो गए हैं और उन्हों ने एहलो अ़याल के लिए कुछ नहीं छोड़ा और येह भी मालूम हुवा है कि घर वालों ने कल रात भूक में गुज़ारी है। ह़ाकिम ने कहा : आज हम लोग भी इन पर बोझ बन गए हैं और येह बात मुरव्वत के ख़िलाफ़ है कि हम जैसे लोग ऐसों पर बोझ बनें ! फिर ह़ाकिमे शेहर ने अपनी कमर से क़ीमती पेटी उतार कर घर के अन्दर डाल दी और अपने हमराहियों से कहा : जो मुझ से मह़ब्बत करता है वोह भी अपनी पेटी इस घर में डाल दे। येह सुन कर सब ने अपनी पेटियां उतार कर घर में डाल दीं और वापसी के लिए रवाना हो गए। वज़ीर ने कहा : ऐ घर वालों ! तुम पर सलाम हो ! मैं कुछ ही देर में इन पेटियों की क़ीमत ले कर आता हूं। जब ह़ाकिमे शेहर अपने मह़ल में वापस पहुंच गया तो वज़ीर वापस आया और कसीर रक़म दे कर पेटियां वापस ले गया। येह सारा माजरा देख कर छोटी बच्ची ज़ारो क़ित़ार रोने लगी। घर वालों ने ह़ैरानी से कहा : येह तो ख़ुशी का मक़ाम है कि अल्लाह पाक ने हमें वुस्अ़त व कुशादगी अ़त़ा फ़रमाई है और तुम रो रही हो ! छोटी बच्ची बोली : अम्मी जान ! मैं इस लिए रो रही हूं कि हम ने कल रात भूक के आ़लम में गुज़ारी थी, जब मख़्लूक़ ने हमारे ह़ाल पर नज़र की तो फ़क्र व गुर्बत के बाद हमें ग़नी कर दिया। ख़ालिक़े करीम जब हमारे ह़ाल पर नज़र फ़रमाएगा तो लम्ह़ा भर के लिए भी हमें किसी का मोह़ताज न रेहने देगा। फिर बच्ची ने बारगाहे ख़ुदावन्दी में दुआ़ मांगी : ऐ अल्लाह ! हमारे वालिद पर नज़रे रेह़मत फ़रमा और उन के लिए आसानी फ़रमा दे।

दूसरी त़रफ़ ह़ज़रते सैयदना ह़ातिम असम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه जब क़ाफ़िले के साथ ह़ज के लिए रवाना हुवे तो रास्ते में अमीरे क़ाफ़िला शदीद बीमार हो गया। लोगों ने उस के इलाज के लिए किसी त़बीब की तलाश की लेकिन कोई न मिला। अमीरे क़ाफ़िला ने पूछा कि क्या हमारे साथ कोई नेक बन्दा मौजूद है ? लोगों ने आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه का नाम लिया। चुनान्चे आप अमीर के पास तशरीफ़ ले गए और उस के लिए दुआ़ फ़रमाई तो उसी वक़्त उस की तक्लीफ़ दूर हो गई। अमीर ने हुक्म दिया : इन के लिए खाने पीने और सवारी का इन्तेज़ाम कर दिया जाए। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه उस रात अपने एहलो अ़याल के लिए परेशान थे और इसी ह़ालत में आप की आंख लग गई। ख़्वाब में किसी ने कहा : ऐ ह़ातिम ! जो हमारे साथ अपना मुआ़मला दुरुस्त कर लेता है हम भी उस के साथ अपना मुआ़मला दुरुस्त कर लेते हैं, फिर आप को एहलो अ़याल के साथ पेश आने वाले मुआ़मले की ख़बर दी गई। ह़ज के बाद जब आप वापस घर तशरीफ़ लाए तो आप की छोटी बच्ची आप के गले लग कर रोने लगी। उस मौक़अ़ पर वहां मौजूद छोटे बच्चों ने बड़ों से कहा : **अल्लाह** पाक उस की त़रफ़ नज़र नहीं फ़रमाता जो उ़म्र के एतेबार से बड़ा हो बल्कि उस की नज़रे रेह़मत तो उस की त़रफ़ मुतवज्जेह होती है जो **अल्लाह** पाक की ज़्यादा मारेफ़त रखता हो इस लिए **अल्लाह** करीम की मारेफ़त और उस पर तवक्कुल को अपने ऊपर लाज़िम कर लो क्यूंकि जो **अल्लाह** पर भरोसा करता है तो वोह उस के लिए काफ़ी हो जाता है। (المستطرف،الباب العاشر، ۱/ ص۱۱۷)

तवक्कुल करने वाले पर शैत़ान क़ाबू नहीं पाता

अल्लाह पाक फ़रमाता है :

اِنَّهٗ لَیْسَ لَهٗ سُلْطٰنٌ عَلَى الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ عَلٰى رَبِّهِمْ یَتَوَكَّلُوْنَ ﴿۹۹﴾

(پ۱۴،النحل:۹۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक उस का कोई क़ाबू उन पर नहीं जो ईमान लाए और अपने रब ही पर भरोसा रखते हैं।*

शैत़ान से ह़िफ़ाज़त का वज़ीफ़ा

ह़ज़रते सैयदना कअ़ब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से मन्क़ूल है कि जब कोई शख़्स अपने घर से बाहर निकले और येह दुआ़ पढ़े :

بِسْمِ اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ

तो फ़रिश्ता केहता है : तुझे हिदायत दी गई, तेरी ह़िफ़ाज़त की गई और तेरी किफ़ायत की गई, फिर अगर शैत़ान आएं तो आपस में केहते हैं : तुम उस शख़्स को कैसे नुक़्सान पहुंचा सकते हो जिसे हिदायत, किफ़ायत और ह़िफ़ाज़त ह़ासिल हो।

(موسوعة الامام ابن ابی الدنیا ،کتاب التوحید والتوکُّل،۱/۱۴۶،رقم:۲۱)

(ह़िकायत : 30)

डरावने शख़्स से नजात मिली

एक कूफ़ी ने ह़ज़रते सैयदना बुहैम अबू बक्र इज्ली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से बयान किया कि मैं अपने बाग़ में मौजूद था मुझे डरावनी शक्ल का एक काला आदमी दिखाई दिया, मैं घबरा गया और حَسْبِیَ اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِیْلُ पढ़ा, तो वोह काला शख़्स ज़मीन में धंस गया और मैं मुसलसल उसे देख रहा था

मैं ने अपने पीछे से आवाज़ सुनी : कोई येह आयत तिलावत कर रहा था : وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَهُوَ حَسْبُهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بَالِغُ اَمْرِهٖ ؕ (پ۲۸،الطلاق:۳) (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और जो **अल्लाह** पर भरोसा करे तो वोह उसे काफ़ी है बेशक **अल्लाह** अपना काम पूरा करने वाला है) जब मैं ने पीछे मुड़ कर देखा तो कोई भी मौजूद नहीं था । (موسوعة ابن ابی الدنیا ،کتاب التوحید والتوکُّل،۱/۱۰۲،رقم:۳۲)

(**हिकायत : 31**)

शैतान ख़िदमत करने लगा

हज़रते सैयदना अय्यूब हम्माल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से मन्क़ूल है कि हमारे अ़लाके़ में एक मुतवक्किल नौजवान रेहता था । वोह इबादतो रियाज़त और तवक्कुल के मुआ़मले में बहुत मशहूर था । लोगों से कोई चीज़ न लेता । जब भी खाने की ह़ाजत होती अपने सामने सिक्कों (Coins) से भरी एक थैली पाता । इसी त़रह़ वोह अपने शबो रोज़ इबादते इलाही में गुज़ारता और उसे ग़ैब से रिज़्क़ दिया जाता । एक दफ़्आ़ लोगों ने उस से कहा : ऐ नौजवान ! तू सिक्कों की वोह थैली लेने से डर ! हो सकता है शैत़ान तुझे धोका दे रहा हो और वोह थैली उसी की त़रफ़ से हो । नौजवान ने कहा : मेरी नज़र तो अपने पाक परवर दगार की रेह़मत की त़रफ़ होती है, जब मेरा मौला करीम मुझे रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमाता है तो मैं ले लेता हूं, बिलफ़र्ज़ अगर वोह सिक्कों की थैली मेरे दुश्मन शैत़ान की त़रफ़ से हो तो उस में मेरा क्या नुक़्सान बल्कि मुझे फ़ाइदा ही है कि मेरा दुश्मन मेरे लिए मुसख़्ख़र (यानी ताबेअ़) कर दिया गया है, अगर वाक़ेई ऐसा है तो **अल्लाह** तबारक व तआ़ला उसे मेरा ख़ादिम बनाए रखे । इस से ज़्यादा अच्छी बात और क्या हो सकती है कि मेरा सब से बड़ा दुश्मन ख़ादिम बन कर मेरी ख़िदमत करे और मैं उस की त़रफ़ नज़र न रखूं बल्कि येह समझूं कि मेरा रब्बे करीम मुझे दुश्मन के ज़रीए रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमा रहा है ।

(عیون الحکایات ، الحادیة والتسعون بعد المأتین ، ص ۲٦٥)

www.dawateislami.net

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! येह ह़क़ीक़त है कि जो शख़्स अपने रब्बे करीम की इ़बादत के लिए अपने आप को फ़ारिग़ कर लेता है **अल्लाह** पाक उसे दुन्यवी परेशानियों से नजात अ़त़ा फ़रमा देता है। जो उस ख़ालिक़ो मालिक करीम के कामों में लग जाता है तो वोह मुसब्बिबुल अस्बाब उसे ऐसे ऐसे अस्बाब मुहय्या फ़रमाता है कि जिन के बारे में वेहमो गुमान भी नहीं होता। **अल्लाह** पाक हमें भी ऐसा यक़ीने कामिल अ़त़ा फ़रमाए कि हमारी नज़र अस्बाब पर न हो बल्कि ख़ालिक़े अस्बाब की त़रफ़ हो। **अल्लाह** पाक हमें तवक्कुल की दौलत से माला माल फ़रमाए।

آمِيْن بِجَاہِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

गुनाहों में मश्ग़ूली रिज़्क़ से मेह़रूमी का एक सबब है

सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : اِنَّ الرَّجُلَ لَيُحْرَمُ الرِّزْقَ بِالذَّنْبِ يُصِيبُهُ यानी बिला शुबा इन्सान गुनाह की नहूसत की वज्ह से रिज़्क़ से मेह़रूम कर दिया जाता है।

(ابن ماجه، كتاب الفتن، باب العقوبات، ٤/٣٦٩، حديث: ٤٠٢٢)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीस के तह़्त फ़रमाते हैं कि इस फ़रमान के चन्द माना हैं : **एक** येह कि गुनाहों से रिज़्क़े आख़िरत यानी सवाबे आमाल घट (यानी कम हो) जाता है, **दूसरे** येह कि मोमिन का गुनाहों की वज्ह से रिज़्क़े रूह़ानी यानी इख़्लास, इत़्मीनाने क़ल्ब, दिल का चैन व सुकून, रग़बत इलल्लाह घट (यानी कम हो) जाती है, **तीसरे** येह कि मोमिन अपने गुनाहों की वज्ह से तंगी ए रिज़्क़ या

बलाओं में गिरफ़्तार हो जाता है, ताकि इन की वज्ह से गुनाहों से तौबा कर के पाको साफ़ हो कर दुन्या से जाए, लेहाज़ा इस फ़रमान पर येह एतेराज़ नहीं कि अक्सर मुत्तक़ी परहेज़गार लोग मफ़्लूकुल ह़ाल (यानी ग़ुर्बत में) होते हैं और फ़ासिक़ व बदकार बड़े मालदार। (मिरआतुल मनाजीह़, 6/525)

जो लिखा है वोही पहुंचेगा

अल्लाह पाक फ़रमाता है :

قُلْ لَّنْ یُّصِیْبَنَاۤ اِلَّا مَا كَتَبَ اللّٰهُ لَنَاۚ هُوَ مَوْلٰىنَاۚ وَ عَلَى اللّٰهِ فَلْیَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ۝۵۱ (پ۱۰،التوبة:۵۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ ! हमें न पहुंचेगा मगर जो अल्लाह ने हमारे लिए लिख दिया, वोह हमारा मौला है, और मुसलमानों को अल्लाह ही पर भरोसा चाहिए।

ह़ज़रते सैयदना इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : मत़लब येह है कि हमें जो भी भलाई और बुराई, ख़ौफ़ व उम्मीद और सख़्ती व नर्मी पहुंचती है वोह अल्लाह पाक के यहां हमारी तक़्दीर में लिखी हुई है, और लिखे होने का मत़लब येह है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इन सब बातों को जानता और इन का फ़ैसला भी फ़रमाता है। आगे चल कर फ़रमाते हैं : अगर्चे अल्लाह पाक पर अपने किसी बन्दे के लिए कुछ भी करना वाजिब नहीं है लेकिन इस के बावुजूद अल्लाह करीम बड़ी रेह़मत वाला और बहुत एह़सान व फ़ज़्ल फ़रमाने वाला है, लेहाज़ा लाज़िम है कि बन्दा उसी पर तवक्कुल करे और उस के फ़ज़्लो रेह़मत के इलावा हर चीज़ की ख़्वाहिश अपने दिल से निकाल दे।

(التفسير الكبير، سورة التوبة، ٦٦/٦، تحت الاية : ٥١)

जो मुक़द्दर में नहीं वोह किसी त़रह़ न मिलेगा

ह़ज़रते सैयदना अबू ह़ाज़िम رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : जो चीज़ मेरे मुक़द्दर में नहीं है अगर मैं हवा पर भी सवार हो जाऊं तो उसे नहीं पा सकता।

(المستطرف،١/١٢٤)

(ह़िकायत : 32)

रिज़्क़ तुम्हें तलाश करेगा

ह़ज़रते सैयदना ह़ातिम असम رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने एक शख़्स को बहुत भाग दौड़ करते हुवे देखा तो फ़रमाया : तुम क्या तलाश कर रहे हो ? अ़र्ज़ की : मैं अपना रिज़्क़ तलाश कर रहा हूं, फ़रमाया : क्या तुम जानते हो वोह कहां है ? जवाब दिया : नहीं, फ़रमाया : अगर वोह तुम्हारे सामने आ जाए तो क्या तुम उसे पेहचान लोगे ? अ़र्ज़ की : नहीं, फ़रमाया : मैं ने इस से ज़्यादा अ़जीब शख़्स नहीं देखा कि जो एक चीज़ की त़लब में भाग दौड़ कर रहा है लेकिन येह नहीं जानता कि वोह कहां है, और अगर वोह सामने आ जाए तो उसे पेहचान भी नहीं सकता, ऐ शख़्स ! तुम्हें रिज़्क़ तलाश करने का नहीं बल्कि रिज़्क़ को तुम्हें तलाश करने का हुक्म दिया गया है, तुम उसे दिन की रौशनी में भी नहीं पेहचान सकते, लेकिन वोह तुम्हें आधी रात को भी पेहचान लेगा।

(بـريـقة مـحـمـودية ، الـقسم الثـانـى فى الاخلاق الذميمة ، الاربعون التعليق ...الخ ، ٣/ ٨٨)

(ह़िकायत : 33)

तुम न पहुंचते तो येह तुम तक पहुंच जाती

ह़ज़रते सैयदना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मरवी है : एक साइल ने बारगाहे रिसालत में दस्ते सवाल दराज़ किया, आप صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

ने एक गिरी हुई खजूर साइल को दे कर फ़रमाया : अगर तुम इस तक नहीं पहुंचते तो येह तुम तक पहुंच जाती । (شعب الایمان، ۲/ ۷۰، حدیث: ۱۱۹۰)

कोई भी अपना रिज़्क़ पाए बग़ैर नहीं मरेगा

सैयदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : कोई भी शख़्स उस वक़्त तक नहीं मरेगा जब तक अपना रिज़्क़ मुकम्मल न पा ले अगर्चे रिज़्क़ मिलने में ताख़ीर हो जाए, लेहाज़ा **अल्लाह** पाक से डरो और उ़म्दा त़ौर पर रोज़ी ह़ासिल करो, ह़लाल को ले लो, और ह़राम को छोड़ दो ।

(ابن ماجه، کتاب التجارات، باب الاقتصاد فی ...الخ، ۳/ ۹، حدیث: ۲۱٤٤)

ह़ज़रते सैयदना अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इस ह़दीस की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : **अल्लाह** पाक बन्दे को रिज़्क़ ज़रूर अ़त़ा फ़रमाता है, लेहाज़ा रिज़्क़ के ख़याल ही में गुम रेहने का कोई फ़ाइदा नहीं, और रिज़्क़ मह़ज़ जिद्दो जहद से ह़ासिल नहीं होता क्यूंकि कभी ज़ेहीन व दानिश मन्द आदमी भी कोशिश के बाद अपना मत़लूबा रिज़्क़ पाने में कामयाब नहीं होता और कभी एक कुन्द ज़ेहन अपना मत़लूब आसानी से पाने में कामयाब हो जाता है । मज़ीद फ़रमाते हैं : इस सब का दारोमदार यक़ीन पर है, क्यूंकि जब बन्दा येह बात अपने पेशे नज़र रखेगा कि उस का रिज़्क़ मुक़र्रर है तो येह बात भी उस पर ज़ाहिर रहेगी कि जो मुक़द्दर में न हो उसे त़लब करना तो बस एक मशक़्क़त है क्यूंकि इस से सिर्फ़ लालच व ह़िर्स ही बढ़ सकती है, यूं वोह अपने रिज़्क़ पर क़नाअ़त करने में कामयाब हो जाएगा । (فیض القدیر، ۳/ ۲۰٦، تحت الحدیث: ۳۰۱۲)

(हिकायत : 34)

भुना हुवा हिरन

हज़रते सैयदना अबू तुराब नख़्शी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं कि एक मरतबा मैं और मेरे चन्द रुफ़क़ा मक्कतुल मुकर्रमा زَادَهَااللّٰهُ شَرَفًاوَّ تَعظِیْماً की त़रफ़ सफ़र पर रवाना हुवे। मैं ने सब से अलग थलग रेह कर सफ़र करना पसन्द किया और उन्हें छोड़ कर अकेला ही सफ़र करता रहा, चलते चलते जब भूक ने बहुत ज़्यादा सताया तो मेरे दोस्तों ने एक हिरन शिकार किया और ज़ब्ह़ करने के बाद उसे भूना फिर सब मिल कर खाने के लिए बैठ गए। अभी उन्हों ने खाना शुरूअ़ भी न किया था कि एक गिध आया, उस ने भुने हुवे हिरन पर ह़म्ला किया और उस का चौथाई ह़िस्सा उठा कर ले गाया। मेरे रुफ़क़ा का केहना है : हम उसे देख रहे थे मगर उसे रोक नहीं सकते थे। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه मज़ीद फ़रमाते हैं : जब हम सब दोस्त मक्कए मुकर्रमा में जम्अ़ हुवे तो मैं ने उन से पूछा : क्या तुम्हें दौराने सफ़र कोई अ़जीबो ग़रीब वाक़िआ़ पेश आया ? उन्हों ने जवाब दिया : जी हां ! हमें एक अ़जीबो ग़रीब वाक़िआ़ पेश आया। फिर उन्हों ने गिध और हिरन वाला वाक़िआ़ सुनाया। उन से येह वाक़िआ़ सुनने के बाद मैं ने कहा : फ़ुलां दिन फ़ुलां वक़्त मैं मक्कए पाक की त़रफ़ रवां दवां था कि अचानक एक गिध आया और मेरे सामने भुने हुवे हिरन का चौथाई ह़िस्सा डाल कर वहां से ग़ाइब हो गया, देखो ! हमारे पाक रब ने हमें किस त़रह़ एक ही वक़्त में एक ही हिरन का गोश्त खिलाया।

(عیون الحکایات ، السابعة والستون بعد المائة ، ص۱۷۹)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बे सब्री का कुछ फ़ाइदा नहीं

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सैयदना उ़मर फ़ारूके़ आज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक मरतबा खु़त्बा देते हुवे इरशाद फ़रमाया : जान लो कि बन्दे और उस के रिज़्क़ के दरमियान एक पर्दा होता है, अगर वोह सब्र करे तो उस का रिज़्क़ उस तक पहुंचता है, अगर वोह मशक़्क़त में पड़े तो पर्दा चाक हो जाता है, और वोह अपने मुक़र्ररा रिज़्क़ से ज़्यादा हासिल नहीं कर सकता।

(اتحاف الخيرة المهرة، كتاب المواعظ، ٩/٥٣٩، رقم: ٩٥٠٦)

(हि़कायत : 35)

आज के दिन ही तो सब्र करना है

हज़रते सैयदना वह्ब बिन मुनब्बेह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : एक नबी عَلَیْہِ السَّلَام का गुज़र किसी ग़ार में मौजूद एक आ़बिद (यानी ज़्यादा इ़बादत करने वाले शख़्स) के पास से हुवा तो उसे सलाम किया : आ़बिद ने सलाम का जवाब दिया तो नबी عَلَیْہِ السَّلَام ने फ़रमाया : ऐ **अल्लाह** के बन्दे ! तू यहां कब से है ? आ़बिद ने अ़र्ज़ की : 300 साल से। उन्हों ने पूछा : तेरी गुज़र बसर कहां से होती है ? आ़बिद ने अ़र्ज़ की : दरख़्त के पत्तों से। उन्हों ने पूछा : पीते कहां से हो ? आ़बिद ने अ़र्ज़ की : चश्मों के पानी से। उन्हों ने पूछा : मौसमे सर्मा में कहां होते हो ? आ़बिद ने अ़र्ज़ की : इस पहाड़ के नीचे। उन्हों ने इरशाद फ़रमाया : इ़बादत पर इतना सब्र और इस्तेक़ामत कैसे ? आ़बिद ने अ़र्ज़ की : मैं कैसे सब्र न करूं फ़क़त "आज" के दिन ही तो सब्र करना है ! "गुज़श्ता कल" तो जो होना था हो चुका, और "आइन्दा कल" अभी आया नहीं है। **अल्लाह** के नबी

عَلَیْہِ السَّلَام को उस की हिक्मत भरी बात से बड़ा तअ़ज्जुब हुवा कि **"फ़क़त् आज के दिन ही तो सब्र करना है।"**

(حلیۃ الاولیاء، وھب بن منبہ، ٤/٦٧، رقم: ٤٧٧٢)

(हिकायत : 36)

बे सब्री के बाइ़स ह़लाल रोज़ी से मेह़रूमी

ह़ज़रते सैयदना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم मस्जिद में दाख़िल होने लगे तो मस्जिद के दरवाज़े पर मौजूद एक शख़्स से इरशाद फ़रमाया : मेरा येह ख़च्चर पकड़ लो, और ख़ुद मस्जिद के अन्दर चले गए, दूसरी त़रफ़ उस शख़्स ने ख़च्चर को वहीं छोड़ा और लगाम ले कर फ़रार हो गया। ह़ज़रते सैयदना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم नमाज़ के बाद उस शख़्स के ख़च्चर पकड़ने के इवज़ उसे देने के लिए दो दिरहम ले कर मस्जिद से बाहर तशरीफ़ लाए तो देखा कि ख़च्चर बग़ैर लगाम के खड़ा है। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़च्चर पर सवार हो कर घर तशरीफ़ लाए और अपने ग़ुलाम को वोह दो दिरहम दे कर लगाम ख़रीदने के लिए भेजा। ग़ुलाम बाज़ार से वोही लगाम ख़रीद कर लाया जिसे चोर ने दो दिरहम में फ़रोख़्त किया था। ह़ज़रते सैयदना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने इरशाद फ़रमाया : बेशक बन्दा बे सब्री कर के अपने आप को ह़लाल रोज़ी से मेह़रूम कर देता है और इस के बा वुजूद अपने मुक़द्दर से ज़्यादा ह़ासिल नहीं कर पाता। (المستطرف، ١/١٢٤)

वहां से रिज़्क़ मिलता है जहां से गुमान भी नहीं होता

अल्लाह के आख़िरी नबी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो **अल्लाह** पाक का हो जाता है **अल्लाह** उस की तमाम ज़रूरतों

को पूरा फ़रमाता है और उसे वहां से रिज़्क़ अ़ता फ़रमाता है जहां उस का गुमान भी नहीं होता, और जो दुन्या का हो जाता है अल्लाह पाक उसे दुन्या ही के हवाले फ़रमा देता है। (شعب الایمان ، ۲/۲۸ ، حدیث : ۱۰۷٦)

हज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मुनावी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : बाज़ उ़लमा ए किराम का येह केहना है कि येह दरजा अल्लाह पाक के ख़ास बन्दों को नसीब होता है, इस की वज्ह येह है कि अल्लाह पाक उन पर ग़ैरत फ़रमाता है कि वोह उस की ज़ात के इलावा किसी पर भरोसा करें, यूं उन का रिज़्क़ उन्हें दुन्या में इस त़रह़ मिलता है जिस त़रह़ जन्नत में मिलेगा। मज़ीद फ़रमाते हैं : जब रिज़्क़ ऐसी जगह से आए जहां से गुमान भी न हो तो ख़ुशी ज़्यादा होती है जैसे कोई ख़ुशी की ख़बर ऐसी जगह से आ जाए जहां से आने का गुमान न हो। मज़ीद फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सैयदना सुफ़्यान बिन सईद सौरी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : तक़्वा इख़्तियार करो ! कि आज तक मैं ने किसी मुत्तक़ी को मोह़ताज नहीं देखा। (فیض القدیر ، ۱۰/۹۵)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मौत की त़रह़ रिज़्क़ भी पहुंच कर रेहता है

सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : لَوْ اَنَّ ابْنَ آدَمَ هَرَبَ مِنْ رِزْقِهٖ كَمَا يَهْرُبُ مِنَ الْمَوْتِ لَاَدْرَكَهٗ رِزْقُهٗ كَمَا يُدْرِكُهُ الْمَوْتُ यानी अगर इन्सान अपने रिज़्क़ से ऐसे भागे जैसे मौत से भागता है फिर भी रिज़्क़ उस को आ पहुंचेगा जैसे मौत आ पहुंचती है।

(حلیۃ الاولیاء ، یوسف بن اسباط ، ۸/۲٦۹ ، حدیث : ۱۲۱٦۹)

(हिकायत : 37)

रोटी खाए बग़ैर मर गया

इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه लिखते हैं कि पेहले ज़माने में एक शख़्स सफ़र पर था, उस के पास एक रोटी थी, उस ने सोचा कि अगर मैं ने येह रोटी खा ली तो बाद में भूक से मर जाऊंगा, **अल्लाह** पाक ने उस के साथ एक फ़रिश्ता मुक़र्रर कर दिया और उसे हुक्म दिया कि अगर येह उसे खा ले तो उसे और रिज़्क़ देना और अगर न खाए तो उसे मज़ीद न देना चुनान्चे वोह रोटी उस के पास ही रही यहां तक कि वोह उसे खाए बग़ैर मर गया।

(احياء علوم الدين ، كتاب التوحيد والتوكُّل، ٣٣٥/٤)

कीड़े मकोड़ों से बचने का वज़ीफ़ा

हज़रते सैयदना अ़ब्दुल्लाह बिन कुर्ज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه बयान करते हैं कि अफ़्रीक़ा के आ़मिल (गवर्नर) ने हज़रते सैयदना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को ख़त़ लिखा जिस में अफ़्रीक़ा की ज़मीन के कीड़े मकोड़ों और बिच्छूओं वग़ैरा की शिकायत बयान की, हज़रते सैयदना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने जवाब लिखा और इस में सुब्ह़ो शाम येह आयत पढ़ने को कहा :

وَمَا لَنَاۤ اَلَّا نَتَوَكَّلَ عَلَى اللّٰهِ وَقَدْ هَدٰىنَا سُبُلَنَاؕ وَلَنَصْبِرَنَّ عَلٰى مَاۤ اٰذَیْتُمُوْنَاؕ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْیَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ﴿۱۲﴾ (پ۱۳، ابراهيم:۱۲)

(**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और हमें क्या हुवा कि **अल्लाह** पर भरोसा न करें उस ने तो हमारी राहें हमें दिखा दीं और तुम जो हमें सता रहे हो हम ज़रूर इस पर सब्र करेंगे और भरोसा करने वालों को **अल्लाह** ही पर भरोसा चाहिए।) हज़रते सैयदना जुरआ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه बयान करते हैं कि येह आयत पढ़ने से पिस्सूओं से हिफ़ाज़त रेहती है। (موسوعة الامام ابن ابی الدنيا،كتاب التوحيد والتوكُّل، ١٥٠/١، رقم:٢٨)

रिज़्क़ मौत की त़रह ढूंडता है

सरकारे मदीनए मुनव्वरा, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : اِنَّ الرِّزْقَ يَطْلُبُ الْعَبْدَ كَمَا يَطْلُبُهٗ اَجَلُهٗ यानी रोज़ी बन्दे को ऐसे ढूंडती है जैसे उस की मौत उसे ढूंडती है।

(شعب الایمان، الثالث عشر، ۲/ ۷۱، حدیث : ۱۱۹۱)

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीस के तह़्त फ़रमाते हैं : रिज़्क़ की तलाश मौत की तलाश से ज़्यादा क़वी है क्यूंकि मौत उ़म्र ख़त्म हो जाने, पूरी रोज़ी खा लेने के बाद आती है मगर रिज़्क़ हर वक़्त आता रेहता है। मक़्सद येह है कि मौत को तुम तलाश करो या न करो बहर ह़ाल तुम्हें पहुंचेगी, यूंही तुम रिज़्क़ तलाश करो या न करो ज़रूर पहुंचेगा, हां ! रिज़्क़ की तलाश सुन्नत है, मौत की तलाश ममनूअ़, मगर हैं दोनों यक़ीनी। (मिरआतुल मनाजीह़, 7/126)

(ह़िकायत : 38)

रिज़्क़ ख़ुद तलाश में था

अगर हम रिज़्क़ की तंगी पर सब्र से काम लें तो क्या बई़द है कि रिज़्क़ ख़ुद ही हम को तलाश कर रहा हो जैसा कि **ह़ज़रते** सैयदना शैख़ अबू याक़ूब बसरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه एक बार ह़रम शरीफ़ में दस दिन तक भूके रहे, जिस्म में नक़ाहत (यानी कमज़ोरी, *Weakness*) का एह़सास हुवा, दिल में ख़याल आया कि वीराने की जानिब निकल जाऊं, मुम्किन है कुछ रिज़्क़ मिल जाए तो उस से भूक मिट जाएगी। वीराने में पहुंचे तो एक शल्जम रास्ते में मिला मगर वोह सड़ा हुवा था। उठाने को तो उठा लिया मगर अन्दर से त़बीअ़त में परेशानी पैदा हुई

www.dawateislami.net

कि दस रोज़ की भूक के बाद तुम्हारे लिए येह सड़ा हुवा शल्जम बेहतर है या सब्र ? येह सोच कर शल्जम वहीं रख दिया और फिर मस्जिदे ह़राम में लौट आए। थोड़ी देर के बाद एक शख़्स आया और शैख़ के सामने बैठ कर एक थैली खोलने लगा और कहा : येह 500 अशरफ़ियां आप के लिए हैं। शैख़ ने कहा : मेरे लिए क्यूं ? उस ने जवाबन कहा : मैं दस रोज़ पेहले समुन्दरी सफ़र पर था कि हमारा जहाज़ डूबना शुरूअ़ हो गया। तमाम सवारों ने अपने अपने तौ़र पर अलग अलग नज़्रें मानीं कि किसी त़रह़ डूबने से बच जाएं। मैं ने येह अ़ह्द किया कि ज़िन्दा बच जाऊं तो येह पांच सौ अशरफ़ियां ख़ानए काबा में दाख़िल हो कर उस शख़्स की नज़्र करूंगा जिस पर मेरी निगाह पेहले पड़े, और आप ही पेहले शख़्स हैं जिन को मैं ने देखा, लेहाज़ा येह क़बूल कीजिए। शैख़ ने कहा : थैली खोलो ! ताजिर ने थैली खोली तो उस में रोटी, मिस्री, छिले हुवे बादाम और शकरपारे थे। ह़ज़रते सैयदना शैख़ अबू याक़ूब बसरी رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उस में से एक मुठ्ठी भर ली और कहा : ले जाओ ! बक़िया अपने घर वालों में तक़्सीम कर देना, येह मेरी त़रफ़ से उन्हें हदिया है। आप رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : फिर मैं ने अपने आप से कहा : ऐ नफ़्स ! तेरी रोज़ी दस दिन से तेरी त़रफ़ चल कर आ रही है और तू सब्र न करते हुवे उसे वीराने में ढूंडने गया था।

(روض الرياحين ، الحكاية الثامنة والتسعون ، ص ١٣٠)

(ह़िकायत : 39)

गुज़र बसर की क्या सूरत होगी ?

ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते सैयदना हरिम बिन ह़य्यान बसरी رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने ह़ज़रते सैयदना उवैस क़रनी عَلَیْہِ رَحْمَۃُاللہِ الْغَنِی की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की :

आप मुझे कहां रेहाइश इख़्तियार करने का हुक्म फ़रमाते हैं ? आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने मुल्के शाम की त़रफ़ इशारा फ़रमाया (यानी शाम चले जाओ) अ़र्ज़ की : वहां गुज़र बसर की क्या सूरत होगी ? येह सुन कर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : अफ़्सोस है उन दिलों पर ! बिला शुबा उन में (**अल्लाह** पाक पर तवक्कुल के मुआ़मले में) शक दाख़िल हो गया है, लेहाज़ा उन को नसीहत फ़ाइदा नहीं देती । एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : जब तू **अल्लाह** पाक को वकील करने पर राज़ी हो जाएगा तो हर भलाई की सबील (रास्ता) भी पा लेगा ।

(احیاء علوم الدین، کتاب التوحید والتوکُّل، ٤/ ٣٠٢)

मैं तवक्कुल करने वालों के लिए काफ़ी हूं

अल्लाह पाक ने ह़ज़रते सैयदना दावूद عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की त़रफ़ वह़ी फ़रमाई : ऐ दावूद ! जो मुझ से दुआ़ मांगे मैं उस की दुआ़ क़बूल करता हूं, जो मुझ से मदद त़लब करे मैं उस की मदद करता हूं, जो मुझ पर तवक्कुल करे मैं उस की किफ़ायत फ़रमाता हूं, मैं तवक्कुल करने वालों के लिए काफ़ी, मदद त़लब करने वालों का मददगार, फ़रयाद करने वालों का फ़रयादरस और दुआ़ओं का क़बूल करने वाला हूं ।

(المستطرف،الباب العاشر، ١/ ص١١٦)

वज़ीफ़ए इब्राहीमी

ह़ज़रते सैयदना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है कि जब ह़ज़रते सैयदना इब्राहीम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को आग में डाला गया तो

आप عَلٰی نَبِیِّنَاوَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने येह पढ़ा : حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ (अल्लाह हम को बस है और क्या अच्छा कारसाज़ ।)

(موسوعة ابن ابی الدنیا ،کتاب التوحید والتوکُّل،۱/۱۵۱،رقم:۳۱)

صَلُّوْاعَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

तवक्कुल कामयाबी का नुस्ख़ा है

एक शख़्स ने ह़ज़रते सैयदना वह्ब बिन मुनब्बेह यमानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : मुझे कोई ऐसी चीज़ सिखा दीजिए जिस से अल्लाह पाक मुझे नफ़्अ़ अ़त़ा फ़रमाए, फ़रमाया : (1) मौत को कसरत से याद करो (2) उम्मीदें कम रखो (3) और तीसरी चीज़ वोह है कि अगर तुम ने उसे इख़्तियार कर लिया तो इ़बादत करने के साथ साथ अपने मक़्सूद और मुराद को भी पा लोगे, अ़र्ज़ की : वोह क्या है ? फ़रमाया : वोह चीज़ तवक्कुल है । (موسوعة الامام ابن ابی الدنیا ، التوکُّل علی الله ، ۱/۱۶۵ ، رقم : ۵۶)

(ह़िकायत : 40)

तवक्कुल इख़्तियार करने से परेशानी जाती रही

ह़ज़रते सैयदना अबू जल्द رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का बयान है कि मुझे एक अ़जमी शख़्स मिला, उस ने मुझे अपने बादशाह और उस के ज़ुल्म की शिकायत की, मैं ने उसे कहा : क्या मैं तुझे ऐसी बात न बताऊं अगर तू उस पर अ़मल करे और उस के इ़लावा सब कुछ छोड़ दे वोह अ़मल तुझे बादशाह और दीगर लोगों से किफ़ायत करे, उस ने कहा : हां । मैं ने कहा : अपने घर वापस चला जा और अपने हर मुआ़मले को अल्लाह पाक के ह़वाले कर दे, अगर मेरे केहने के मुत़ाबिक़ अ़मल किया तो उस का नतीजा ख़ुद ही देख लेगा ।

www.dawateislami.net

रावी बयान करते हैं फिर वोह शख़्स मुझे मिला तो मेरा शुक्रिया अदा करने लगा और केहने लगा : अल्लाह की क़सम ! उस दिन मैं अपने घर वालों की त़रफ़ वापस गया और अल्लाह पाक की ज़ात पर भरोसा किया तो मुझे मुसलसल खुशी मिलती रही ।

(موسوعة ابن ابی الدنیا ،کتاب التوحید والتوکُّل، ١/١٦٤، رقم:٥٤)

अपने एहलो अ़याल को तवक्कुल पर मजबूर नहीं कर सकते

इन्सान अपनी ज़ात की ह़द तक तवक्कुल इख़्तियार करे, (मगर) एहलो अ़याल के ह़क़ में तवक्कुल करते हुवे उन्हें ख़ाली छोड़ देना या तवक्कुल के नाम पर उन के अख़राजात का एहतेमाम न करते हुवे बैठ जाना ह़राम है और अगर येह उन की हलाकत का सबब बन गया तो उस शख़्स की पकड़ होगी, **मेरे आक़ा** आला ह़ज़रत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن लिखते हैं : अ़याल की कफ़ालत शर्अ़ ने उस पर फ़र्ज़ की, वोह उन को तवक्कुल व تَبَتُّل و صَبر عَلَی الفَاقہ (यानी फ़ाक़े पर सब्र) पर मजबूर नहीं कर सकता, अपनी जान को जितना चाहे कसे मगर उन को ख़ाली छोड़ना उस पर ह़राम है । रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : كَفٰی بِالْمَرْءِ اِثْمًا اَنْ یُضَیِّعَ مَنْ یَقُوْتُ (तर्जमा :) आदमी के लिए येही गुनाह काफ़ी है कि जिस का क़ूत (यानी खिलाना पिलाना) उस के ज़िम्मे है उसे ज़ाएअ़ छोड़े । (ابو داؤد،کتاب الزکوٰۃ ،باب فی صلۃ الرحم، ٢/١٨٤ حدیث:١٦٩٢)

हुज्जतुल इस्लाम इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ लिखते हैं : एहलो अ़याल को भूक की तक्लीफ़ देना जाइज़ नहीं, उन के सामने तौह़ीद की लम्बी चौड़ी गुफ़्तगू करना दुरुस्त है न ही येह केहना दुरुस्त है कि भूका मरना क़ाबिले

रश्क रिज़्क़ है। इस क़िस्म की दीगर बातें करना भी दुरुस्त नहीं क्यूंकि एहलो अ़याल वाले के लिए दुरुस्त येही है कि कमाई करने वाले की त़रह़ तवक्कुल करे जिस त़रह़ अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सैयदना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कमाने के लिए (बाज़ार तशरीफ़ ला कर) तवक्कुल किया था। तवक्कुल करते हुवे एहलो अ़याल से अ़लाह़दा हो कर जंगलों में रेहना या घर में बैठे रेहना कि उन की ज़रूरियात का इन्तेज़ाम न करना पड़े येह ह़राम है क्यूंकि येह चीज़ हलाकत की त़रफ़ ले जा सकती है जिस पर उस की पकड़ है।

(احیاء العلوم، ٣٣٦/٤ ملخصا)

(ह़िकायत : 41)

कल के लिए खाना बचा कर रखना पसन्द न फ़रमाया

हुज़ूरे पुरनूर सैयदुल मुतवक्किलीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने लिए कल का खाना बचा रखना पसन्द न फ़रमाते। एक बार ख़ादिमा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने परिन्दे का गोश्त कि आज तनावुल तो फ़रमाया था, बचा हुवा दूसरे दिन ह़ाज़िर किया, फ़रमाया : اَلَمْ اَنْهَكِ اَنْ تَرْفَعِيْ شَيْئًا لِغَدٍ، فَاِنَّ اللّٰهَ يَاْتِيْ بِرِزْقِ غَدًا क्या हम ने मन्अ़ न फ़रमाया कि कल के लिए कुछ उठा कर न रखना, कल की रोज़ी अल्लाह कल देगा। (مسند ابی یعلیٰ، مسند انس بن مالک ٤٣٣/٣ حدیث:٤٢٠٨)

एहले ख़ाना के लिए साल भर का ख़र्च जम्अ़ फ़रमा देते

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सैयदना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ इरशाद फ़रमाते हैं :

فَكَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُنْفِقُ عَلٰى اَهْلِهٖ مِنْ هٰذَا الْمَالِ نَفَقَةَ سَنَتِهٖ
ثُمَّ يَاْخُذُ مَا بَقِيَ فَيَجْعَلُهٗ مَجْعَلَ مَالِ اللّٰهِ

www.dawateislami.net

रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस माल में से अपने अह्ल के साल भर का नफ़्क़ा निकाल लेते फिर जो बचता उसे **अल्लाह** के माल की जगह सर्फ़ फ़रमाते (यानी सदक़ा फ़रमा देते)।

(بخاری،کتاب الفرائض،باب قول النبی صلی اللہ علیہ وسلم لا نورث ماترکنا صدقۃ،٤/٣١٤حدیث:٦٧٢٨)

(फ़तावा रज़विया, 10/323-324)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

तवक्कुल की बुन्याद चार चीज़ों पर है

एक शख़्स ने ह़ज़रते सैयदना अबू अ़ब्दुर्रह़मान ह़ातिम बिन उ़लवान असम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ख़िदमत में अ़र्ज़ की : आप ने **अल्लाह** पाक पर तवक्कुल की बुन्याद किस चीज़ पर रखी है? फ़रमाया : चार चीज़ों पर : (1) मैं जानता हूं कि मेरा रिज़्क़ कोई और नहीं खा सकता, लेहाज़ा मेरा दिल इस बारे में मुत़्मइन है (2) मैं जानता हूं कि मेरे ह़िस्से का अ़मल कोई और नहीं करेगा, इस लिए मैं अ़मल में मशग़ूल हूं (3) मैं येह भी जानता हूं कि मौत अचानक आएगी, इसी लिए मैं उस की तैयारी में जल्दी करता हूं (4) मैं जानता हूं कि मैं जहां भी होऊं **अल्लाह** पाक मुझे देख रहा है, लेहाज़ा मैं उस से ह़या करता हूं। (المستطرف ، الباب الثلاثون ، ١/٢٤٧)

(ह़िकायत : 42)

आज रोज़ी देने वाला कल भी देगा

इमामुल मुअ़ब्बिरीन ह़ज़रते सैयदना इमाम मुह़म्मद बिन सीरीन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ख़िदमत में एक आदमी ने ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : मेरी मालूमात के मुत़ाबिक़ इस दौर में बसरा शरीफ़ में आप ही अवरअ़ (यानी

www.dawateislami.net

सब से बड़े परहेज़गार) बुज़ुर्ग हैं । फ़रमाया : भाई ! आप को ग़लत़ फ़ेहमी हुई है, आइए मैं अवरअ़ (यानी बड़े परहेज़गार) शख़्स से आप को मिलवाता हूं, चुनान्चे एक रोटी जेब में डाली और उस आदमी को साथ ले कर एक गाऊं पहुंचे, एक घर में दाख़िल हुवे, वहां एक शख़्स के दो नन्हे बच्चे रो रो कर भूक की फ़रियाद कर रहे थे मगर घर में खाने को कुछ न था, वोह उन को समझाते हुवे केह रहा था : प्यारे बच्चो ! मेरा और तुम्हारा ख़ालिक़ो मालिक **अल्लाह** करीम है, उसी ने हमें देखने, बोलने और सुनने की क़ुव्वत बख़्शी है, वोही तमाम जहानों को रोज़ी देने वाला है, जिस ज़ाते करीम ने पैदा फ़रमाया है उस पर कामिल यक़ीन रखो, वोह तुम्हें ज़रूर रिज़्क़ देगा । ह़ज़रते सैयदना इमाम मुह़म्मद बिन सीरीन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने अपने साथ आए हुवे आदमी से फ़रमाया : इस बुज़ुर्ग का **तवक्कुल** देख रहे हो ! अपने बच्चों को **अल्लाह** पाक के बारे में कितनी प्यारी तरबियत दे रहा है । फिर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने जेब से रोटी निकाल कर साहि़बे ख़ाना को पेश कर दी । इतने में ह़ज़रते सैयदना मालिक बिन दीनार رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه तशरीफ़ ले आए और साहि़बे ख़ाना को दो दिरहम पेश करने लगे, उस ने कहा : اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ हमारा आज का रिज़्क़ पहुंच चुका है अब इन दिरहमों की ह़ाजत नहीं । फ़रमाया : रख लीजिए कल काम आ जाएंगे । उस ने क़बूल करने से माज़ेरत चाहते हुवे कहा : जिस रब्बे करीम ने आज रोज़ी दी वोही कल भी अ़त़ा फ़रमाएगा, वोह हमें रोज़ाना ही रिज़्क़ इनायत फ़रमाता है, मेरा उस की ज़ात पर कामिल यक़ीन है ।

(عیون الحکایات ، الحکایۃ الثانیۃ والثلاثون بعد المائۃ، ص ١٥٠)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सब्र व तवक्कुल पाने का नुस्खा

अल्लाह पाक फ़रमाता है :

''اَلَّذِیْنَ صَبَرُوْا وَ عَلٰى رَبِّهِمْ یَتَوَكَّلُوْنَ ﴿۵۹﴾'' (پ۲۱، العنکبوت:۵۹)

(**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** वोह जिन्हों ने सब्र किया और अपने रब ही पर भरोसा रखते हैं) ।

हज़रते सैयदना इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : इस आयत में दो चीज़ें बयान हुईं : (1) **सब्र** (2) **तवक्कुल** । क्यूंकि ज़माने तीन होते हैं : (1) **माज़ी** (यानी गुज़रा हुवा) (2) **हाज़िर** (यानी मौजूदा) (3) **मुस्तक़बिल** (यानी आने वाला), गुज़रे हुवे ज़माने (यानी माज़ी) को कोई नहीं पा सकता और न ही उस में कुछ करने का हुक्म दिया जाता है, रेह गए ज़मानए हाज़िर और मुस्तक़बिल, तो हाज़िर में सब्र करना मुनासिब है और मुस्तक़बिल के लिए तवक्कुल करना, इस तरह हाज़िर में उसे जो भी तक्लीफ़ पहुंचेगी उस पर सब्र करेगा और जिस चीज़ की उसे मुस्तक़बिल में हाजत होगी उस के लिए तवक्कुल करेगा । और येह बात भी जान लो कि सब्र और तवक्कुल वोह ख़ूबियां हैं जो दो चीज़ें जान कर ही हासिल होती हैं : (1) अल्लाह पाक को जान कर (2) ग़ैरुल्लाह को जान कर, तो यूं जो ग़ैरुल्लाह की हक़ीक़त को जान लेगा तो उसे मालूम होगा कि येह सब फ़ना हो जाएगा, इस तरह उस के लिए सब्र करना आसान हो जाएगा, क्यूंकि ख़त्म हो जाने वाली चीज़ पर सब्र करना आसान होता है । और जब वोह अल्लाह पाक की मारेफ़त पाएगा तो येह मालूम होगा कि वोह ज़ात हमेशा बाक़ी रेहने वाली है, उसे उस का रिज़्क़ पहुंचाती रहेगी और अगर उसे कुछ नहीं भी मिलेगा तो वोह उस ज़िन्दा बाक़ी रेहने वाली ज़ात पर तवक्कुल करेगा ।

(التفسیر الکبیر، سورۃ العنکبوت، ۹/ ۷۱، تحت الآیۃ : ۵۹)

www.dawateislami.net

(ह़िकायत : 43)

शेहज़ादी का तवक्कुल

ह़ज़रते सैयदना शैख़ किरमानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه शाही ख़ानदान से तअ़ल्लुक़ रखते थे, लेकिन आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने ज़ोहदो तक़्वा इख़्तियार फ़रमाया हुवा था और दुन्यावी मशाग़िल से बहुत दूर हो चुके थे। आप की एक साह़िबज़ादी थीं जो बहुत ह़सीनो जमील और नेक व परहेज़गार थीं। एक दिन उस साह़िबज़ादी के लिए बादशाहे किरमान ने निकाह़ का पैग़ाम भेजा। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه येह पसन्द न फ़रमाते थे कि मलिका बन कर मेरी बेटी दुन्या की त़रफ़ माइल हो। इस लिए आप ने केहला भेजा कि मुझे जवाब के लिए तीन रोज़ की मोहलत दें। इस दौरान आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه मस्जिद मस्जिद घूम कर किसी सालेह़ इन्सान को तलाश करने लगे। दौराने तलाश एक नौजवान पर आप की निगाह पड़ी जिस के चेहरे पर इबादत व परहेज़गारी का नूर चमक रहा था। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने उस से पूछा : "तुम्हारी शादी हो चुकी है ?" उस ने नफ़ी (नहीं–ना) में जवाब दिया। फिर पूछा : "क्या ऐसी लड़की से निकाह़ करना चाहते हो जो क़ुरआने मजीद पढ़ती है, नमाज़ रोज़े की पाबन्द है, ख़ूबसूरत, पाक बाज़ और नेक है।" उस ने कहा : "मैं तो एक ग़रीब शख़्स हूं भला मुझ से इन सिफ़ात वाली लड़की का रिश्ता कौन करेगा ?" फ़रमाया : "मैं करता हूं, येह दराहिम लो और एक दिरहम की रोटी, एक दिरहम का सालन और एक दिरहम की ख़ुश्बू ख़रीद लाओ।" नौजवान वोह चीज़ें ले आया और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने अपनी साह़िबज़ादी का निकाह़ उस पारसा नौजवान के साथ कर दिया। साह़िबज़ादी जब रुख़्सत हो कर शौहर के घर आई तो उस ने देखा कि घर में पानी की एक सुराह़ी के सिवा कुछ नहीं है और उस सुराह़ी पर एक रोटी

www.dawateislami.net

रखी हुई देखी। पूछा : येह रोटी कैसी है ? शौहर ने जवाब दिया : येह कल की बासी रोटी है, मैं ने इफ़्तार के लिए रख ली थी। येह सुन कर केहने लगीं कि मुझे मेरे घर छोड़ आइए। नौजवान ने कहा : मुझे तो पेहले ही अन्देशा था कि शैख़ किरमानी की बेटी मुझ जैसे ग़रीब इन्सान के घर नहीं रुक सकती। लड़की ने पलट कर कहा : मैं आप की मुफ़्लिसी के बाइस नहीं लौट रही हूं बल्कि इस लिए कि मुझे आप का तवक्कुल कमज़ोर नज़र आ रहा है, इसी लिए मुझे अपने वालिद पर हैरत है कि उन्हों ने आप को पाकीज़ा ख़स्लत, अफ़ीफ़ और सालेह कैसे कहा जबकि आप का **अल्लाह** पाक पर भरोसे का येह हाल है कि रोटी बचा कर रखते हैं। येह बातें सुन कर नौजवान बहुत मुतास्सिर हुवा और नदामत का इज़्हार किया। लड़की ने फिर कहा : मैं ऐसे घर में नहीं रुक सकती जहां एक वक़्त की ख़ूराक जम्अ़ कर के रखी हो, अब यहां मैं रहूंगी या रोटी ! येह सुनते ही नौजवान फ़ौरन बाहर निकला और रोटी ख़ैरात कर दी।

(روض الرياحين، الثانية والتسعون بعد المائة ، ص ١٩٢)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! मुतवक्किलीन की भी क्या ख़ूब अदाएं होती हैं। शेहज़ादी होने के बा वुजूद ऐसा ज़बरदस्त **तवक्कुल** कि कल के लिए खाना बचाना गवारा ही नहीं ! येह सब यक़ीने कामिल की बहारें हैं कि जिस **अल्लाह** पाक ने आज खिलाया है वोह कल भी खिलाने पर यक़ीनन क़ादिर है। चरिन्दे परिन्दे वग़ैरा कौन सा बचा कर रखते हैं ! एक वक़्त का खा लेने के बाद दूसरे वक़्त के लिए बचा कर रखना उन की फ़ित्रत में ही नहीं। मुर्ग़ी का तवक्कुल मुलाहज़ा हो, उस को पानी दीजिए। ह़स्बे ज़रूरत पी चुकने के बाद प्याले पर पाउं रख कर पानी बहा देगी। गोया येह **ख़ामोश मुबल्लिग़ा** है ! और हमें

नसीह़त कर रही है कि ऐ लोगो ! बरसों का जम्अ़ कर लेने के बा वुजूद भी तुम्हें क़रार नहीं आता ! जबकि मैं एक बार पी लेने के बाद दोबारा के लिए बे फ़िक्र हो जाती हूं कि जिस ने अभी पानी पिलाया है वोह बाद में भी पिला देगा ।

(ह़िकायत : 44)

मुर्ग़ी की कबूतर को नसीह़त

शैख़े त़रीक़त, अमीरे एहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने एक मदनी मुज़ाकरे में मुर्ग़ी और कबूतर का येह सबक़ आमोज़ मुकालमा इंगलिश ज़बान में सुनाया : (तर्जमा) "एक कबूतर ना शुक्री के अल्फ़ाज़ केह रहा था कि मैं क्या करूं, हमारा कुम्बा दो अफ़राद पर मुश्तमिल है लेकिन हमारे पास ख़ूराक की ज़्यादा मिक़्दार नहीं है । येह शिक्वा सुन कर मुर्ग़ी बोली : ऐ बे वुक़ूफ़ परिन्दे ! ना शुक्री मत कर, मेरा ख़ानदान दस अफ़राद पर मुश्तमिल है मगर हम तो पुर सुकून ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं ।"

प्यारे इस्लामी भाइयो ! फ़क़्रो फ़ाक़ा और तंगी व मोह़ताजी का रोना रोते रेहना सरासर नादानी और बे वुक़ूफ़ी है । कस्बे ह़लाल के लिए कोशिश ज़रूर करनी चाहिए लेकिन ना शुक्री और ह़िर्स व लालच का शिकार भी नहीं होना चाहिए । मज़्कूरा बाला फ़र्ज़ी ह़िकायत में मुर्ग़ी ने कबूतर को ख़ूब नसीह़त की । हमें भी उस बे ज़बान से सबक़ ह़ासिल करते हुवे शिक्वा शिकायत करने के बजाए तवक्कुल और क़नाअ़त की दौलत को इख़्तियार करना चाहिए ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अस्बाब पर ही मुत़्मइन न हो जाए

ह़ज़रते सैयदना अह़मद बिन अ़ली बिन ह़जर अ़स्क़लानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : जमहूर उ़लमा ए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने फ़रमाया : तवक्कुल इस त़रह़ ह़ासिल होता है कि **अल्लाह** पाक के किए हुवे वादे पर कामिल भरोसा हो, और इस बात पर कामिल यक़ीन हो कि जो फ़ैसला **अल्लाह** करीम की त़रफ़ से किया हुवा है, वोह ज़रूर होगा। हां, बक़दरे ह़ाजत रिज़्क़ की तलाश में सुन्नत की पैरवी न छोड़े, दुश्मन से बचाव के लिए अस्लहे़ की तैयारी और मालो अस्बाब की ह़िफ़ाज़त के लिए दरवाज़े बन्द करना न छोड़े। इसी त़रह़ दीगर बचाव के त़रीक़े, तमाम एह़तियात़ी तदाबीर इख़्तियार करे, मगर येह ज़रूरी है कि इन सब अस्बाब ही पर मुत़्मइन न हो जाए, बल्कि येह अ़क़ीदा हो कि येह अस्बाब अज़ खुद न कोई फ़ाइदा पहुंचा सकते हैं, न किसी क़िस्म का कोई नुक़्सान दूर कर सकते हैं, बल्कि सबब व मुसब्बब **अल्लाह** पाक की त़रफ़ से हैं और सब उमूर उसी के इरादे पर मौक़ूफ़ हैं। (यानी वोह जो चाहता है वोही होता है।) हां ! जब बन्दे का झुकाव अस्बाब की त़रफ़ हो जाए तो उस के तवक्कुल में कमी आ जाती है। (فتح الباری، کتاب الرقاق، ۱۲/ ۳۵۰، تحت الحدیث : ۶۴۷۱ ملخصا)

अल्लाह करीम भूल से पाक है

ह़ज़रते इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه लिखते हैं : तवक्कुल इस त़रह़ पैदा होता है कि बन्दा रिज़्क़ और दीगर ज़रूरियात के बारे में खुदाए पाक के ज़ामिन और कफ़ील होने का तसव्वुर रखे और खुदा के कामिल इ़ल्म, उस की क़ुदरते कामिला का तसव्वुर करे और इस बात पर यक़ीन रखे कि खुदा तआ़ला ख़िलाफ़े वादा, भूल, इ़ज्ज़ और हर नुक़्स से पाक है, जब हमेशा ऐसा तसव्वुर ज़ेहन में रखेगा तो ज़रूर उसे रिज़्क़ के बारे में रब्बे करीम पर तवक्कुल की सआ़दत नसीब हो जाएगी। (मिन्हाजुल आ़बेदीन, स. 289)

www.dawateislami.net

(हिकायत : 45)

हम नहीं जानते कि हमारे ह़क़ में क्या बेहतर है

एक आ़बिद के मुतअ़ल्लिक़ मन्क़ूल है कि वोह रब्बे पाक से येह सवाल किया करता था कि उसे इब्लीस लईन दिखाया जाए, **अल्लाह** की त़रफ़ से येही जवाब मिलता था कि इस ख़याल को छोड़ और आ़फ़िय्यत व अम्न की दुआ़ किया कर, मगर वोह अपने इसी ख़याल पर मुसिर (यानी इसरार करता) था। आख़िर एक रोज़ **अल्लाह** पाक ने इब्लीस को उस आ़बिद पर ज़ाहिर कर दिया, जब आ़बिद ने इब्लीस को देखा तो उसे मारने का इरादा किया। इब्लीस ने कहा : अगर तू ने सौ साल ज़िन्दा न रेहना होता तो मैं तुझे हलाक कर देता और तुझे सख़्त सज़ा देता। आ़बिद 100 साल ज़िन्दा रेहने का सुन कर धोके में पड़ गया और दिल में केहने लगा मेरी उ़म्र बहुत है, अभी आज़ादी से गुनाह करता हूं, आख़िर वक़्त पर तौबा कर लूंगा, चुनान्चे वोह गुनाहों में मुब्तला हो गया, इ़बादत तर्क कर दी और हलाकत में जा पड़ा। (मिन्हाजुल आ़बेदीन, स. 113)

अपने तमाम काम अल्लाह के ह़वाले कर दो !

अल्लाह पाक फ़रमाता है :

“وَتَوَكَّلْ عَلَى الْعَزِيْزِ الرَّحِيْمِ ﴿۲۱۷﴾” (پ۱۹، الشعراء:۲۱۷)

(**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और उस पर भरोसा करो जो इ़ज़्ज़त वाला मेहर वाला है)

ह़ज़रते अ़ल्लामा सैयद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه इस आयत के तह़्त लिखते हैं : यानी तुम अपने तमाम काम उस को तफ़्वीज़ (यानी सिपुर्द) करो। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 697)

अपना मुआ़मला अल्लाह करीम के ह़वाले करने का फ़ाइदा

ह़ज़रते इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه लिखते हैं : जब तुम अपना मुआ़मला **अल्लाह** पाक के सिपुर्द कर दोगे और उस से सवाल करोगे कि वोह तुम्हारे लिए ऐसी शै का इन्तेख़ाब करे जिस में तुम्हारी बेहतरी हो तो ज़रूर तुम्हें ख़ैर और दुरुस्ती ही नसीब होगी और तुम नेक काम से ही हमकिनार होगे । **अल्लाह** पाक ने अपने एक सालेह़ बन्दे के अल्फ़ाज़ नक़्ल करते हुवे फ़रमाया : وَ اُفَوِّضُ اَمْرِیْۤ اِلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بَصِیْرٌۢ بِالْعِبَادِ ﴿۴۴﴾ فَوَقٰىهُ اللّٰهُ سَیِّاٰتِ مَا مَكَرُوْا وَ حَاقَ بِاٰلِ فِرْعَوْنَ سُوْٓءُ الْعَذَابِ ﴿۴۵﴾ (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और मैं अपने काम **अल्लाह** को सोंपता हूं बेशक **अल्लाह** बन्दों को देखता है, तो **अल्लाह** ने उसे बचा लिया उन के मक्र की बुराइयों से और फ़िरऔ़न वालों को बुरे अ़ज़ाब ने आ घेरा । (پ ۲۴، المؤمن، ۴۴، ۴۵)

तुम देखते नहीं कि रब्बे करीम ने किस वज़ाह़त से अपने मुआ़मलात उस के ह़वाले करने पर ह़िफ़ाज़त, दुश्मनों के ख़िलाफ़ इमदाद और बन्दे के अपनी मुराद में कामयाब होने का ज़िक्र फ़रमाया है ! इस में ख़ूब ग़ौर करो, **अल्लाह** तआ़ला तुम्हें भलाई की तौफ़ीक़ बख़्शे । (मिन्हाजुल आ़बेदीन, स. 114)

तफ़्वीज़ की अक़्साम

इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه मज़ीद लिखते हैं मक़ामे तफ़्वीज़ की तफ़्सील येह है कि मुरादें तीन क़िस्म की हैं : **एक** वोह मुराद जिस को तुम यक़ीनन और क़त्अ़न बुरी और ख़राब समझते हो, तुम्हें इस के बुरा होने में ज़रा शक नहीं होता, जैसे जहन्नम और अ़ज़ाब और अफ़्आ़ल में कुफ़्र और बिदअ़त और मासियत वग़ैरा । इन उमूरे मज़्कूरा का इरादा करने की तो क़त्अ़न कोई गुन्जाइश और इजाज़त नहीं । **दूसरी :** वोह मुराद जिस के अच्छा और बेहतर होने का तुम्हें

मुकम्मल यक़ीन है, जैसे जन्नत, ईमान और सुन्नत वग़ैरा, इन उमूर का इरादा करना ज़रूरी और लाज़मी है, यहां तफ़्वीज़ जाइज़ नहीं। इस लिए कि इन उमूर में कोई ख़त़रा नहीं और न ही इन के बेहतर और अच्छा होने में कोई शक्को शुबा है। **तीसरी :** वोह शै है जिस के मुतअ़ल्लिक़ तुम ह़तमी त़ौर पर नहीं जानते कि उस में तुम्हारे लिए भलाई है या ख़राबी ! फ़ाइदा है या नुक़्सान ! जैसे जाइज़ काम, इन कामों का तुम यक़ीनी और क़त़ई इरादा नहीं कर सकते तो ऐसे कामों का इरादा करते वक़्त اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ ज़रूर कहा जाए, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ कहे बग़ैर इन कामों का इरादा दुरुस्त नहीं बल्कि मज़्मूम होगा। जिस से शरअ़न रोका गया है, तो इस तेह़क़ीक़ की रू से तफ़्वीज़ का मक़ाम हर वोह शै है जिस के अन्दर तुम्हारे लिए कोई ख़त़रा हो, और तुम्हें इस के बेहतर होने का यक़ीने कामिल न हो। (मिन्हाजुल आ़बेदीन, स. 114)

तफ़्वीज़ क्यूं ज़रूरी है ?

मिन्हाजुल आ़बेदीन में है : ख़त़रा दो त़रह़ का होता है : **एक** ख़त़रए शक कि शायद येह काम होगा या नहीं ! और शायद मैं उस तक पहुंच सकूं या नहीं ! इसी ख़त़रए शक के बाइस اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ केहना ज़रूरी है, **दूसरा** ख़त़रए फ़साद कि तुम्हें येह यक़ीन न हो कि उस में तुम्हारे लिए भलाई और बेहतरी है, इस ख़त़रे की बिना पर तफ़्वीज़ ज़रूरी है। (मिन्हाजुल आ़बेदीन, स. 115)

(ह़िकायत : 46)

अपने बीवी बच्चे को रब के ह़वाले कर दिया

तफ़्सीरे नईमी में है : ह़ज़रते सैयदना इब्राहीम عَلٰی نَبِیِّنَاوَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُوَالسَّلَام की ज़ौजा ह़ज़रते सैयदतुना सारा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने एक दिन आप عَلَیْہِ السَّلَام से अ़र्ज़ की, कि हमारे घर में अल्लाह पाक का दिया बहुत कुछ है मगर फ़रज़न्द नहीं

आप (मेरी बांदी) हाजरा से निकाह़ कर लीजिए शायद उन से ही कोई बच्चा पैदा हो, आप عَلَیْہِ السَّلَام ने निकाह़ कर लिया, ह़ज़रते हाजरा के शिकम से ह़ज़रते सैयदना इस्माईल عَلَیْہِ السَّلَام पैदा हुवे, ह़ज़रते सैयदतुना सारा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا निहायत मह़ब्बत से उन्हें पालती थीं और ह़ज़रते सैयदतुना हाजरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا सिर्फ़ दूध पिलाती थीं मगर ह़ज़रते सैयदना इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام ह़ज़रते सैयदतुना सारा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا की तक्लीफ़ के ख़याल से फ़रज़न्द को गोद भी न लेते थे **अल्लाह** पाक की शान कि एक दिन ह़ज़रते सैयदना इस्माईल عَلَیْہِ السَّلَام को तन्हा हुजरे में लेटा हुवा देख कर मह़ब्बते पिदरी से गोद में ले लिया, उन के रुख़सार और पेशानी को बोसा दे रहे थे कि ह़ज़रते सैयदतुना सारा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا आ गईं और उन पर ग़ैरत ने इतना ग़ल्बा किया कि कहा : इसी वक़्त इस को और इस की मां को मेरे घर से निकाल कर बे आबो दाना जंगल में छोड़ आइए। आप عَلَیْہِ السَّلَام ने बहुत समझाया मगर न मानीं और **अल्लाह** पाक की जानिब से भी वह़ी नाज़िल हो गई कि इन की बात मान लीजिए कि इस में राज़ है।

ह़ज़रते सैयदना इब्राहीम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام इन दोनों को सवारियों पर ले कर रवाना हुवे और मन्ज़िल ब मन्ज़िल वहां पहुंचे जहां आज ख़ानए काबा है, हुक्मे इलाही पहुंचा कि इन दोनों को यहां ही छोड़ दो और हमारे सिपुर्द कर जाओ। ज़म ज़म के मक़ाम पर एक दरख़्त था और बाक़ी सब जंगल बयाबान था। न वहां साया न दाना पानी, न आदमी, आप एक टोकरी ख़ुर्मा (खजूरें) और कुछ रोटी के टुकड़े, एक मश्कीज़े में पानी ह़ज़रते सैयदतुना हाजरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا के ह़वाले कर के लौट आए। ह़ज़रते सैयदतुना हाजरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا पीछे दौड़ीं और केहने लगीं कि मुझ को इस बे आबो दाना जंगल में कहां छोड़ जाते हो ? जहां न कोई ग़मख़्वार है न कोई मकाने सायादार ! आप ने कोई जवाब न दिया। आख़िर कार ह़ज़रते सैयदतुना हाजरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا बोलीं कि क्या आप को **अल्लाह** पाक ने हुक्म दिया है ? सर के इशारे से फ़रमाया : हां ! तब आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया कि फिर मुझे कुछ परवाह नहीं ! मेरा **अल्लाह** करीम मुझे ज़ाएअ़ न

www.dawateislami.net

करेगा। वापस लौटीं और अपने बच्चे को गोद में ले कर अकेली बैठ गईं और दूध पिलाने लगीं, ह़ज़रते सैयदना इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام पहाड़ की आड़ में आ कर रुके और काबे की त़रफ़ मुंह कर के हाथ उठा कर दुआ़ की :

رَبَّنَآ اِنِّيْٓ اَسْكَنْتُ مِنْ ذُرِّيَّتِيْ بِوَادٍ غَيْرِ ذِيْ زَرْعٍ عِنْدَ بَيْتِكَ الْمُحَرَّمِ (پ:۱۳،ابـــراهيـــم:۳۷)

(**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ मेरे रब मैं ने अपनी कुछ औलाद एक नाले में बसाई जिस में खेती नहीं होती, तेरे ह़ुरमत वाले घर के पास) जब तक ख़ुर्मा और पानी रहा ह़ज़रते सैयदतुना हाजरा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا इत़्मीनान से गुज़र करतीं और फ़रज़न्द को दूध पिलाती रहीं मगर पानी ख़त्म होने पर प्यास ने सताया। लख़्ते जिगर ने बे इख़्तियार रोना शुरूअ़ कर दिया तो अपनी तो इतनी फ़िक्र न हुई मगर नूरे नज़र की बे क़रारी देखी न गई। उठीं और सफ़ा पर चढ़ीं कि शायद कहीं पानी का निशान मिले मगर न मिला, मायूस हो कर नीचे उतरीं, मरवा पहाड़ की त़रफ़ रवाना हुईं मगर नज़र फ़रज़न्द पर थी, राह के कुछ ह़िस्से में फ़रज़न्द से आड़ हो गई तो आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا उसे जल्द तै़ करने के लिए दौड़ कर चलीं उस आड़ से निकल जाने पर फिर आहिस्ता चलीं यहां तक कि मरवा पर पहुंच गईं वहां चढ़ कर भी पानी कहीं न देखा फिर सफ़ा की त़रफ़ रवाना हुईं। इसी त़रह़ सात चक्कर किए, हर दफ़्अ़ा दरमियान में दौड़तीं थीं, अख़ीर बार मरवा पर चढ़ीं तो एक हैबत नाक आवाज़ कान में पड़ी। डर कर फ़रज़न्द के पास आईं देखा कि वोह रोते हुवे अपनी एड़ियां ज़मीन पर रगड़ रहे हैं जिस से शीरीं पानी का चश्मा जारी है (एक रिवायत के मुत़ाबिक़ आबे ज़मज़म ह़ज़रते सैयदना जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام के पर मारने की वज्ह से जारी हुवा था।)

(مرقاة المفاتيح، كتاب المناسك، باب رمى الجمار،۵/۱۷،٥ تحت الحديث:٢٦٢٤)

बहुत ख़ुश हुईं और उस के गिर्द मिट्टी जम्अ़ कर के फ़रमाने लगीं : **يَا مَاءُ زَمْ زَمْ** यानी ऐ पानी ठेहर ठेहर। इस लिए इस का नाम आबे ज़मज़म हुवा, ह़दीस शरीफ़ में आया है कि अगर ह़ज़रते सैयदतुना हाजरा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا उस पानी को घेर न देती तो येह चश्मा बन जाता। आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا वोह पानी ख़ुद पीतीं और अपने

पिसर को भी पिलाती थीं, इसी पर बहुत रोज़ तक गुज़र अवक़ात करती रहीं क्यूंकि इस पानी में गिज़ाइयत भी है। इत्तेफ़ाक़न यमन की एक क़ौम जुरहुम किसी त़रह़ इस त़रफ़ आ पहुंची और मक़ामे कदा में उतरी, उस ने देखा कि कुछ फ़ासिले पर परिन्दे बहुत उड़ रहे हैं, केहने लगे : यहां पानी ज़रूर है क्यूंकि हम यहां बारहा आए कभी परिन्दे नहीं देखे, उन्हों ने तेह़क़ीक़ के लिए अपने में से एक शख़्स भेजा, उस ने ख़बर दी कि यहां पानी का ग़ैबी चश्मा है जिस के पास एक बीबी अपने फ़रज़न्द को लिए बैठी है। येह सुन कर वोह ह़ज़रते सैयदतुना हाजरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवे और बोले कि अगर इजाज़त हो तो हम यहां ही रेहने लगें चूंकि ह़ज़रते सैयदतुना हाजरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا भी तन्हाई में घबरा गई थीं, इस शर्त़ पर इजाज़त दे दी कि इस पानी पर किसी का ह़क़ न हो यानी इस्तेमाल तो सब करें मगर ह़क़ मेरा हो। उन सब ने येह शर्त़ क़बूल कर के वहां ख़ुद भी रेहाइश इख़्तियार कर ली और अपने दूसरे अहाली मवाली (अ़ज़ीज़ों) को भी बुला लिया जिस से यहां एक अच्छी ख़ासी बस्ती बस गई, ह़ज़रते सैयदना इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام ने उस क़ौम से अ़रबी ज़बान सीखी, आप عَلَيْهِ السَّلَام जवान हुवे तो जमाअ़ते जुरहुम के सरदार ने आप عَلَيْهِ السَّلَام से अपनी बेटी का निकाह़ कर दिया। (तफ़्सीरे नईमी, जि. 1, स. 642 ता 643 मुलख़्ख़सन)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(ह़िकायत : 47)

बेटे ने पढ़ना शुरूअ़ कर दिया

इमाम अ़ब्दुल वह्हाब शारानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه लिखते हैं : मेरे बेटे अ़ब्दुर्रह़मान को त़लबे इल्म का बिलकुल शौक़ न था जिस की वज्ह से मुझे सख़्त परेशानी थी फिर **अल्लाह** पाक ने मेरे दिल में येह बात डाली कि मैं इस के मुआ़मले को **अल्लाह** पाक के सिपुर्द कर दूं चुनान्चे मैं ने ऐसा ही किया तो

वोह उसी रात से मेरे कहे बग़ैर ख़ुद ब ख़ुद इल्म के मुत़ालए में मसरूफ़ हो गया और उसी रात उसे इल्म की चाशनी ह़ासिल हो गई और उस की समझ उन त़लबा से बढ़ गई जो उस से कई साल पेहले त़लबे इल्म में मशग़ूल थे चुनान्चे **अल्लाह** पाक की त़रफ़ इस मुआ़मले को सिपुर्द करने से **अल्लाह** करीम ने मुझे उस मशक़्क़त से राह़त अ़त़ा फ़रमाई जिस में मैं मुब्तला था, **अल्लाह** पाक उसे उन उ़लमा में से कर दे जो अपने इल्म पर अ़मल करते हैं, आमीन। (تنبیہ المغترین،ص۲۲)

मुझे फ़िल्मी एक्टर बनने का शौक़ था

प्यारे इस्लामी भाइयो ! तवक्कुल और इस जैसी दीगर ख़ूबियों का मालिक बनने के लिए दावते इस्लामी के मदनी माह़ौल से वाबस्ता हो जाइए, पंजाब के शेहर कुमालिया के मुज़ाफ़ाती अ़लाक़े से तअ़ल्लुक़ रखने वाले इस्लामी भाई का बयान (ज़रूरतन तरमीम–तब्दीली के बाद) पेशे ख़िदमत है कि दावते इस्लामी के मदनी माह़ौल से वाबस्ता होने से पेहले मैं गुनाहों की दलदल में फंसा हुवा था। दोस्तों के साथ मिल कर फ़िल्में ड्रामे देखना और दीगर न करने के कामों में मसरूफ़ रेहना मेरी आ़दत में शामिल था। एफ़ ए (F.A) का इम्तेह़ान पास करने के बाद एक इश्तेहार नज़र से गुज़रा जिस में फ़नकार लड़कों के लिए फ़िल्मों में काम करने का मौक़अ़ फ़राहम किया जा रहा था, मैं ने भी उन लोगों से राबेत़ा किया और ऑडीशन (Audition) (एक त़रह़ का इन्टरव्यू) देने चला गया, उन्हों ने कहा : एक्टिंग (Acting) कर के दिखाओ, मैं ने अपने पास से चन्द डाईलॉग (Dialogue) बोले जिस पर ख़ूब दाद भी वुसूल हुई और मुझे सिलेक्ट (Select) भी कर लिया गया, मेरी ख़ुशी का ठिकाना न था कि अब मैं फ़िल्मी एक्टर बनने वाला हूं। मैं ने फ़ोर्म और दीगर काग़ज़ात जम्अ़ करवा दिए और घर लौट आया, अब सिर्फ़ एन्ट्री फ़ीस जम्अ़ करवाना बाक़ी थी लेकिन क़ुदरत को कुछ और ही मन्ज़ूर था, हुवा यूं कि मुझे मज़हबी मह़ाफ़िल में जाने से भी

दिलचस्पी बहर ह़ाल थी, एक दोस्त से सुना कि दावते इस्लामी का हमारे शेहर कुमालिया में सुन्नतों भरा इज्तेमाअ़ होता है तो मैं ने अपने एक दोस्त के साथ उस में शिर्कत की, बयान मौत से मुतअ़ल्लिक़ था, जूं जूं बयान सुनता गया मेरे दिल की दुन्या में मदनी इन्क़िलाब बरपा होता गया, इज्तेमाई त़ौर पर होने वाले **"ज़िक्रुल्लाह"** ने दिल को मज़ीद रूह़ानी सुकून दिया, फिर दुआ़ ने तो मेरे दिल को यकसर बदल कर रख दिया, मैं ने गुनाहों बिल ख़ुसूस फ़िल्म में अदाकारी से पक्की सच्ची तौबा की और नेकियों की पक्की निय्यत कर ली। अब मैं हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तेमाअ़ की छुट्टी नहीं करता था चाहे कितना ही ज़रूरी काम क्यूं न होता। मैं ने अपने सर पर सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़ भी सजा लिया और नेकी की दावत की धूमें मचाने में अपना ह़िस्सा डालने लगा। मेरी वज्ह से मेरे घर का माह़ौल भी तब्दील हुवा। B.Com करने के बाद मैं ने जामेअ़तुल मदीना में दाख़िला ले लिया, पेहले पहल वालिद साह़िब फ़रमाते थे कि मज़ीद पढ़ो या नौकरी करो ! फिर दर्से निज़ामी की इजाज़त दे दी, इस की सबील यूं बनी कि उन्हों ने दावते इस्लामी के मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में आ़शिक़ाने रसूल के साथ दस दिन का तरबियती एतेकाफ़ किया, वहां उन का ज़ेह्न बना और उन्हों ने मुझे जामेअ़तुल मदीना में पढ़ने की इजाज़त दे दी। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इल्मे दीन पढ़ने के साथ साथ मदनी काम करने का भी मौक़अ़ मिला, डिवीज़न सत़ह़ पर शोबए तालीम की ज़िम्मेदारी भी मिली, अपने गाऊं में मदनी चैनल आ़म करने में इस्लामी भाइयों के साथ मिल कर कोशिश करने की सआ़दत भी पाई। पढ़ने वालों से इल्तेजा है कि आप भी दावते इस्लामी के मदनी माह़ौल में आ जाएं, दोनों जहान में कामयाबी नसीब होगी اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ मेरे लिए भी मदनी माह़ौल में इस्तेक़ामत की दुआ़ कीजिए।

इसी माह़ौल ने अदना को आला कर दिया देखो
अन्धेरा ही अन्धेरा था उजाला कर दिया देखो

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

खुलासए किताब

❁ तवक्कुल का माना है : **अल्लाह** पाक पर एतेमाद करना और कामों को उस के सिपुर्द कर देना

❁ तवक्कुल फ़र्ज़े ऐ़न है और इल्मे तवक्कुल सीखना भी फ़र्ज़े ऐ़न है

❁ अस्बाब इख़्तियार करना तवक्कुल के ख़िलाफ़ नहीं

❁ अस्बाब तर्क कर के महज़ ख़ालिकुल अस्बाब (यानी रब्बे करीम) पर भरोसा रखना ख़वास का तवक्कुल है

❁ तवक्कुल में कसीर फ़वाइद और तवक्कुल न करने में बहुत से नुक़्सानात हैं

❁ इन्सान अपना रिज़्क़ पाए बग़ैर मरेगा नहीं

❁ रब्बे करीम जिस को चाहे ज़्यादा रिज़्क़ दे जिसे चाहे तंगदस्त कर दे

❁ सिर्फ़ रिज़्क़ ही नहीं बल्कि दीगर मुआ़मलात में भी तवक्कुल रखना चाहिए

❁ ताक़त होते हुवे काम काज छोड़ कर रिज़्क़ के इन्तेज़ार में बैठ जाना जहालत है

❁ रिज़्क़ अ़क़्ल से नहीं क़िस्मत से मिलता है

❁ रिज़्क़ उतना ही मिलेगा जितना क़िस्मत में लिखा है ह़राम त़रीक़े इख़्तियार कर के खुद को हलाकत पर पेश न किया जाए

❁ एहलो अ़याल को उन का ख़र्च देना होगा उन्हें तवक्कुल पर मजबूर नहीं कर सकते ।

مآخذ و مراجع

نام کتاب	مطبوعہ	نام کتاب	مطبوعہ
ترجمۂ کنز الایمان	مکتبۃ المدینہ، کراچی	مرآۃ المناجیح	ضیاء القرآن، پبلی کیشنز، لاہور
تفسیر کبیر	دار احیاء التراث العربی، بیروت ۱۴۲۰ھ	بریقۂ محمودیہ	مطبۃ الحلبی، ۱۳۴۸ھ
درمنثور	دار الفکر، بیروت ۱۴۰۳ھ	دلائل النبوۃ لابی نعیم	مکتبۃ العصریہ بیروت ۱۴۳۰ھ
روح البیان	دار احیاء التراث العربی، بیروت ۱۴۰۵ھ	دلائل النبوۃ للبیہقی	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۳ھ
تفسیر صاوی	کراچی ۱۴۲۱ھ	سعادۃ الدارین	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۲ھ
تفسیر خزائن العرفان	مکتبۃ المدینہ، کراچی	الشفا	مرکز اہلسنت برکات رضا ہند ۱۴۲۳ھ
تفسیر نعیمی	ضیاء القرآن پبلی کیشنز، لاہور	احیاء علوم الدین	دار صادر، بیروت
بخاری	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۹ھ	عیون الحکایات	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۴ھ
مسلم	دار ابن حزم، بیروت ۱۴۱۹ھ	قوت القلوب	دار الکتب العلمیہ، بیروت، ۱۴۲۶ھ
سنن الترمذی	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۴ھ	تنبیہ المغترین	دار الکتب المعرفۃ، بیروت ۱۴۲۵ھ
سنن ابی داود	دار احیاء التراث، بیروت ۱۴۲۱ھ	تذکرۃ الاولیاء	انتشارات گنجینہ ۱۳۷۹ھ
سنن ابن ماجہ	دار المعرفۃ، بیروت ۱۴۲۰ھ	حیات اعلیٰ حضرت	دہلی (ہند)
مسند احمد	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۴ھ	روض الریاحین	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۱ھ
حلیۃ الاولیاء	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۹ھ	تذکرۃ الواعظین	مکتبۃ الحنفیہ، کوئٹہ
شعب الایمان	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۱ھ	المستطرف	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۹ھ
اتحاف الخیرۃ المہرۃ	مکتبۃ الرشد، الریاض، ۱۴۱۹ھ	منہاج العابدین	دار الکتب العلمیہ، بیروت
فردوس الاخبار	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۸ھ	فتاوی ہندیہ	دار الفکر، بیروت ۱۴۰۳ھ
مسند ابی یعلی	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۸ھ	الحاوی للفتاوی	دار الفکر، بیروت ۱۴۰۳ھ
الموسوعۃ لابن ابی الدنیا	مکتبۃ العصریہ بیروت ۱۴۲۶ھ	فتاوی رضویہ	رضا فاؤنڈیشن، لاہور ۱۴۱۸ھ
تاریخ مدینہ دمشق	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۵ھ	بہار شریعت	مکتبۃ المدینہ کراچی
الجامع الصغیر	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۵ھ	حیاۃ الحیوان الکبری	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۵ھ
فتح الباری	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۰ھ	صید الخاطر	مکتبۃ نزار مصطفی، ۱۴۲۰ھ
تفسیر صراط الجنان	مکتبۃ المدینہ کراچی	فضائل دعا	مکتبۃ المدینہ کراچی
فیض القدیر	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۲ھ	فیضان سنت	مکتبۃ المدینہ کراچی
مرقاۃ المفاتیح	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۴ھ	☆☆☆	☆☆☆

फ़ेहरिस्त

उ़न्वान	सफ़्हा	उ़न्वान	सफ़्हा
हाथ की सूजन जाती रही	3	सूई, क़ैंची, डोल और रस्सी साथ रखते	26
मुझे अपने आक़ा पर भरोसा है (ह़िकायत)	3	जान ख़त़रे में डालना जाइज़ नहीं	26
टेन्शन का इलाज	4	मैं इलाज नहीं करवाऊंगा (ह़िकायत)	27
तवक्कुल करने वाले राह़त में	5	इलाज करवाने का शरई हुक्म	28
तवक्कुल किसे केहते हैं ?	7	हमारे ह़क़ में क्या बेहतर है ?	29
तवक्कुल का तफ़्सीली मत़लब	7	मुतवक्किल दो त़रह़ का होता है	30
मुझे मोह़ताजी का ख़ौफ़ कैसे हो सकता है !	8	हम क्यूं परेशान होते हैं ?	30
तवक्कुल करने वाला मोह़ताज नहीं होगा	8	मेहंगाई में भी रिज़्क़ मिलेगा (ह़िकायत)	32
पहाड़ हिलने लगा (ह़िकायत)	9	दाने दाने पे लिखा है (ह़िकायत)	32
तवक्कुल फ़र्ज़े ऐन है	9	अ़वाम और ख़वास के तवक्कुल में फ़र्क़	33
तवक्कुल का इल्म सीखना भी फ़र्ज़े ऐन है	10	तीन क़िस्म के लोग	33
तवक्कुल क्यूं ज़रूरी है ?	11	तौरात में आप ﷺ का नाम "मुतवक्किल" है	34
तवक्कुल किन चीज़ों में होता है ?	13	रसूले अकरम का तवक्कुल (ह़िकायत)	35
एक के बदले दस मिले (ह़िकायत)	15	मदनी आक़ा की दुआ़	35
त़ाक़तवर, इ़ज़्ज़त वाला और मालदार बनने का नुस्ख़ा	15	ज़मीन पर रिज़्क़ तलाश नहीं करूंगा (ह़िकायत)	36
रिज़्क़ जंगल में भी मिल जाता है (ह़िकायत)	16	ह़ल्वे के सिवा कुछ नहीं खाऊंगा (ह़िकायत)	38
तवक्कुल मोमिन का ज़ेवर है	17	मछली अपनी जगह पर थी (ह़िकायत)	39
तवक्कुल ईमान वालों की निशानी है	18	दरिन्दे ने जान बचाई (ह़िकायत)	40
तवक्कुल व अस्बाब को जम्अ़ करना अफ़्ज़ल है	19	नफ़्अ़ व नुक़्सान तक़्दीर के लिखे से होता है	40
बग़ैर काम किए रिज़्क़ का त़लबगार जाहिल है	20	बे ख़ौफ़ मुसाफ़िर	42
दूध, शहद पिलाने वाला फ़िरिश्ता (ह़िकायत)	20	तवक्कुल बदफ़ाली का तोड़ है	43
अस्बाब अपनाना तवक्कुल के ख़िलाफ़ नहीं	22	खाना कब से ख़राब होना शुरूअ़ हुवा ?	43
जानवर बांध कर तवक्कुल करो !	22	तवक्कुल को बहुत उ़म्दा पाया (ह़िकायत)	44
रोटियां कौन भेजता था ? (ह़िकायत)	23	कब माल जम्अ़ करना नुक़्सान देह नहीं ? (ह़िकायत)	45
आने वाली तक्लीफ़ को ख़त्म करना ज़रूरी है	24	रिज़्क़ ज़रूर मिलेगा	46
आस्मान सोना चांदी नहीं बरसाता	24	नाबीना परिन्दे का तवक्कुल (ह़िकायत)	47
त़ाक़त के बावुजूद न कमाना तवक्कुल नहीं	24	कव्वे का बच्चा कैसे पलता है ?	47
जानवर खुला छोड़ कर तवक्कुल करना कैसा ?	25	बड़े पेट वालों को भी रिज़्क़ मिलता है	48

उ़न्वान	सफ़्हा	उ़न्वान	सफ़्हा
अल्लाह हर हा़लत में रिज़्क़ अ़ता फ़रमाता है	49	आज ही तो सब्र करना है (हि़कायत)	74
आप खाते कहां से हैं ? (हि़कायत)	50	ह़लाल रोज़ी से मेह़रूमी (हि़कायत)	75
मेरा रिज़्क़ कहां है ?	52	जहां से गुमान भी नहीं होता	75
घर से बाहर निकाल दो (हि़कायत)	53	रिज़्क़ भी पहुंच कर रेहता है	76
औलाद को तवक्कुल किस त़रह़ सिखाया (हि़कायत)	53	रोटी खाए बग़ैर मर गया (हि़कायत)	77
अपने रब पर तवक्कुल करूंगा (हि़कायत)	54	कीड़े मकोड़ों से बचने का वज़ीफ़ा	77
वादा पूरा कर दीजिए !	55	रिज़्क़ मौत की त़रह़ ढूंडता है	78
परिन्दों की त़रह़ रिज़्क़ मिलेगा	55	रिज़्क़ खुद तलाश में था (हि़कायत)	78
दो बुज़ुर्ग और दो परिन्दे (हि़कायत)	56	गुज़र बसर की क्या सूरत होगी ? (हि़कायत)	79
रिज़्क़ अ़क़्ल से नहीं क़िस्मत से मिलता है	58	मैं तवक्कुल करने वालों के लिए काफ़ी हूं	80
तक़्वा और तवक्कुल अपनाने का फ़ाइदा	59	वज़ीफ़ए इब्राहीमी	80
तवक्कुल की बरकत से क़र्ज़ा उतर गया (हि़कायत)	59	तवक्कुल कामयाबी का नुस्ख़ा है	81
मैं ने उस का क़र्ज़ अदा कर दिया	61	परेशानी जाती रही (हि़कायत)	81
क़र्ज़ चुकाने की परेशानी ख़त्म हो गई (हि़कायत)	61	एहलो अ़याल को तवक्कुल पर मजबूर नहीं कर सकते	82
दो क़िस्म के लोग कामयाब होते हैं	62	खाना बचा कर रखना पसन्द न फ़रमाया (हि़कायत)	83
अल्लाह वालों पर चार अ़त़ाएं	62	साल भर का ख़र्च जम्अ़ फ़रमा देते	83
एक मुतवक्किल और दाना बच्ची (हि़कायत)	63	तवक्कुल की बुन्याद चार चीज़ों पर है	84
शैत़ान क़ाबू नहीं पाता	67	आज रोज़ी देने वाला कल भी देगा (हि़कायत)	84
शैत़ान से हि़फ़ाज़त का वज़ीफ़ा	67	सब्र व तवक्कुल पाने का नुस्ख़ा	86
डरावने शख़्स से नजात मिली (हि़कायत)	67	शेहज़ादी का तवक्कुल (हि़कायत)	87
शैत़ान ख़िदमत करने लगा (हि़कायत)	68	अस्बाब पर ही मुत़मइन न हो जाए	90
रिज़्क़ से मेह़रूमी का एक सबब	69	अल्लाह तआ़ला भूल से पाक है	90
जो लिखा है वोही पहुंचेगा	70	हमारे ह़क़ में क्या बेहतर है ! (हि़कायत)	91
जो मुक़द्दर में नहीं वोह किसी त़रह़ न मिलेगा	71	अपने तमाम काम अल्लाह के ह़वाले कर दो !	91
रिज़्क़ तुम्हें तलाश करेगा (हि़कायत)	71	तफ़्वीज़ की अक़्साम	92
तुम न पहुंचते तो येह तुम तक पहुंच जाती (हि़कायत)	71	तफ़्वीज़ क्यूं ज़रूरी है ?	93
अपना रिज़्क़ पाए बग़ैर नहीं मरेगा	72	रब के ह़वाले कर दिया (हि़कायत)	93
भुना हुवा हिरन (हि़कायत)	73	बेटे ने पढ़ना शुरूअ़ कर दिया (हि़कायत)	96
बे सब्री का कुछ फ़ाइदा नहीं	74	मुझे फ़िल्मी एक्टर बनने का शौक़ था	97

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

बन्दों के हुक़ूक़ दुन्या ही में मुआफ़ करवा लिए जाएं

यहां (दुन्या में हुक़ूक़ुल इबाद) मुआफ़ करा लेना सहल (Easy) है क़ियामत के दिन इस की उम्मीद मुश्किल (है) कि वहां हर शख़्स अपने अपने हाल में गिरफ़्तार नेकियों का त़लबगार (और) बुराइयों से बेज़ार होगा ! पराई नेकियां अपने हाथ आते अपनी बुराइयां उस के सर जाते किसे बुरी मालूम होती है !!!

(फ़तावा रज़विया 24/463)

Maktabatul Madina
Mohammad Ali Road, Mandvi Post Office, Mumbai 9022177997, 9320558372
Faizane Madina, Triconia Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad 9327168200
421, Urdu Market, Matia Mahal, Near: Noor Guest House, Jama Masjid, Delhi
011-23284560, 8178862570 For Home Delivery: 9978626025 *T&C Apply
feedbackmmhind@gmail.com www.dawateislamihind.net